Nagari Pracharini Granthamala Series No. 24

लाल कवि रचित

छत्रप्रकाश ।

श्यामसुन्दरदास बी० ए० और कृष्णबल्देव वर्म्मा
द्वारा सम्पादित

तथा
काशी नागरीप्रचारिणी सभा
द्वारा प्रकाशित ।

1916
THE INDIAN PRESS, ALLAHABAD

भूमिका।

—:o:—

भारतवर्ष के मध्य भाग में बुंदेलखंड प्रान्त स्थित है। इसके उत्तर ग्रोर जमुना, दक्षिण ग्रोर नर्मदा, पूर्व की ग्रोर टौंस ग्रोर पश्चिम की ग्रोर कालिसिन्ध नदी बहती है।

ऐसा कहा जाता है कि जिस समय महाराज युधिष्ठिर भारतवर्ष का राज्य कर रहे थे उस समय इस प्रान्त में शिशुपाल नाम का राजा राज्य करता था ग्रोर इस प्रान्त का नाम चेन-देश था। शिशुपाल के उत्तराधिकारियों ने बहुत दिनों तक यहां राज्य किया। अन्त में अवध के राजा करन ने इसे जीत लिया ग्रोर कालिंजर में एक महल बनवाया ग्रोर शिशुपाल के समय की बसी हुई चँदेरी नगरी को उजाड़ कर गेरुपर्वत के निकट उसे फिर से बसाया। आज कल चँदेरी नगरी ललितपुर से १८ मील पश्चिम की ग्रोर स्थित है। शिशुपाल के समय की चँदेरी नगरी आधुनिक नगरी से ७ मील के लगभग उत्तरपश्चिम की ग्रोर स्थित थी। इसे अब बूढ़ी चँदेरी कहते हैं ग्रोर टूटे फूटे मन्दिर अब तक इसकी प्राचीनता की साक्षी देते हैं। राजा करन ने अपनी बसाई हुई चँदेरी में एक बड़ा तालाब खुदवाया जिसे "परमेश्वर" नाम दिया ग्रोर गेरु पर्वत पर एक कोट बनवा कर वहाँ अपनी सेना रक्खी। इस वंश का अन्तिम राजा सोमी हुआ जो अपना राज छोड़ कर कच्छभुज की ग्रोर चला गया। इस समय उज्जैन का राजा भर्तृहरि था। पर वह भी वैरागी होकर राज पाट छोड़ जंगल में चला गया ग्रोर उसका छोटा भाई विक्रम राज्य का अधिकारी हुआ।

इसने समस्त मध्य भारत को जीत कर चेन-देश को अपना केन्द्रस्थान नियत किया।

विष्णु पुराण में लिखा है कि जमुना से नरवदा तक और चम्बल से केन तक नागवंशी क्षत्रियों का राज्य था पर इनके राजकाल की अवधि ठीक ठीक स्थिर नहीं की जा सकती।

इस वंश का अन्तिम राजा देवनाग हुआ जिसके समय में राजा गोपाल के सेनापति तोरमान कछवाहा ने इरन* पर आक्रमण किया और भुपाल से इरन तक के समस्त देश को जीत लिया। देवनाग अपना राज छोड़कर नरवर की ओर जैपाल चला गया और तोरमान का वंशज सूरसेन इस देश का राजा हुआ। इसने ग्वालियर का प्रसिद्ध कोट बनवाया।

सूरसेन ने वहुत दिनों तक राज्य किया। सन् ५९२ में कन्नौज के राजा ने ग्वालियर, चँदेरी और नरवर को छोड़ कर समस्त देश जीत लिया पर कछवाहों ने उसे वहाँ से शीघ्र ही भगा दिया। इसी समय में ठाकुर चन्द्रब्रह्म ने महोवे के निकट अनेक गांवों पर अपना अधिकार जमा लिया। इसी ठाकुर के वंशज चन्देल कहलाए।

कछवाहा वंश का अन्तिम राजा तेजकरन था। इस के समय में परिहार वंश का प्रताप वढ़ा और उन्होंने ग्वालियर को जीत लिया। इस पर तेजकरन धुन्धार में जा वसा पर उसके वंशजों ने नरवर और इदुर में रहना स्थिर किया। परिहार राजाओं का राज वहुत दिनों तक न चल सका। चन्देल राजाओं की शक्ति दिनों दिन वढ़ती गई और अन्त में ग्वालियर को छोड़ कर समस्त देश उनके अधिकार में आ गया। पर ग्वालियर भी कछवाहों के हाथ में वहुत दिनों तक न रहा। सन् १२३२ में तोमर वंशी ठाकुरों ने उसे जीत कर अपने वश में कर लिया।

---

* यह स्थान सागर जिले में वेन नदी के किनारे स्थित है।

चन्देल वंश का पहला राजा धारूपति हुआ। इसके दो लड़के जयशक्ति और विजयशक्ति हुए। इनके पीछे राहिल, हर्ष, यशोवर्मन, विनायकपाल देव, विजयपाल, कीर्तिवर्मन, पृथ्वीवर्मन, मदनवर्मन, परमार्दि देव, त्रिलोकवर्मदेव, वीरवर्मन, और भोजवर्मन क्रम से राजा हुए। भोजवर्मन के समय में वीर बुन्देला ने इस देश को अपने अधिकार में कर लिया।

वीरभद्र गहिरवार क्षत्री था और इसके पूर्वज काशी के राजा थे। छत्रप्रकाश में वीरभद्र के पूर्वजों की नामावली इस प्रकार दी है। रामचन्द्र के पुत्र कुश के वंश में हरिब्रह्म हुए जिनके पीछे वीरभद्र तक ये राजा हुए—महिपाल, भुवपाल, कमलचन्द्र, चित्रपाल, बुद्धिपाल, नन्दसिंहराज, काशिराज, गहिरदेव, विमलचन्द, नाहुचन्द, गोपचन्द, गोविंदचन्द, टिहनपाल, विन्ध्यराज, सोलिकदेव, धीभलदेव, अर्जुनदेव, वीरभद्र।

वीरभद्र के पाँच लड़के थे, राजसिंह, हंसराज, मोहन, मान, जगदास। जगदास जिसे पंचम भी कहते हैं, अपने पिता का सब से प्यारा पुत्र था। इसलिये वीरभद्र ने अपना आधा राज्य तो जगदास को दे दिया और आधा राज्य दूसरे चार लड़कों में बाँट दिया। इस पर राजसिंह, हंसराज, मोहन और मान को बड़ी ईर्षा हुई और उन्होंने अपने पिता के मरने पर सन् ११७० में जगदास उपनाम पंचम का राज्य छीन लिया और उसको आपस में बाँट लिया। पंचम दुखित हो विन्ध्याचल को चला गया और वहाँ श्रावण कृष्ण १ संवत् १२२८ से उसने घोर तपस्या प्रारंभ की। नौ दिन तक कठिन व्रत रख कर उसने दसवें दिन यह निश्चय किया कि अपना सिर काट कर विन्ध्यवासिनी देवी को चढ़ाऊँ। ऐसा कहा जाता है कि ज्योंही उसने यह करना चाहा त्योंही ये शब्द सुन पड़े कि "जा, तू राजा होगा"। इस पर पंचम ने कहा कि मुझे दर्शन दो और ऐसी कोई वस्तु दो जिससे मैं अपने भाइयों को जीत कर उनसे अपना राज्य छीन लूं। पर अब

इसका कोई उत्तर न मिला तो वह पुनः अपना सिर काटने पर उद्यत हो गया। इस पर विन्ध्यवासिनी देवी ने पंचम को दर्शन दे कहा कि "जा तेरी जय होगी, तू अपना राज्य करेगा और तेरे वंश के लोग मध्य भारत पर राज्य करेंगे।" पंचम ने जो तलवार अपने सिर काटने के लिये उठाई थी वह उसके सिर पर लग गई और उससे रक्त का एक बूँद पृथ्वी पर गिर पडा। इस पर भगवती ने कहा कि तेरे वंश के लोग बुंदेला कहलावेंगे। यह कह देवी तो अन्तर्हित हो गई और पंचम वहाँ से चला आया। पीछे से उसने सेना इकट्ठी करके अपने भाइयों को जीता और उनसे अपना राज्य छीन लिया। इसी समय से पंचम के वंशज वीर बुँदेला कहलाए और जिस देश पर उन्होंने राज्य किया वह बुंदेलखंड कहलाया। पंचम से लेकर छत्रसाल तक बुँदेलों की वंशावली इस प्रकार है—

पंचम (सन् १२१४ में मरा)
वीर बुँदेला (सन् १२३१ में कालपी, मुहोनी, और कालिंजर जीता)
करनतीर्थ (इसने काशी में कर्णघंटा तीर्थ बनवाया)
अर्जुनपाल (इसने महोनी को अपनी राजधानी बनवाया)

वीरबल—सोहनपाल और दयापाल। अर्जुनपाल की मृत्यु पर वीरबल राज्याधिकारी हुआ और सोहनपाल को कुछ थोड़े से गांव मिले पर इससे वह सन्तुष्ट न हुआ—इस पर वह अनेक राजाओं के पास गया कि जिसमें उनसे सहायता लेकर अपना राज्य बढ़ावे पर किसी ने सहायता न दी। अन्त में पँवार ठाकुरों की सहायता से उसने कुराट के राजा नाग को मार एक नया राज्य स्थापित किया। धीरे धीरे सोहनपाल आधे बुंदेलखंड का राजा होगा।

सहजेन्द्र—सोहनपाल का पुत्र—यह सन् १२९९ में गद्दी पर बैठा इसका छोटा भाई "राम" था।

नानकदेव—सन् १३२६ में गद्दी पर बैठा, इसका छोटा भाई सौलिकदेव था।

पृथ्वीराज—सन् १३६० में गद्दी पर बैठा—इसका छोटा भाई इन्द्रराज था।

छत्रप्रकाश में लिखा है कि पृथ्वीराज के पीछे रामसिंह, रामचन्द्र और मेदिनीमल्ल क्रम से राजा हुए पर अन्य इतिहासों से यह विदित होता है कि पृथ्वीराज के पीछे सन् १४०० में उसका पुत्र मदनपाल राज्य का अधिकारी हुआ।

मदनपाल—

अर्जुनदेव—सन् १४४३ में गद्दी पर बैठा—कविप्रिया में केशवदास ने इनकी बहुत प्रशंसा की है—इनके दो भाई माल और भीमसेन थे।

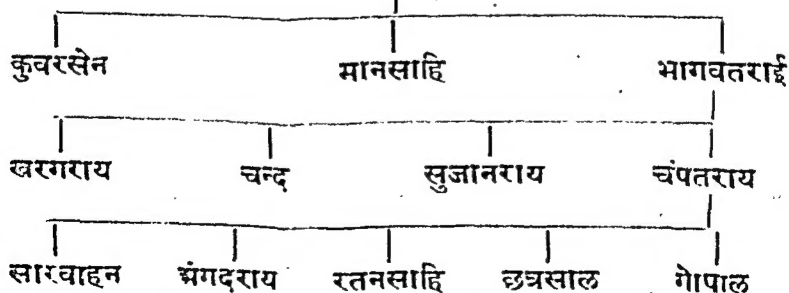
मलखान—सन् १४७५ में गद्दी पर बैठा। सन् १४८२ में बहलोल लोदी (१४५३—१४८८) से लड़ा। मलखान सन् १५०७ में मरा। इसके आठ लड़के थे जिनके नाम ये हैं—प्रतापरुद्र, शाह, जैत, जोगजीत, बरयारसिंह, भाऊसिंह, खड्गसेन, और धीरचन्द।

प्रतापरुद्र—छत्रप्रकाश में इनका नाम रुद्रप्रताप लिखा है। इसने इबराहीम लोदी का बहुत सा राज्य अपने राज्य में मिला लिया। जब बाबर ने इब्राहीम को जीत कर चन्देरी के राजा मेदनीराय को पराजित किया तो उसकी इच्छा प्रतापरुद्र से इब्राहीम के राज को छीन लेने की हुई पर यह केवल कालपी ही ले सका। बैसाख कृष्ण १३ सवत् १५८७ (सन् १५३०) को प्रतापरुद्र ने ओड़छे का नगर बसाया। इन्हें आखेट का बड़ा व्यसन था और इसी में इनकी सन् १५३१ में जान गई। इनके बारह लड़के थे जिनके नाम ये हैं—

भारतीचन्द, मधुकरसाहि, उदयाजीत, कीरतिसाहि, भूपतिसाहि, अमदास, चंदनदास, दुर्गादास, घनश्याम, प्रागदास, भैरोंदास, खांडेराय।

भारतीचंद्र—सन् १५३१ में गद्दीपर बैठे थे, इनके समय में शेरशाह (१५४२—१५४५) ने बुंदेलखंड जीतना चाहा पर वह कृतकार्य न हो सका। इस समय राज्य की वृद्धि बहुत कुछ हुई और उसकी वार्षिक आय लगभग दो करोड़ के थी। इनके कोई पुत्र न था इसलिये मधुकरसाहि राजा हुए।

मधुकरसाहि—ये सन् १५५२ में गद्दी पर बैठे। इनके समय में अकबर ने बुंदेलखंड जीतने का कई बेर उद्योग किया। कभी तो मुसलमानों की जीत होती और कभी बुँदेलों की। अन्त में १५८४ में शाहजादा मुराद स्वयं एक बड़ी सेना लेकर आया—पर मधुकरसाहि की बीरता से प्रसन्न होकर उसने उसका सारा राज्य लौटा दिया। मधुकरसाहि के पीछे उसके वंश का राज्य ओड़छे में चला। राजा प्रतापरुद्र ने अपने तीसरे लड़के उदयाजीत को महेवा दे दिया था इसलिये अब महेवे का वंश अलग चला।



मधुकरसाहि के पीछे उनके वंशजों और मुसलमानों से निरन्तर

लड़ाई होती रही, कभी एक जीतता कभी दूसरा, पर दिनों दिन बुंदेलखण्ड में मुसलमानों का अत्याचार बढ़ता चला। उदयाजीत के वंश के लोग भी इन युद्धों में सम्मिलित रहते थे। मधुकरसाहि के पुत्र बीरसिंह देव के पीछे जुझारसिंह ने अपने भाई राजकुमार हरदेव को अपनी ही रानी से विष दिलवा कर मार डाला। इस अधन्य पाप से चारों ओर हाहाकार मच गया। बाबू कृष्णबलदेव वर्म्मा इस घटना का वर्णन इस प्रकार अपने "बुंदेलखण्ड पर्य्यटन" में लिखते हैं—

"कहते हैं कि जब ओड़छाधीश, महाराज बीरसिंहदेव के पीछे, दिल्लीश्वर की राजसभा में रहने लगे, तब राज्यप्रबन्ध का भार राजकुमार हरदेवसिंह के सिर पड़ा। अपना कार्य्य सभी भली भाँति सम्हालते हैं। राजकुमार दत्तचित हो राज्यप्रबन्ध करते रहे। उनके प्रबन्ध में घूस खाने हारों का निर्वाह न था। जिन लोगों का पेट घूस ही के द्वारा भरता था, उनको हरदेवसिंह से ईर्षा उत्पन्न हो गई और राज-प्रबन्ध हरदेवसिंह से छीनने का वे लोग प्रयत्न करते रहे। राजकुमार की भक्ति अपनी भ्रातृपत्नी में माता के समान थी और वह भी अपने देवर को पुत्रवत ही मानती थी। परस्पर यही सम्बन्ध सदैव रहता था। पुत्रवत्सला माता को जैसे अपने पुत्र को बिना देखे चैन नहीं आता, वही दशा उनकी भ्रातृपत्नी की थी। विश्वासघाती प्रतीतराय ने यह देख भ्राताओं में वैमनस्य कराना चाहा और एक पत्र राजा को लिखा कि राजकुमार का राजमहिषी से अश्लील सम्बन्ध है। सत्य है "विनाशकाले विपरीतबुद्धिः"। राजा ने पत्र पढ़ राजमहिषी के सतीत्व में सन्देह कर परीक्षा करनी चाही। अतएव उन्होंने राजमहिषी से कहा कि यदि तुम्हारे सतीत्व में अन्तर नहीं पड़ा और तुम्हारा हरदेवसिंह से घृणित सम्बन्ध नहीं है तो तुम अपने हाथ से उसे विष दो। राजमहिषी ने बड़े दुःख से अपनी धर्मरक्षार्थ प्रस्ताव स्वीकार किया और भोजन प्रस्तुत किए। कहते हैं कि जब वे भोजन हरदेवसिंह को परोसने लगीं तब उनके

अश्रु संचालन हो उठा। हरदेवसिंह ने क्लान्त हो पूछा कि माता! आज पुत्र को खिलाने में तुम क्यों रोती हो? क्या मैंने कुछ तुमको दुःख दिया है। भूमि की तृप्ति तो मघा के बरसने और पुत्र की तृप्ति माता के परोसने से होती है। क्या आज तुममें कुछ मातृस्नेह न्यून होगया है जो तुम रोती हो? राजमहिषी चीख मार कर रो उठीं और जब हरदेवसिंह ने बहुत प्रबोध किया तो बोलीं कि वत्स! अब मैं माता कहे जाने के उपयुक्त नहीं हूं! महाराज को मेरे सतीत्व में सन्देह हुआ है। जगत प्रलय होते हुए भी स्त्री का पहला धर्म सतीत्व-रक्षा है; अस्तु उसीकी इस समय परीक्षा ली गई है, जिसके कारण तुझ सा देवर, जो वास्तव में मेरे पुत्र के समान ही था, आज विष भोजन कर रहा है और अपनी धर्मरक्षा के लिये आज मुझ दुर्भागिनी को यह घोर धर्महत्या करनी पड़ी। हरदेवसिंह यह सुनते ही उस भोजन को बड़े प्रेम से शीघ्र शीघ्र खाने लगे और बोले कि माता! यह भोजन मेरे लिये अमृत समान है। तेरी धर्मरक्षा से मेरी सुकीर्ति युगानुयुग होगी। राजमहिषी इन सौजन्यपूरित वाक्यों को सुन और भी कातर हो उठीं। उनके ज्येष्ठ भ्राता यह धर्मपरीक्षा और धर्मभक्ति देख कर्तव्यविमूढ़ पत्थर की प्रतिमा सम मुग्ध हो अपनी दुर्बुद्धि पर रोने लगे। हरदेवसिंह जी वहां से रसोई का विष-पूरित शेष भोजन उठवा लाए और उन्होंने अपनी दशा का अन्तिम समाचार अपने मित्रों सेवकों और कर्मचारियों से कहा। उनमें से कितने ही हरदेवसिंह जी के सद्गुणों से ऐसे अनुरक्त थे जो उनके साथ ही चलने को उद्यत हो गए और बहुतों ने वही विषपूरित भोजन पा लिया। हरदेवसिंह जी के प्यारे हाथी घोड़े को भी वही भोजन खिलाया गया। हरदेवसिंहजी अपनी बैठक के बंगले में बैठ गए। प्रेमरस पीने हारे थोड़ी देर में झूम झूम गिरने लगे। हरदेवसिंहजी अपनी सेना के अग्रगामियों का स्वर्गमार्ग में बढ़ना देखते ही देखते स्वयम् भी झूमने लगे। अन्तकाल-रूपी अश्व इनके लिये प्रस्तुत होने

लगा। जब विष की तरंगों की उमंगे आपके शरीर में उठने लगीं, तब आप वाटिका के बंगले से उठ एक पत्थर के टुकड़े पर, जो रघुनाथजी के मन्दिर के आंगन में ठीक मूर्ति के सम्मुख गड़ा है, मर्य्यादा पुरुषोत्तम की मूर्ति के सम्मुख हाथ जोड़ आ बैठे और ध्यानावस्थित आँखें किए प्रेमपूर्ण लड़खड़ाती वाणी से भैतापहारी अवधविहारी से अपने पापों की क्षमा और उनकी दया की भिक्षा माँगने लगे और थोड़ी ही देर में वहीं समाधिस्थ हो अटल निद्रा में ब्रह्मानन्द के स्वप्नों के दृश्य देखने लगे। महाराज हरदेवसिंह उसी समय से प्रख्यात हरदेवलाल के नाम से विशूचिका के दिनों में पुजने लगे। इनके चौतरे समस्त भारतवर्ष में ठौर ठौर बने हुए हैं। हरदेवसिंह जी की मृत्यु के पीछे समस्त ओड़छे में उदासी छा गई। राजा के इस जघन्य कर्म की निन्दा सजातीय और विजातीय सब लोग करने लगे और ऐसे अविवेकी महाराज के साथ को सर्वदा भयप्रद जानकर उनसे सम्बन्ध तोड़ बैठे। सम्बन्धियों ने भी महाराज से नाता तोड़ा। ओड़छे के लिये यह बड़े अभाग्य का दिन था।"

निदान इस अवसर को अच्छा जान कर शाहजहां ने मुहब्बत खां, खांजहां, और ख्वाजह अबदुल्ला के अधीन बड़ी सेना भेज कर बुंदेलखंड को जीतना चाहा। वीरसिंह देव के छोटे भाई उदयाजीत के प्रपौत्र चम्पतराय से यह न सहा गया। वे अपने सम्बन्धियों की ओर से लड़ने को उद्यत हो बैठे। यद्यपि इस युद्ध में मुसलमानों की जीत हुई पर चम्पतराय ने उनका पीछा न छोड़ा। जब जब उन्हें अवसर मिला वे कुछ न कुछ हानि मुसलमानों को पहुँचाते रहे। सन् १६३३ में तो चम्पतराय एक किले में घिर गए पर अपने बुद्धिबल और वीरता से वहां से निकल भागे और पहले की भांति चारों ओर उत्पात मचाते रहे। अन्त में एक समय मुसलमानों के साथ युद्ध करते हुए अपने देश वालों को अपने विरुद्ध पाकर उन्होंने आत्महत्या की। इनके पीछे छत्रसाल ने अपने पिता की नीति ग्रहण की और वे

बहुत दिनों तक लड़ते रहे। अन्त में इनसे और औरंगज़ेब से मेल होगया और इन्हें फिर बुंदेलखण्ड का राज्य मिला। छत्रसाल का जन्म १६३४ के लगभग हुआ था। इन्हीं की आज्ञा से लाल कवि ने छत्रप्रकाश ग्रन्थ लिखा। डाक्टर ग्रियर्सन लिखते हैं कि छत्रसाल सन् १६५८ में उस लड़ाई में मारा गया जो दाराशिकोह और औरंगजेब के बीच में हुई थी पर छत्रप्रकाश से यह विदित होता है कि चम्पतराय और छत्रसाल दोनों उस लड़ाई में औरंगजेब की ओर से लड़े थे और उसके पीछे तक जीते रहे। औरंगजेब ने कृतघ्नता करके चम्पतिराय को पुनः कष्ट देना आरम्भ किया था और अन्त में छत्रसाल और औरंगजेब से मेल होगया जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है—इसलिये छत्रसाल की मृत्यु १६५८ में नहीं हुई वरन उसके कई वर्षों पीछे हुई। डाक्टर ग्रियर्सन लिखते हैं कि लाल कवि ने विष्णुविलास नाम का एक ग्रन्थ नायका भेद का लिखा है परन्तु वह अब तक मेरे देखने में कहीं नहीं आया। गार्सिन डी टासी का अनुमान था कि छत्रप्रकाश बुंदेलखंड के इतिहास का अंश मात्र है पर पुस्तक देखने से यह नहीं जान पड़ता। यह एक स्वतंत्र ग्रन्थ है यद्यपि इसमें सन्देह है कि यह कभी लिख कर पूरा किया गया, क्योंकि जितना अंश इसका मिलता है और जो यहां प्रकाशित किया गया है उससे ग्रंथ की समाप्ति नहीं प्रमाणित होती। छत्रप्रकाश का अंग्रेज़ी अनुवाद क्यापटेन पागसन ने किया है। छत्रप्रकाश को पहले पहल मेजर प्राइस ने सन् १८२९ में कलकत्ते के फ़ोर्ट विलियम कालिज से छाप कर प्रकाशित किया था परन्तु अब वह प्रति अप्राप्त है, इसलिये काशी नागरीप्रचारिणी सभा की ओर से यह पुनः छापकर प्रकाशित किया गया है।

इसकी भूमिका विस्तार से नहीं लिखी गई है पर जितनी बातें जानने योग्य थीं सबका उल्लेख इसमें संक्षेप रूप से कर दिया गया है। जिन्हें बुंदेल खंड का विस्तृत इतिहास जानना हो वे इस विषय की अन्य पुस्कें देखें।

लाहौरी टोला
काशी ५-८-१९०२, } श्यामसुन्दरदास

अध्याय-सूची।



छत्रप्रकाश ।



पहला अध्याय

दोहा ।

एकरदन सिंधुरबदन , दुरबुधि तिमिर-दिनेश ।
लंबोदर असरन सरन , जै जै सिद्धि गनेश ॥ १ ॥

छन्द ।

सिद्धिगनेश बुद्धि बर पाऊँ । कर जुग जोरि तोहि सिर नाऊँ ॥
तूं अघ के अघओघन खंडै । अधिक अनेकन बिघन बिहंडै ॥
प्रथम कै सुर नर मुनि पूजा । और कौन गनपति सम दूजा ॥
भौमंजन सेसक गुन गावैं । मूसकबाहन मोदक पावैं ॥
उग्र कुंभ सिंदूर चढ़ायें । रवि उदयाचल छबिहिं बढ़ायें ॥
अंकुस लियें दरद कौ दारै[1] । बिकट कटक संकट के काटै ॥

दोहा ।

काटै संकट के कटक , प्रथम तिहारी गाथ ।
मोहि भरोसो है सही , दै बानी गननाथ ॥ २ ॥

छन्द ।

जै जै जै आनंदित बानी । तुही सत्य चैतन्य बखानी ॥
तुही आदि ब्रह्मा की रानी । बेद पुरानमयी तूं जानी ॥

दोहा ।

तूं विद्या तूं बुद्धि है , तुही अविद्या नाम ।
तूं बांधे सब जगत कौ , तूं छोरै[2] परिनाम ॥ ३ ॥

१—दारै = भय दिखावे, भयभीत करे । २—छोरै = खोले, स्वतंत्र करे ।

छन्द ।

तेरी कृपा लाल जौ पावै । तौ कवि रीति बुद्धि बिलसावै ॥
कविता रीति कठिन रे भाई । वाहिन समुद पहिर[१] नहिं जाई ॥
बड़ौ बंस बरनौ जौ चाहौ । कैसे सुमतिसिंधु अवगाहौ ॥
चहूं ओर चंचल चितु धावै । बिमल बुद्धि ठहरान न पावै ॥
बांधो बिषै सिंधु की डोरै । फिर फिर लोभ लहर में बोरै ॥
जो उर बिमल बुद्धि ठहराई । तौ आनंद सिंधु लहराई ॥
उठी अनंद सिंधु की लहरें । जस मुकता ऊपर ह्वै छहरें ॥
छहरि छहरि छिति मंडल छायौ । सुनि सुनि वीर हियौ हुलसायौ ॥

दोहा ।

दान दया घमसान में, जाके हिये उछाह ।
सोही वीर बखानिये, ज्यौं छत्ता[२] छितिनाह ॥ ४ ॥

छन्द ।

भूमिनाह कौ बंस बखानौं । सवही आदि भान कौ जानौं ॥
एक भान सब जग कौ तारौ । जहाँ भानु से देसि उज्यारौ ॥
सुर नर मुनि दिन अंजलि बांधे । करत प्रनाम भगति कौ कांधे ॥
एकचक्र रथ पै चढ़ि धावै । सकल गगन मंडल फिरि आवै ॥
साठि हजार असुर नित[३] मारै । धरम करम दिन प्रति बिस्तारै ॥
कमल क्यों न मुसक्याइ निहारै । लच्छि देत कर सहस पसारै ॥
करनि बरष जल जगत जिवावै । चोर कहूं संचार न पावै ॥
काल बांधि निजु गति सौं राख्यौ । एक जीभ जस जात न भाष्यो ॥

१—पहिर = वास्तव में पैर—उत्तीर्ण होना, पैरना, तरना ।

२—छत्ता = महाराज छत्रशाल का प्यार का घरेऊ नाम ।

३—कहा जाता कि जलाञ्जलि पाने से सूर्य्यदेव साठ सहस्र दैत्यों का नित्य विनाश करते हैं ।

दोहा ।

भाष्यौ जात न जासु जस, वेसै उदित दिनेस ।
ताके भयो महा वली, मनु उदंड नरेस ॥ ५ ॥

छन्द ।

मनु अनेक मानस उपजाये । याते मानव मनुस कहाये ॥
बरनौं ताको बंस कहाँ लौं । जगत विदित परलोक जहाँ लौं ॥
तिन मैं छिति छत्री छवि छाये । चारिहु जुगन होत जे आये ॥
भूमि भार भुजदडनि थंभे । पूरन करे जु काज अरंभे ॥
गाइ वेद द्विज के रखवारे । जुद्ध जीत के देत नगारे[1] ॥
परम प्रवीन प्रजन को पालैं । भीर परै न हलायें हालैं ॥
दान हेत संपति को जोरैं । जस हित परलि प्राण गहि तोरैं ॥
बाह छांह सरनागत राखै । पुन्य पथ चलिवौ अभिलाषै ॥

दोहा ।

प्रगट भयौ तिहि बंस में, रामचंद्र अवतार ।
सेतु बांधि कै जिन कियो, दसमुख कुल सघार ॥ ६ ॥

छन्द ।

रामचंद्र के पुत्र सुहाये । कुस लव भये जगत जे गाये[2] ॥
कुस कुल कलस भये छवि छाये । अवधि पुरी नृप धने गनाये ॥
तिन में दानजुध्द सिरताजा । हरिब्रह्म कुलधंसन राजा ॥
हरिब्रह्म कुलतिलक प्रवीने । महीपाल जस जाहिर कीने ॥
महीपाल उदित सुत पाये । नृप-कुल-मनि भुवपाल कहाये ॥
तिनके कमल चंद जग जाने । सूरन के सिरमौर बखाने ॥
तिनके चित्रपाल मरदाने । बुद्धिपाल जिन सुत उर आने ॥
नंद विहंगराज तिन जाये । अवधि पुरी नृप-सात बनाये ॥

१—नगारे = डंका ।   २—गाये = प्रख्यात हुए ।

दोहा ।

विहंगेस नृप के भये, कासिराज सिरताज ।
अवधिपुरी तें उमड़ि जिन, कीनो कासी राज ॥ ७ ॥

छन्द ।

कासिराज नृप मनि छवि छाये । कासी वैठ सुजस वगराये ॥
तिनके कुल जेते नृप आये । काशीश्वर ते सबै कहाये ॥
गहिरदेव नंदन तिन पाये । भुव पर प्रगट सुजस वगराये[1] ॥
तिनके वंस भये नृप जेते । गहिरवार कहियत सब तेते ॥
गहिरदेव के पुत्र वखानौं । विमलचंद जग जाहिर जानौं ॥
राजा नाहुचंद तिन जाये । जिन दौरन[2] दिगपाल हलाये ॥
गोपचंद तिनके सुत ऐसे । करन दधीच धरमधुर जैसे ॥
तिनके गोविंदचंद गरूरे । दान जूझ वलि विक्रम पूरे ॥

दोहा ।

दिह्नपाल तिन के भये, परम-धरम-धुर-धीर ।
विंध्यराज तिन उर धरे, जे गुन में गंभीर ॥ ८ ॥

छन्द ।

विंध्यराज नृप सुत उपजाये । सोनिकदेव देव से गाये ॥
ताकौ पुत्र प्रगट जग मांही । वीभलदेव धरम की छांही ॥
अर्जुनवर्म पुत्र तिन पाये । जुद्ध मध्य अर्जुन ठहराये ॥
तिनके वीरभद्र नृप जानौ । छत्र धरमधुर धरन सयानौ ॥
वीरभद्र नृप के सुत सूरे । भये पांच वल विक्रम पूरे ॥
चारि पुत्र पटरानी जाये । लहुरी[3] रानी पंचम पाये ॥
चारि पुत्र के नाम न जानौं । पंचम नृप को वंस वखानौं ॥
वीरभद्र नृप सुजस वगारे । पुहुमि पालि सुरलोक सिधारे ॥

१—वगराये = फैलाये । २—दौरन = आक्रमण ।
३—लहुरी = छोटी ।

दोहा।

बीरभद्र सुरलोक कों, गये सुजस जग माड़ि[1]।
पुहमी पंचमसिंह कों, बाल बहिक्रम छाडि ॥ ९॥

छन्द।

पंचम बाल बहिक्रम जान्यो। लोभ बहूँ बंधुन उर आन्यो॥
पंचम की पुहमी उन छीनो। बाँटि चार हीसा[2] करि लीन्हीं॥
बंधुन दिये दुःख इमि भारे। गृह तजि पंचमसिंह सिधारे॥
छाड़त गेह बड़ी दुचताई[3]। कित जैये को होइ सहाई॥
यह संसार कठिन रे भाई। सबल उमडि निर्बल कों खाई॥
छनिक राज संपति के काजें। बंधुन मारत बंधु न लाजें॥
जीवन नेकु पाय अधिकारे। धन जोबन सुख तुच्छ निहारे॥
निघटत आपु न जानत भये। माया के बंधन सब बंधे॥

दोहा।

माया के दिढ़ बंध सौं, बंध्यो सकल सँसार।
बूड़त लोभ समुद्र में, कैसे पावे पार ॥ १० ॥

छन्द।

पार लोभ सागर की नाहीं। भ्रमत सबै माया भ्रम माहीं॥
सो माया चैतन्य बखानी। आनन्दमयी ब्रह्म की रानी॥
उपजावत ब्रह्मांड अलेखै। काल ब्रह्म खेलत जिन देखै॥
जोगनींद ह्वैके तिहि भोये। दुगधउदधि नारायन सोये॥
उहि ब्रह्मा भयभीत उबारे। प्रगट माहिँ मधुकैटभ मारे॥
दलकृत महिषासुर संघारे। देवन के सब काज सँवारे॥
धूम्रनैन उद्धरनि भवानी। चंडमुंड खंडन जग जानी॥
रक्तबीज खप्पर भर प्याये। रन में सुंभ निसुंभ दहाये॥

१—माड़ि = स्थापन करने के अर्थ में आता है।
२—हीसा यह अर्बी शब्द हिस्सा का अपभ्रष्ट है = भाग।
३—दुचताई—दुचिताई होना चाहिए = चिंता, मतिभ्रम।

दोहा।

वहै योगनिद्रा भई, नंदगोप घर जाइ।
होनी कहिकै कंस सो, बसी विंध्य पर आइ ॥ ११ ॥

छन्द।

विंध्यवासिनी सुनियत नामै। देत सकल मन वांछित कामै ॥
ताकै सरन जाइ व्रत लीजै। मन बंछित फल पूरन कीजै ॥
एहि विचार पंचम उर जान्यैा। मन क्रम वचन भगतिरस सान्यैा ॥
विमल गंगजल मंजन कीन्हो। दरस विंध्यवासिनि कैा लीन्हो ॥
तीनैा ताप देह तैं छूटे। परम भक्तिरस के सुख लूटे ॥
हरपित गात रोम उठि आये। बंछित फल मन तन उन धाये ॥
छलकि[1] नीर नैननि भरि आये। दुरित दुःख तिन संग वहाये ॥
करुनारस छाई जगमाई। भक्ति हेत उर अंतर आई ॥

दोहा।

मृदु मूरति जगमाइ की, रही ध्यान ठहराइ।
एक पाइ पंचम खड़े, भूख प्यास विसराई ॥ १२ ॥

छन्द।

भूख प्यास पंचम कैा भूली। त्रिकुटी लगी समाधि अतूली ॥
सात द्यौस इहि रीति वितीते। पंचम इन्द्रिन के गुन जीते ॥
सुनो गगन मंडल धुनि[2] ऐसी। लहिहो भूमि आपनी वैसी ॥
सुनि पंचम नृप उत्तर दीनैा। भुवहित हैं। न परिश्रम कीन्हो ॥
उलटि गगन धुनि गगन समानी। कछु प्रसन्नता पंचम मानी ॥
वहुर सात वासर त्यैां बीते। लागे होन मनोरथ रीते[3] ॥
तव पंचम नृप करवर[4] काढ्यैा। निज सिर देत भगतिरस बाढ्यैा ॥
काटन कंठ लग्यै हटि ज्यैांही। उठि कर गह्यैा भवानी त्यैांही ॥

१—छलकि = उमड़ करि। २—धुनि = ध्वनि।
३—रीते = शून्य, खाली। ४—करवर = करवाल, खड्ग, कृपाण, तलवार।

दोहा।

त्यौंही करुनारस भरी, गहे भवानी हाथ।
जै जै करि बरषे सुमन, सुरनि सहित सुरनाथ॥ १३॥

छन्द।

जै जै धुनि नभ मंडल मंडी। कर करवार छुड़ावति चंडी॥
जब करधर झुक झोरि[1] छुड़ायौ। कछुक घाउ पंचम सिर आयौ॥
तातें रुधिर बुंद इक छूट्यौ। मनहुँ गगन सें तारा टूट्यौ॥
छिति पर परयौ छलिक छवि जाग्यौ। जननि हियौ करुणारस पाग्यौ॥
सीस दुलाइ बुंद वह देख्यौ। साहस अतुल भक्त कौ लेख्यौ॥
करुनारस जल थल सरसायौ। सिर ससिकला अमृत बरसायौ॥
बरस्यौ अमृत बूँद पर ज्यौंही। उपज्यौ कुँवर तहाँ ते त्यौंही॥
उमग्यौ हियौ कुमार निहारे। छुटे पयोधर ते पय धारे॥

दोहा।

छुटे पयोधर धार ते, कुँवर कियौ पय पान।
विंध्यबासिनी उमगि उर, लगी देन बरदान॥ १४॥

छन्द।

लगी, देन बरदान भवानी। फुरे[2] समर में सदा कृपानी॥
बढ़ै बंस जग माह अन्यारौ। छत्र धर्मधुर कौ रखवारौ॥
तुव कुल राज अखंडित रैहै। जो सताइहै सो मिटि जैहै॥
दरपुस्तनि[3] है नृप भारी। दान कृपान मरद[4] मनधारी॥
प्रथमहि राज आपनौ पायौ। परभुव भोगनहार कहायौ॥
यह कहि हाथ माथ पर राखे। पुहमी प्रगट बुंदेला भाखे॥
पाइन परि पंचम बर लीन्हौ। मन बंछित जननी फल दीन्हौ॥

१—झुक झोरि = झकझोरि, झटका देकर। २—फुरे = फलीभूत हो।
३—दरपुस्तनि = शाखान्तरों में, पीढ़ी पीढ़ी।
[illegible]

प्रगट्यौ बुंदेला बरदाई। भयौ समर कौ उमडि सहाई॥
अतुल जुद्ध बंधुनि सौ बीत्यौ। पंचम राज आपनौ जीत्यौ॥
पंचम यदपि पुत्र बहु पाये। पै कुलतिलक बुंदेला गाये॥

इति श्री लाल कवि विरचिते छत्रप्रकाशे
बुंदेलाजन्मवर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

दूसरा अध्याय

दोहा।

बरदाइक बुंदेल जब, भयौ प्रगट रनधीर।
गहिरवार पंचम जसौ, काशीश्वर नृप बीर॥ १॥

छन्द।

बीर विंध्य की देवी पूजी। किहि न बीर की कीरति कूजी॥
बीर जीत पूरब दिसि लीन्हो। बीर दौर पच्छिम कौ कीन्हो॥
सत्तर खान बीर सों हारे। अरु उमराउ बहत्तर मारे॥
बीर करे अपने मन भाये। सबल समुदल खेत खपाये॥
बीर समर भारी[1] करवालें। जीतीं कातीं पीरीं ढालें॥
बीर कठिन कालिंजर[2] लीन्हो। बीर कालपी[3] थानो दीन्हो॥

१—भारी = चलाई, प्रहार किया।

२—कालिंजर—बुंदेलखंड के बाँदा नामक प्रान्त के समीप यह स्थान है। कालिंजर प्राचीन काल में एक अति प्रसिद्ध तीर्थस्थान गिना जाता है, इसकी गणना नव ऊखलों में है। यहाँ का दुर्ग इतिहास में परम प्रसिद्ध रहा है और यहीं चंदेल वंश के मूलपुरुष महाराज चन्द्रब्रह्म की पूज्या माता हेमवतीजी ने काशी से आ कर निवास किया था।

३—कालपी—यह नगर बुंदेलखंड का द्वार करके प्रसिद्ध है और यमुना के तट पर बसा है। यह कहा जाता है कि वेदव्यास भगवान् कृष्णद्वैपायन की माता मत्स्योदरी यहीं रहती थीं और यहीं भगवान् वेदव्यास का जन्म हुआ था। भारतीय इतिहास में यह नगर भी कालिंजर के समान प्रसिद्ध रहा है और वर्तमान काल में भी बुंदेलखंड की प्रसिद्ध मंडियों में से है। पद्मावति काव्य के रचयिता मलिक-मुहम्मद जायसी के विद्यागुरु शेख बुढ़न यहीं के निवासी थे और उनकी समाधि अद्यापि यहाँ बनी है। कविवर कमलापति मिश्र यहीं के निवासी थे उनके वंशज मालवीय मिश्र अद्यापि यहाँ हैं। राजकवि पद्माकर जी भी समय समय पर यहाँ रहा करते थे। सम्राट् अकबर के परमप्रिय चतुर मंत्री महाराज बीरबलजी भी यहीं जन्मे थे। उनके राजप्रासादों के भग्नावशेष अब तक रंगमहल आदि नामों से यहाँ पुकारे जाते हैं परन्तु अब वे सब प्रासाद नितान्त ध्वंस होकर खँडहर रूप में हमें दृष्टिगोचर होते हैं।

सोष्यो वीर सत्रु कैं पानी। करी महौनी[1] में रजधानी ॥
ऐसो वीर बुंदेला गायो। परभुव लोहाधार कहायो ॥

दोहा।

वीर बुंदेला के भये, करन भूप बलवंत।
दान जूझ को करन सो, भुवनदलन दलवंत ॥ २ ॥

छन्द।

तिनके अर्जुनपाल बखानै। सहनपाल तिनके सुत जानै ॥
बुधि बल गढ़ कुठार[2] तिन लीनो। अमल[3] जतहरा[4] में पुनि कीनो ॥
तिन सुत सहज इन्द्र से पाये। सहजइन्द्र जग मांह कहाये ॥
तिन के भये पुत्र मन भाये। नौनिकदेव देव से गाये ॥
पृथु सम पृथीराज तिन जाये। तिनके रामसिंह छवि छाये ॥

१—महौनी—इसका शुद्ध नाम मुहौनी है। जालौन प्रान्त के कोंच परगने में यह स्थान मऊ मुहौनी के नाम से पुकारा जाता है और बुंदेल वंश की आदि राजधानी है। जनख्याति में अद्यापि यह स्थान "बड़ीगढ़ी" करके प्रसिद्ध है और अब कुटिल काल के दंड से प्रहारित हो यह प्राचीन राजधानी एक साधारण ग्राम के रूप में वर्त्तमान है।

२—गढ़कुठार—वास्तव में गढ़कुंडार है। यह स्थान ओरछे अथवा ओड़छे के समीप है। बुंदेलों के अधिकार में आने से प्रथम इसमें खंगारों का राज्य था। खंगार बुंदेलखंड में बहुतायत से रहते हैं और पतित जातियों में इनकी गणना है। यह किसी काल में बड़ी प्रबल जाति के लोग गिने जाते थे और बड़े उद्भट वीर होते थे। इनकी आदि राजधानी गढ़कुंडार में थी। वर्त्तमानकाल में ये बहुधा चौकीदारी, साईसी व किसानी का काम करते हैं और उपद्रवी भी समझे जाते हैं।

३—अमल = अधिकार।

४—जतहरा—यह स्थान टीकमगढ़ (ओड़छा) राज्यान्तरगत जी० आई० पी० रेलवे के मऊ रानीपुर स्टेशन के निकट है और ऐतिहासिक स्थान है। यहां ब्रह्मी बूटी बहुत पैदा होती है।

तिनके रामचन्द्र सुत ऐसे। जनक जजाति[1] प्रियव्रत जैसे ॥
ताको पुत्र जुद्धरस मीनो[2]। भयो मेदिनीमल्ल प्रवीनो ॥
तिनके अर्जुनदेव गरूरे। मलुखान तिन के सुत सूरे ॥

दोहा।

मलुखान कौ नंद भौ, रुद्रप्रताप अतूल।
नगर ओड़छौ जिन रच्यो, मोद सलनि कौ मूल ॥ ३ ॥

छंद।

पुत्र प्रतापरुद्र उपजाये। प्रथम भारतीचन्द कहाये ॥
दूजे मधुकरसाहि बखाने। उदयाजीत जगत जग जाने ॥
कीरतिसाहि कीर्त्ति जग छाई। लीन्है भूपतिसाहि भलाई ॥
अमनदास उदित जसु लीन्हो। चदनदास चंद्र सम कीन्हौ ॥
दुर्गादास दुवन* दल भंजे। घनस्याम सज्जन मन रंजे ॥
प्रागदास परवीन प्रतापो। भैरादास मजाही[3] थापी ॥
खांडेराय खुसाल सदाई। ये जगविदित बारहौ भाई ॥
दान जूझ बल बिक्रम पूरे। समर-धीर गंभीर गरूरे ॥

दोहा।

रुद्रप्रताप नरिंद के, बिदित बारहौ नंद।
थपे ओड़छे नगर में, बड़े भारतीचंद ॥ ४ ॥

१—जजाति = ययाति राजा।   २—मीनो—सना हुआ, भरा हुआ।
*यह शब्द या तो दुज्जन या दुश्मन का अपभ्रंश है या लेख-दोष से "यवन" का दुवन हो गया है।

३—मजाही—यह फ़ार्सी शब्द जमजाही का संक्षिप्त रूप है जो जम और जाही दो शब्दों के योग से बना है। जम ईरान का प्रबल सम्राट था जिसका नाम जमशीद प्रसिद्ध था। उसी का संक्षिप्त नाम जम है। जाही का अर्थ पद है अर्थात् जमशीद का सा पद अर्थात् प्रतिष्ठित पद या साम्राज्य।

छन्द

जेठे पुत्र ओंछड़े राखे। करे काज मन के अभिलाषे॥
थम्भे भुजन भूमि भर भारी। नृप कुठार[१] को करी तयारी॥
खेलत चले शिकार सलौनी। मेटी मिटै कौन सो होनी॥
जोजन एक शहर तें आये। नदी उतर वन सघन मझाये॥
तहां बाघ इक गाइ पछारी। सो करुना[२] करि तुरन पुकारी॥
कानन परत दीन वह बानी। पहुंच्यो नृप कर कढ़ी कृपानी॥
सिर धरि छत्र धर्म्म को बानो[३]। हांक्यो[४] बाघ उठ्यो विरझानो[५]॥
गरजत दुवो[६] परस्पर जूटे। संगहि प्रान दुहुन के छूटे॥

दोहा।

रुद्रप्रताप नरिंद तनु, तज्यो गाइ के काज।
परम उच्च आसन दियो, सुरनि सहित सुरराज॥ ५॥

छन्द।

सुरन सहित सुरराज सिहानै। पुन्य प्रतापरुद्र अधिकानै॥
करि अभिषेकु ओड़छे छाये। भूप भारतीचंद्र कहाये॥
पुन्य पाल जग जसु वगरायो[७]। इक हरि ही को सीस नवायो॥
तेइस वरस राज नृप कीनो। धरनि छांड़ि सुरपुर सुख लीनो॥
उपज्यो नहीं पुत्र मन भायो। मधुकरसाहि राज तब पायो॥
उदयाजीत आदि द्वै भाई। सबै भूप को भये सहाई॥
प्रजा पाल पुर पुन्य बढ़ायें। दान जूझ जिनके गुन गायें॥
अरतिस वरस राज नृप कीन्हों। निस दिन रह्यो भगतिरस भीनो॥

दोहा।

जाके उदयाजीत से, भाई सदा सहाइ।
जस प्रताप ता नृपति को, कहो कौन अधिकाइ॥ ६॥

१—कुठार = गढ़कुंडार। २—करुणा = आर्तनाद। ३—बानो = भेष।
४—हांक्यो = ललकारा। ५—विरझानो = क्रोधित होकर। ६—दुवो = दोनो।
७—वगरायो = फैलाया।

छन्द ।

उदयाजीत अदित नर देवा। जिन उदयाचल कियो महेवा[1] ॥

१—महेवा = यह स्थान बुंदेलखंड के छत्रपुर राज्यान्तरगत है और नौगांव छावनी से चार मील पर पूर्व की ओर मऊ महेवा के नाम से प्रसिद्ध है। इसके चारों ओर कोट बँधा है। बुंदेलवंश की पूर्वीय शाखा की यही आदि राजधानी । इसके कोट के भीतर सीताफल (शरीफा) के वृक्षों का अगम्य वन है और धुबेलाताल के उत्तर तट पर बुंदेलकुल केशरी प्रातस्मरणीय महाराज छत्रसाल के राज्यप्रासाद बने हुए हैं। चिरकालीन होने से ये राजमंदिर अति जीर्ण हो गये थे परंतु छत्रपुराधीश श्रीमान् परम सुयोग्य महाराज विश्वनाथसिंह जू देव महोदय ने उनका जीर्णोद्धार करा दिया है। इस राजप्रासाद की अटारी से प्रातःकाल के समय धुबेलाताल का दृश्य अत्यंत मनोहर होता है। शीतल समीर का संचार, पक्षियों का कलरव, निर्मल जल पर बालार्क का प्रकाश, कमलवन का विकाश चित्त पर एक ऐसा प्रभाव डालता है जो वर्णन नहीं हो सकता, केवल देखने ही पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से अनूपम राज्यप्रासादों के ध्वंस इसी कोट के भीतर पड़े हैं। धुबेलाताल के पश्चिम तट पर महाराज छत्रसाल की परमप्रिय महारानी कमलापति का समाधि मंदिर है जिसका गोल शिखर सोने से निशि दिवस चमचमाता रहता है। यह समाधिमंदिर अपने ढंग का अनूठा ही मंदिर है। इसी तड़ाग के पूर्व तट पर महाराज छत्रसाल जी का समाधि मंदिर है जिसका कुछ भाग अपूर्ण रह गया है। उसके निकट ही एक और छोटा सा स्थान है जहां पर महाराज छत्रसाल की सेज है। महेवा अब उजाड़ दशा में है। वहां वृक्षों के नीचे ठौर ठौर पर बारहवीं शताब्दी की बहुत सी जैनमूर्तियों के खंडों के ढेर हैं और कहीं कहीं बौद्ध मूर्तियों के भी खंड मिलते हैं और ऐसा जान पड़ता है कि चंदेलवंशीय महाराजों के समय में भी यह स्थान कोई प्रतिष्ठित स्थान रहा है। यहां से एक मील उत्तर—पूर्व की ओर चल कर महाराज छत्रसालजी के कनिष्ठात्मज, महाराज जगतराजजी का जिनके वंश में अजयगढ़ चरखारी आदि राज्य हैं, सुरीधे विस्तृत जगतसागर नामक तड़ाग है। यह तड़ाग वास्तव में पर्वतों की तलहटी की एक विस्तृत झील है। इसके तट पर भी बारहवीं शताब्दी की बहुत से जैनतीर्थंकरों की प्रतिमाएं जिनकी चरण चौकियों पर प्राचीन काल के लेख हैं रक्खी हैं और एक विशालगढ़ी के भग्नावशेष हैं। यहीं पर "बुंदेला बाबा की बैठक" नाम का एक विहार सा पड़ा है जो हमें किसी बौद्धविहार का अवशेष जान पड़ता है। इसी तड़ाग से वर्तमान काल में एक नहर निकाली गई है जो एक बड़े भूमि भाग को सींचती है।

जुद्ध मध्य उद्धत अरि मारे। दे दे दान दरिद्र विदारे॥
ता सुत प्रेमचन्द मरदानौ। पूरन चन्दा के सम मानौ॥
जहां समर मारू सुर बाजे। तहां अरुन आनन छवि छाजे॥
कैयक[1] अरिदल सिंधु विलोड़ै[2]। धाइ घने घट ही में ओड़ै॥
लीलतु फिरें[3] लोह की लपटैं। अगवै[4] कौन सिंह की झपटैं॥
मुगल पठान जुद्ध में जीते। भरे कालिका खप्पर रीते[5]॥
साहिसेन[6] झकझोर हलायो। साहिझार कौ विरद बुलायो॥

दोहा।

साहिझार विरदैत मनि, प्रेमचन्द के नन्द।
पुहमी में परगट भये, तीनों आनँदकन्द ॥७॥

छन्द।

प्रेमचन्द के नन्द बखानै। कुंवरसेन जग जाहिर जानै॥
जिन सिमिरहा[6] अलंकृत कीनौ। करि करि दान जूझ जसु लीन्हौ॥
दूजे मानसाहि मरदाने[7]। दौरनि दपटि दुवन[8] जिन भानै॥
दान कृपान बुद्धि बल चांडे। बैठि साहिपुर[9] जिन जस मांडे॥
और भागवनराइ रँगीले। सत्रुन साल समर सरसीले॥
कियौ महेवा जिन रजधानी। कीरति विदित जगत में जानी॥

१—कैयक = कितने ही। २—विलोड़ै = मथे। ३—लीलत फिरैं = खाते फिरते हैं। "लीलत फिरैं लोह की लपटैं" से अभिप्राय है कि वह समरभूमि देख करि उत्साहित होते हैं और शस्त्रप्रहार को सम्हालते हैं। ४ अगवै—आगे बढ़कर लेवे, अभिप्राय सम्हालने से है। ५—रीते = खाली। ६—साहिसेन झकझोर हलायो। साहिझार को विरद बुलायो।—से अभिप्राय है कि उन्होंने बादशाह की सेना को झकझोर डाला और उसे रणभूमि से विचलित कर दिया जिसके कारण उन्हें यह विशद यश प्राप्त हुआ कि वह "साहिझार" के उपनाम से पुकारे जाने लगे।

६—सिमिरहा—स्थान विशेष। ७—मरदाने = वीर। ८—दुवन—दुश्मन का रूपान्तर है। ९—साहिपुर—स्थान विशेष।

पै तीनौ भाई छवि छाजै। ब्रह्मा विष्णु रुद्र से राजै ॥
तीनौ अगिन तेज उर आनौ। तीनौ नैन रुद्र के जानौ ॥

दोहा।

कुलमंडन परसिद्ध अति, भयो भागवतराइ।
ताके पूरन पुन्य में, लगे चारि फल आइ ॥ ८ ॥

छन्द।

ताके पुन्य चारि फल लागे। सगरराइ अरु चन्द सभागे ॥
सुभट सुजानराइ सुखदाई। सब कौं चम्पतिराइ सहाई ॥
चारिउ भैया उदभट जानौ। चारिउ भुजा विष्णु की मानौ ॥
चारिउ चरन पुन्य छवि छायौ। चारिउ फलन देन जनु आयौ ॥
हिंदवान सुरगज उर आनौं। ताके चारयो दंत बखानौं ॥
चारौ थंभ थमू छिन राखौ। चारयो समुद जीति अभिलाषौ ॥
अन्तःकरन चारि हुलसाये। चारिउ चक्र सुजस बगराये ॥
हरि के आयुध चारि गनाये। ते जनु छिति रक्षन को आये ॥

दोहा।

जद्यपि आयुध विष्णु के, चारयौ छाव उद्दाम।
पै दानव दल दलन कौं, गदा चक्र सौं काम ॥ ९ ॥

छन्द।

जदपि गदा की बड़ी बड़ाई। पै कछु और चक्र की धाई[1] ॥
गदा समान सुजान बखानौ। चम्पतिराइ चक्र दर जानौ ॥
गनै कौन चम्पति की जीतैं। गनपति गनै तऊ जुग बीतैं ॥
साहिजहाँ उमड्यो घन घोरा। चम्पति झंझापौन[2] झकोरा[3] ॥
साहि कटकु झकझोर भुलायो। गिरयौ[4] बुंदेलखंड उगिलायौ[5] ॥

१—धाई = दंग, धारी, जोर, शक्ति। २—झंझापौन = बवंडर।
३—झकोरा = झोंका खाया हुआ, निगला हुआ। ४—गिरयौ = गिरा हुआ।
५—उगिलायो—आतंक दिखा कर छीन लिया, लूट लिया, ले लिया।

चम्पति करीं साह सैां पेड़ँ । पैठि न सक्यौ मुगल दल मेड़ँ[1] ॥
सूबा जिते साहि के चांडे[2] । चम्पतिराइ घेरि सब डांडे ॥
बुधि बल चम्पति भयो सहाई । आलमगीर[3] दिली[4] तब पाई ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे बुंदेलवंशवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

१—मेड़ँ = मेड़ पर, निकट । २—चांडे = बलवान ।
३—आलमगीर—औरंगज़ेब । ४—दिली = दिहली ।

तीसरा अध्याय

दोहा।

चंपतिराइ नरिन्द के, प्रगटे पांच कुमार।
मंडे कुल बरम्हंड[1] में, जिनके जस विस्तार ॥ १ ॥

छंद।

पांच पुत्र चंपति के जानौ। प्रथम सारवाहन उर आनौ ॥
अंगदराइ रतन मन मानै। छत्रसाल गोपाल बखानै ॥
तिन में छत्रसाल छवि लीनो। निज बल भूमि आयतो कीनो ॥
तौ गुन छत्रसाल के गैये। कैयक सहस जीभ जो पैये ॥
रतन अंगद अंगद गुन भारे। कीने जग में सुजस उज्यारे ॥
जाकी तेग अरस[2] में झूले। बाजतु सांग हनु सी फूलै
लीनी कैयक विकट लराई। अरि की चमू अनेक हराई ॥
दुवन जीत दच्छिन के लीने। दिल्लीपति के कारज कीने ॥

दोहा।

कीने काज दिलीस के, लीने सिद्धि अनेक।
अंगद चंपतिराइ के, धरी धर्म की टेक ॥ २ ॥

छंद।

रतनसाहि निरमल गुन पूरे। परम समर्थ समर अति सूरे ॥
आखेटक के जिते ठिकाने। जल थल अन्तरिच्छ के जाने ॥

---

१ बरम्हंड से ब्रह्मांड का अभिप्राय है।
२ अरस—फ़ारसी अर्श = आकाश।

प्रगट महेवा में रन कीनों। अरि की फौज फारि जलु लीनों॥
अंगद रन ता दिन वढ़ि जाने। गुनन वड़े छत्रसाल वखाने॥
तिन तें लघु गोपाल गनाये। सीलवंत सन्तन मन भाये॥
जवहिं समर मंह सैल[1] उछाले। हिरदौ देखि काल को हाले॥
सव भैयन की कथा वखाने। छत्रसाल तें जुदी न जानै॥
छत्रसाल की कथा सुहाई। समै समै तिन में सव आई॥

दोहा।

जदपि नदी पानिप भरी, अपने अपने ठांउ।
पै गंगा में मिलत हीं, गंगा ही को नांउ॥ ३॥

छंद।

गंगा त्रिपथगामिनी जैसी। छत्रसाल की कीरति तैसी॥
सव सुर नर नागन की वानी। गावत विमल पवित्र वखानी॥
गावत पार न पावहिं कोई। अरव खरव आनन किन होई॥
जैसे उड़ै विहंग तहां लौं। देखत गगन विसाल जहां लौं॥
गुन अनन्त मुख एक हमारे। चपल चित्त थोरी मति धारे॥
चाहत है एते पर तैसी। सतकवि मति की पदवी जैसी॥
अगम पंथ को वुधि विलसाई। हैहै जग इहि भांति हँसाई॥
ज्यों वामन ऊंचे फल चाहैं। चरननि उचकि उठावैं वांहैं॥

दोहा।

उचकै हू पहुंचै नहीं, वांहैं उच्च उठाइ।
लोग हँसी के रस भरे, देखत कौतुक आइ॥ ४॥

छंद।

जो कौतुक उर धरि जग लोई। सुनिहैं सरस कथा सव कोई॥
सरस कथा सुनि हिय हुलसावैं। सव को छत्रसाल गुन भावैं॥
सव जग में जेती मति जाके। उर उछाह तेते गुन ताके॥

---

१ सैल = सांग, लोहे की मोटी नोकदार सलाका और वीच में त्रिशूल।

अपनी मति माफिक सब गावै। गुन को पार न कोऊ पावै॥
जो पै पार गुननि को नाहीं। ज्यों सहसानन त्यों हम आहीं॥
छत्रसाल के चरित उज्यारे। मेटत कुल कलिकाल अँध्यारे॥
कुलमण्डन छत्रसाल बुँदेला। आपु गुरू सिगरो जग चेला॥
छत्रसाल चंपति के ऐसे। बरने कश्यप के रवि जैसे॥

दोहा।

कश्यप को रवि गाइये, के दशरथ को राम।
कै चंपति को चकवै, छत्रसाल छविधाम॥ ८॥

छंद।

छत्रसाल के गुनगन गाऊँ। पूर्व जन्म की कथा सुनाऊँ॥
एक समय हजरत[1] फरमायो। बाकी खान बली चढ़ि आयो॥
समर खेलु चंपति सों माच्यो। बाजत माए[2] रीझि हर नाच्यो॥
छुटि छुटि गिरे दुवो दल बांके। लोथनि[3] परे[4] गिरिन के नाके॥
चंपतिराइ कलह को कांधे। बैठे विकट बिरद को बांधे॥
जेठे पुत्र सुभट छवि छाये। नाम सारवाहन जे गाये॥
जान जुद्ध अमनैक[5] बढ़ाये। सेलहार वा समय पठाये॥
बाकी खां को कटक उमंड्यो। बँधे घाट को मारग छंड्यो॥

दोहा।

घाट छांडि औघट[6] धरयो, कुँवर सुने जिहिं ठौर।
बाकी खां के कटक की, भई तहां को दौर[7]॥ ९॥

छंद।

सेलहार पर फौजें धाईं। कैयक सहस अचानक आईं॥
कुँवर सारवाहन छवि छाये। खेलन सहज ताल में आये॥

१—चक्वै = चक्रवर्ती। २—हजरत = शाहजहां से अभिप्राय है।
२—माए = मारुबाजा, रणबाजा। ३—लोथनि = लाशों से।
४—परे = भर गये। ५—अमनैक = हठी, हठीला।
६—औघट = दुर्गम मार्ग, कुमार्ग। ७—दौर = आक्रमण।

तबहीं बरष चौदही लागी। बुद्धि बाल खेलन में पागी॥
खोलि हथ्यार तीर में राखे। जल के अतुल खेल अभिलाखे॥
एकन कों धरि एक ढकेलै। सलिल उछाल परस्पर मेलै॥
एकै भजै पहर के काछै[1]। एकै लगै लपक करि पाछै॥
निकट जानि तन बूड़ि बचावै। छल सों जल में छुवन न पावै॥
चरन चपेट चलावत चूकै। तिन को देत सबै मिलि कूकै॥

दोहा।

या विध अति आनँद भरे, कुँवर करैं जलकेल।
वाकी खाँ उचका परयो, उदभट कटक सकेल॥ ७॥

छंद।

फौज अचानक निकट हँकारी। खलभल आइ खेल में पारी॥
कुँवर कढ़े जल तें सर भीनै[2]। आइ हथ्यार तीर में लीनै॥
हांके मुगल ताल की जोरी। भजे बिडरि बालक चहुँ ओरी॥
कुँवर सारवाहन बल बाढ़े। तमकि तीर तरकस तें काढ़े॥
काढ़े तीर वीर जब ऊख्यौ। सर समूह सत्रुन पर छूट्यौ॥
बखतरपोस[3] हला[4] करि धाये। कुँवर अडोल हलै न हलाये॥
अरुन रंग आनन छवि लीनो। तानि कमान कुण्डलित कीनो॥
छूटे बान बज्र से बांके। फूटे सुभट निकट जे हांके॥

दोहा।

झिली[5] फौज प्रतिभट गिरे, खाइ घाउ पर घाउ।
कुँवर दौरि परवत चढ्यौ, बढ्यौ जुद्ध को चाउ॥ ८॥

१—काछे = काछनी, लंगोट, जांघिया।
२—भीनै = भीगे हुए।
३—बखतरपोश—कवचधारी।
४—हला = हल्ला, शोर।
५—झिली = आक्रमण किया।

छंद ।

समिटि फौज आई रन भूमैं । घाइल घने परे जहँ घूमैं ॥
मुगल पठान मान विन देखे । विक्रम अतुल कुँवर के लेखे ॥
घाकी सों देख्यो दल भाज्यो । प्रगट कुँवर चंपति कौ जान्यो ॥
बोल्यो तमकि कटकु[1] सब धावै । पकरौ कुँवर जान नहिं पावै ॥
बखतरिया[2] ढाले दै आगे । हय तजि पिले[3] बीररस पागे ॥
प्रतिभट पिले निकट जब आये । कुँवर अडोल बान बरसाये ॥
इक इक बान दुहै भट फूटै । झुकि झुकि तऊ चहूँ दिस जूटै ॥
कुँवर एक सहसन धरि धाये । ज्यों बैरिन अभिमन्यु दबाये ॥

दोहा ।

रुप्यौ कुँवर अभिमन्यु ज्यों, महारथिन के बीच ।
सार[4] झारि रिपु रुधिर की, बिरचि मचाई कीच ॥ ९ ॥

छन्द ।

माची कीच सार जब बाज्यो । कुँवर अरुन आनन छबि छाज्यो ॥
खग्ग झारि पकन कौ काढ़ै । पकन हरषि हांक दै डाटै[5] ॥
घाइ घाइ न अघाइ[6] हठीलो । उमग्यो भिरतु समर सरमीलो ॥
कौतुक लखत भान रथ रोपे । बिडर्‌यो[7] कटकु कुँवर के कोपे ॥
बिडरतु कटकु बीर जे बांके । भार हथ्यार हरषि हठि हांके ॥
कुँवर मार[8] में सनमुख पैठ्यो । सूरज भेदि बिमाननि बैठ्यो ॥

१—कटकु = कटक । २—बखतरिया = कवचधारी ।

३—पिले = घुस पड़े, टूट पड़े, धसे ।

४—सार = यह शब्द सार से बना है जिसके अर्थ तत्त्व के हैं। यहां लोहे के सार, फौलाद से जिससे शस्त्र बनते हैं अभिप्राय है और शस्त्र के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

५—डाटैं = ललकारैं । ६—अघाइ = तृप्त होवे ।

७—बिडर्‌यो = भागा । ८—मार = युद्ध ।

तेगन लगि तन तनक न बांच्यो । रन में रुद्र सीस लै नाच्यौ ॥
सुरन पुहुप बरषा बरषाई । जैमाला हूरन[1] पहिराई ॥

दोहा ।

सजी आरती सुरबधुनि, उमग्यो अमर समाजु ।
कुँवर सारवाहन लियौ, वीरलोक को राजु ॥ १० ॥

छन्द ।

वीरलोक आनँद अति छाये । समाचार चंपति पैँ आये ॥
सुन्यौ कुँवर रन सज्या सोयौ । सोक बढ़े माता अति रोयौ ॥
तब माता कौ सपनौं दीनौ । समाधान नीकी विधि कीनौ ॥
मोहि बैर म्लेच्छ सौं लीवै । ओरौ काज अपूरब कीवै ॥
तातैँ फिरि अवतारहिँ लैहौं । ह्वै फिरि प्रगट तुम्हैं सुख दैहौं ॥
और माइ की कूख नवीनी । सो मैं आइ अलंकृत कीनी ॥
यह सुनि कै माता सुख पायौ । सपनौ अपनो प्रगट सुनायौ ॥
भई प्रतीत कछुक दिन बीते । सांचे भये सुपन चित चीते[2] ॥

दोहा ।

चित चीते सांचे भये, सुपन माइ के चारु ।
प्रगट्यौ चंपतिराई के, छत्रसाल अवतारु ॥ ११ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे छत्रशाल नृपतेः
पूर्वजन्मकथावर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

१—हूर = अप्सरा । २—चीते = चेते हुए, अभीष्ट ।

चौथा अध्याय ।

छन्द ।

छभसाल अनम्यौ अब भाई । धुनि गंभीर रुदन मेँ पाई ॥
धूँघरवारि धनी लटूरी[1] । देती आनन कौ छवि पूरी ॥
मनौ भ्रमर की पाति सुहाई । अमृत पियन उडपति पै आई ॥
ऊँच्यौ भाल बिसाल बिराजै । कनक पट्ट कैसी छबि छाजै ॥
लसतु, अष्टमीचंद किधौं है । बखत[2] भूप कौ तखत मनौ है ॥
नैन, बिसाल असित सित राते । कमलदलन पर अलि जनु माते ॥
भुजा बिसाल जानु लौं आये । भुजगर मानहुँ लेत उडाये ॥
उन्नत मखनि लसत अरुनाई । वक्ष कपाटनि की छबि छाई ॥

दोहा ।

चक्कवतनि[3] के चिह्न सब, अंगन भगन राखि ।
छत्र धर्म अब धीतरयो, सामुद्रिक[4] दै 'साखि ॥ १ ॥

छन्द ।

अनम्यौ पुन उठी यह बानी । धन्य घरी सबही यह मानी ॥
दुंदुभि बजे लोक सुखदानी । आठो दिसा प्रसन्न दिखानी ॥

१—लटूरी = लटें, अलकें ।
२—बख्त = फ़ारसी शब्द य.म्न = भाग्य ।
३—चक्कवतिन = चक्रवर्तियों ।
४—सामुद्रिक = वह विद्या है जिसके द्वारा शरीर पर के बाह्य चिह्नों से किसी पुरुष का भविष्य जाना जाता है । ५—साखि = साक्षी ।

जातकर्म कीन्हें सुख मूले। अमर पितर नर उर अति फूले॥
उमग भरे नर नारी गावैं। पिता तुरग नग कोष लुटावैं॥
सतकवि वदन नची वर बानी। भिक्षुक भौंन लच्छमी रानी॥
किरति नची जगत मन भाई। विमल जौन्हसी[1] छवि छुटकाई॥
लिख्यो छठी में सत्य सचाई। दान जूझ वल बूझ बड़ाई॥
मन करतूति करम के ऊँचे। जिन सम तखततपी न पहुँचे॥

दोहा।

ईस नखत अनरूप अरु, अरथवंत परिनाम।
जनमपत्र तातें लिख्यौ, है छत्रसाल यह नाम॥ २॥

छन्द।

प्रगट पासनी[2] में छवि छाई। भुवभर सहित कृपान उठाई॥
ता दिन कविन कवित्त वनाये। दिये दान तिनकों मन भाये॥
घुटुनुन चलत घूंघुरू बाजे। सिंजित सुनत हंस हिय लाजे॥
गहि पलका की पाटी डोले। किलिकि किलिकि दसननि दुति खोले॥
विहँसत उठत भोर ही जागै। निरखत को न हिये अनुरागै॥
खेलत लेत खिलौना आछे। धावत किलिकि छांह के पाछे॥
रुचि सौं तकत तुरग जे नीके। विहँस लेत मुजरा[3] सवही के॥
दिन दिन बढ़ै बढ़ाइ अनंदा। जैसे सुकलपक्ष को चंदा॥

दोहा।

खेलन बोलन चलन में, सब कों देत अनंद।
बालापन तैं बढ़ि चली, दिन दिन बुद्धि बुलंद[4]॥ ३॥

१—जौन्ह = चन्द्रमा। २—पासनी = अन्नप्राशन।
३—मुजरा = अभिवादन। ४—बुलंद—फार्सी शब्द बलंद = उच्च, उत्कट।

छन्द।

बड़ी बुलंद बुद्धि कछु ऐसी। या जुग मांह नाहिनै जैसी॥
जबहीं बरष सातईं लागी। अद्भुत बुद्धि भगतिरस पागी॥
राजत पुर जगविदित महेवा। तहां होत रघुबर की सेवा॥
राजत रामचन्द्र रस भीने। सुन्दर धनुष बान को लीने॥
त्योंही लछमन रूप सुहाये। धनुषबान लीने छबि छाये॥
सीता सरस रूप तनु धारे। भूषन बसन सिँगार सिँगारे॥
बालमुकुंद तहां अति सोहैं। घुटुनुन चलत चित्त को मोहैं॥
माखन को लोंदा[1] कर माहीं। मुकुट सीस छबि कही न जाहीं॥

दोहा।

सिंहासन ऊपर सबै, सोहत अद्भुत रूप।
भगति धरैं दरसन करैं, पंचम चपति भूप॥ ४॥

छंद।

तहं उभयोर आरती साजै। झालर[2] झांझ संख बर बाजैं॥
बालक वृद्ध तरुन सब आवैं। नर नारी सब दरसन पावैं॥
छत्रसाल दरसन को आहीं। बाल सुभाइ धरैं मन माहीं॥
अनिमिष[3] रूप अनूप निहारैं। चेतन जानि चित्त निरधारैं॥
इनिके संग खेलियो भाई। तो यह बात भली बनिआई॥
अपनो धनुष देह जो मांगी। बरिकु खेल कीजै इन आगी॥
जौलों सब दरसन को आये। तौलों बोलन नाहिं बुलाये॥
टरि जैहैं[4] जब सबै इहां तें। तब ये भली कहैंगे बातें॥

दोहा।

इत उत ये चितवत नहीं, मंद मंद मुसकात।
लीना सों चाहत कह्यो, कछू रसीली बात॥ ५॥

१—लोंदा = गोला। २—झालर = घंटा, घरघार।
३—अनिमिष = इकटक, पलक झुकाये बिना। ४—टरि जैहैं = हट जावेंगे।

छंद ।

भो अनिमिष दिन द्वेक निहारे । तब पंडा[1] वूझे करि न्यारे ॥
ऐ ठाकुर बोलत क्यों नाही । है धौं जीव नाहिँ इन मांहीँ ॥
तब पंडन ये वचन सुनाये । ये त्रिभुवनपति हैं छवि छाये ॥
बालक बुद्धि कुंवर तुम मांही । ये ठाकुर कहुं बोलत आंही ॥
यह सुनिकैं अचिरज चित बाढ़े । भये आइ दरसन को ठाढ़े ॥
ये विचार चित मेँ ठहरानै । इनके व्योंत[2] सबै हम जानै ॥
नजर बचाइ सबनि की लैहैँ । तब ये सीता ओर चितैहैँ ॥
तातेँ अब हों पलक न लाऊं । ये चितवैँ तब हँसों हँसाऊँ ॥

दोहा ।

यह विचार छत्रसाल चित, रहैं चितै अनिमेष ।
आंखिन तेँ भरि भरि तहां, आंसू बगरि[3] अलेख ॥ ६ ॥

छंद ।

भरि भरि आंसू ढरि ढरि[4] आवैं । छत्रसाल नहिं पलक लगावैं ॥
देखत दसा सबै मिलि ऐसी । यह यों भई कुंवर को कैसी ॥
उमग्यो प्रेमसिंधु उर मांही । कौतुक सबै विलोकत आंही ॥
विहसत रामचंद्र मन मोहे । तकै[5] न सीता तन तिरछोहैं ॥
तब मन मेँ यह बात विचारी । ऐ सकुचे मन में धनुधारी ॥
अब जो बालगुविंदहिं पाऊं । जो खेलैं तो इन्हैं खिलाऊं ॥
माखन खात इन्हैं लखि लैहों । थोरो मांगि धाइ सो दैहों ॥
जो ये नचन कैसहु आवैं । लटकत मुकट अतुल छवि छावैं ॥

दोहा ।

यह छवि बालगुविन्द की, हियें रही ठहराइ ।
माया के उपजे तहां, गये प्रपंच बिलाइ ॥ ७ ॥

१—पंडा = पुजारी । २—व्योंत = ढ़ंग, काट छांट ।
३—बगरि = फैलाकर । ४—ढरिढरि = लुढ़क लुढ़क कर । ५—तकना = देखना ।

छंद।

सब प्रपंच माया के छूटे। बंधन बिदित त्रिगुन के टूटे॥
आनँदसिंधु लहरि बढ़ि आई। प्रेम उमगि कछु कही न जाई॥
ज्यौं ज्यौं उमगि प्रेम चित राच्यौ। त्यौं त्यौं बालगुबिंदा नाच्यौ॥
डोला सीस मुकट छबि छावे। लटकि लटकि आसन पर आवै॥
पगनर तार पगन पर पारे। छत्रसाल अनिमेष निहारे॥
जे सिगरे दरसन कौं आये। तिन मन में अचिरज ठहराये॥
नाचत बालगुबिंदे देषे। अनहोनो के लछन लेखे॥
पंडा अति संभ्रम उर पागे। तुरतहिं तब पैढ़ावन[1] लागे॥

दोहा।

यद्यपि बालगुबिंद जू, राखे हैं पौढ़ाइ।
नाचे तदपि घरीक लौं, संपुट पगन बजाइ॥ ८॥

छंद।

संपुट बजे सुनै सब कोई। सबकी बुद्धि अचंभै भोई॥
छत्रसाल उर प्रीति बढ़ाई। इच्छा पूरी होन न पाई॥
पंडा तुरत कहां तें आये। घरिकु गुबिंद न नाचन पाये॥
ढिग बुलाइ अपने हौं लेतो। घर तें मांगि मिठाई देतो॥
वे सुख पाइ मिठाई खाते। मेरे ढिग तें कहुं न जाते॥
पंडन आनि बिघन यह कीनों। घरियकु नाच न देखन दीनों॥
इहि बिधि अतुल मनोरथ बाढ़े। निरखत रहे घरिक[2] लौं ठाढ़े॥
प्रेम प्रतीति प्रीति उर पागे। नाचे छुटक भगत के आगे॥

दोहा।

चेतन तन नाचे हुते, ब्रजबनितन के संग।
छत्रसाल के प्रेम तें, नचे अचेतन अंग॥ ९॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे छत्रशालबालचरित्र
बालगोबिंदनृत्यबर्णनं नाम चतुर्थोध्यायः॥ ४॥

१–पौढ़ावन = सुलाने। २–घरिक = कुछ काल तक, अथवा एक घड़ी तक।

पाँचवाँ अध्याय।

छंद।

एक जीभ हौं कहा गनाऊँ। कछू कथा संक्षेप सुनाऊँ॥
एक समै दिल्लीपति कोप्यौ। पग न[1] जुझार सिंह नै रोप्यौ
अरब खरब लौं हुते खजानै। सो न जानिये कहां बिलानै॥
साठि हजार सुभट दल फूट्यौ। कोऊ कहूं न मारिउ छूट्यो॥
साहिजहान देश सब लीनो। कियो बुँदेलखंड बल हीनो॥

दोहा।

हीनो[2] देखि बुँदेल बल, दीन प्रजन के काज।
चंपतराइ सुजान मिलि, कियो मंत्र तिहिँ राज॥ १॥

छंद।

कछू कालगति जानि न जाई। सब तैँ कठिन कालगति गाई॥
रीती[3] भरे भरी ढरकावै। जो मनु करै तो फेर भरावै॥
कीजै कहा नृपति नहिं बूझै। काल ख्याल काहू नहि सूझै॥
साठि हजार सुभट लै भागे। काहू के न जगाये जागे॥

१—अर्थात् रणभूमि में पग रोपने का जुझारसिंह ने साहस न किया और शाहजहां की सेवा स्वीकार करके बुंदेलखंड और बुंदेलवंश की स्वाधीनता का नाश कर दिया।

२—हीनो = निकृष्ट, दुर्बल, दीन। ३—रीती = शून्य, खाली।

फिरैं मुलक में मुगल गहेले। सिंहन की सु थरी[1] गज खेले॥
जाकौ बैरी करै बचाई। सो काहेकौ जनम्यौ माई॥
अब उठि कै यह मंत्र बिचारो। मुलकु उजार लश्र संहारो॥
शान गनैना पौरुष हारे। सो जीते जो पहिले मारे॥

दोहा।

यहै मंत्र ठहराइ कै, उमड़े दोऊ बीर।
दीनों मुलकु उजारि कै, ऐसे अति रनधीर॥ २॥

छंद।

लाये[2] मुलक उठाये थाने। सुनि सुनि साहि बहुत मुरझाने॥
नासेरी सूबा पहिरायौ। पौड़ल गैर सहायक आयौ॥
सुनि बाइस उमराइ उमड़े। थाने छोड़ पौड़छै मंडे॥
भिरंभयौ[3] चंपतिराइ बुंदेला। फौजन पर कीन्हौ बगमेला[4]॥
जबै कमान कुंडलित कीन्ही। कठिन मार तीरनि की दीन्ही॥
तीछन तीर बज्र से छूटे। बखतरपोस पान से फूटे॥

१—यहां कवि का अभीष्ट यह है कि "बीर भूमि शिरोमणि बुंदेलखंड की वीरप्रसवनी भूमि में घृणित और अपावन मुगल आकर आनंद से विचरने लगे, हाय इस कायर जुझारसिंह की कायरता से इस वीर भूमि की यह दशा होगई कि मृगराज के विहार कानन में उसके भक्ष गज, मृगराज के न होने से, आनन्दमय विचरने लगे।

२—लायें = जला दिये।

३ भिरभौं = सम्मुख हुआ, उलझा। ४ बगमेला किया—अर्थात् भीषण रूप से आक्रमण किया। बाग देने के अर्थ छोड़ देने, ढाल देने अथवा मिला देने के हैं और बगमेल से अभिप्राय यह है कि घोड़ों की बागों को नितान्त ढीला करके घोड़ों को सरपट छोड़ कर शाही सेना पर टूट पड़ा।

फौज फारि चंपति रन जीत्यौ । अरि पर प्रलै काल सम बीत्यौ ॥
मीर गौर की फौज हराई । मुगल सँहारि करी मन भाई ॥

दोहा ।

मारयो दिल सहिबाजखां[1], दियो ओड़छो[2] बारि[3] ।
फते फतेखां सों लई, बाकी खान सँहारि ॥ २ ॥

छन्द ।

मारि लूट सब फौज हराई । सूबा दिल में दहसत खाई ॥
चहूँ ओर तें सूबा घेरो । दिसनि अलात चक्र सो फेरो ॥

---

१ सहिबाजखां, शुद्ध शब्द शाहबाज़खां है । यह शाहजहां की सेना का नायक था । इसने बाक़ीखां फतहखां बंगश आदि सेनानायकों के साथ बुंदेलखंड पर आक्रमण किया था ।

२ ओड़छा, ओड़छा अथवा ओरछा, वर्तमान टीकमगढ़ राज्य की प्राचीन राजधानी है । यह स्थान झांसी से पूर्व छः मील के अंतर पर बेतवा तट पर बसा है । इसी ओरछाधीश वीरकेशरी महाराज वीरसिंहदेव ने प्रबल सम्राट अकबर का दर्प दमन करने को उसके प्रिय मंत्री अबुलफ़ज़ल का शिरोच्छेदन आंतरी की घाटी में किया था । कविकुल गुरु केशवदास मिश्र इसी ओरछे में जन्मे थे । ओरछा यद्यपि राजधानी न रहने से छविहीन हो रहा है तथापि नौचौकिया फूलबाग, रघुनाथ जी के मंदिर, चतुर्भुजजी के मंदिर, ओरछे के दुर्गम दुर्ग, और अन्यान्य राज-प्रासादों के दृश्य से उसका ऐतिहासिक महत्व अद्यापि जीवित है ।

३—बारि दियो = जला दिया ।

जरी सिरोंज[१] भेलसा[२] भाग्यो। धार[३] उज्जैन[४] घरघरा[५] लाग्यो॥
ह्वांते धमकि[६] धमोनी[७] मारी। गोपाचल[८] में खलभल पारी॥
सकल मुलक नहिं जात गनाये। चाम्बिल[९] तें रेवा लौं लाये॥

१—सिरोंज मध्यभारत का एक नगर है।

२—भेलसा, यह नगर ग्वालियर राज्य का एक सूबा है और भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। कहा जाता है कि कविवर भवभूति यहीं जन्मे थे। मुसलमानों ने इस नगर को ध्वंस कर दिया था। बौद्धकाल में यह नगर बड़ी उन्नति पर था, यहाँ पर अब भी महाराज अशोक के समय के बहुत से स्थानों के खंडहर पड़े हैं और प्रसिद्ध साची के स्तूप भी इसी के समीप हैं। यहाँ प्राचीन-काल में एक अनुपम मंदिर भगवान भुवन-भास्कर का था और सोमनाथजी के मंदिर के समान शोभमान था। कहा जाता है कि दुराचारी शहाबुद्दीनगोरी ने उसे तोड़ा था। "भाल" सूर्य का नाम है और उसी भाल से यह भेलसा बना है। प्राचीन विदिशा की यही नगर राजधानी था, इसी के निकट प्राचीन "वैसनगर" नामक नगर के खंडहर पड़े हैं।

३—धार = वर्तमान धार अथवा धारानगरी।

४—उज्जैन, यह नगर जगत प्रसिद्ध महाराज विक्रमादित्य की राजधानी था। वर्तमान काल में महाराज ग्वालियर के मालवे नामक सूबे की राजधानी है। इसें इसके विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं क्योंकि जो लोग, महाराज विक्रमादित्य और कविकुलगौरव कालिदास के नाम से परिचित हैं वे उज्जैन से पूर्ण तया परिचित हैं और जो इनके नामों और चरित्रों से परिचित नहीं हैं हमारी समझ में वे इसके पात्र ही नहीं हैं कि उन्हें उज्जैन (प्राचीन अवंती) से परिचय कराया जाय।

५—घरघरा लगना = कँपकँपी लगना, थर्राना। ६—धमकि = धावा करके। ७—धमोनी = शुद्ध नाम धामौनी है, यह नगर सागर के निकट मध्यभारत में है। ८—गोपाचल—ग्वालियर का प्राचीन नाम है। ९—चाम्बिल = चम्बल नदी।

पजरे[1] सहर साहि के बांके। धूम धूम में दिनकर ढाके॥
सब उमराइन चौथ चुकाई। ओड़ै[2] को चंपति की घाई[3]॥
लिखी खबर वाकिन[4] ठिकाई[5]। पातसाह कौ वांच सुनाई॥

दोहा।

चंपति के परताप तैं, पानिप गयौ ससाइ।
पौसेरी भरि रहि गयौ, नौसेरी उमराइ[6]॥ ४॥

छन्द।

सुनत साहि फिरि भेजी फौजें। उमड़ी दरिया की सी मौजें[7]॥
खानजहाँ सूबा चढ़ि आयौ। त्यौंही सैदमहम्मद[8] धायौ॥
वली बहादुरखान हँकायौ। अरु अबदुल्लहखाँ पग धायौ॥
और संग उमराइ घनेरे। आये उमडि काल के पेरे॥
डंका आइ देस में कीनो। मुगल पठान जुद्ध-रस भीनो॥

१—पजरे = निकट के, समीपस्थ। २—ओड़ना = सम्हालना।

३ घाई—धावा, प्रहार। ४—वाकिन = गुप्त समाचार देनेवाले, पर्चे-नवीस। यवन बादशाहों के समय में एक प्रकार के दूत प्रत्येक सूबेदार के साथ में तथा युद्ध के समय में सेना के साथ में गुप्त रूप में रहते थे। इन्हें अखबार नवीस कहते थे। राज्य दर्बार में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा होती थी। इन्हीं लोगों को हिन्दू राजसभाओं में "वाकिन" अर्थात् वाक्य-लेखक कहते थे।

५ ठिकठाई = ठीक ठीक। ६—"पौसेरी भर रहि गयो नौसेरी उमराव" अर्थात् वह (शाही सर्दार) प्रतिष्ठित नायक जिसका नाम नौसेरी उमराव था महाराज चंपतराय के प्रताप से भयभीत होकर ऐसा सूख गया कि नौसेरी के ठौर पौसेरी भर रह गया अर्थात् अब वह अपने पूर्व रूप, बल पौरुष में इतना घट गया है कि नौ सेर के बदले पाव भर हो गया है। ७ मौजें = तरंगें, लहरें।

८—सैदमहम्मद = सैयद मुहम्मद।

छाइ छाइ रविमंडल लीन्हों। नौसेरीखां कों बल दीन्हों[१] ॥
बल कों पाइ मुगल दल गाजे। पिले बजाइ जुद्ध के बाजे ॥
बड़ी फौज लखि चंपति फूले। श्रीपति सगुन भये अनुकूले ॥

दोहा।

सगुन भये अनुकूल सब, फूले चंपतिराइ।
अति अद्भुत विक्रम रच्यो, कासों बरनो जाइ ॥ ५ ॥

छन्द।

कबहुँ प्रगटि जुद्ध में हाँके। मुगलन मारि पुहुमि तल ढाँके ॥
बानन बरषि गयन्दनि फोरे। तुरकनि तमकि तेग तर तोरे ॥
कबहुँ जुरै फौज सों आछे। लेइ लगाइ चालु दै पाछे ॥
थाके ठौर ठौर रन मड़े। हाहा[२] करे हाडु लै छंडे ॥
कबहूँ उमडि अचानक आवै। घन से उमड लोह बरषावै ॥
कबहूँ हाँकि हरौलनि[३] कूटै। कबहूँ चाँपि चंदालनि लूटै ॥
कबहुँ देस दौरि कै लावै। रसद कहूँ की कढ़न न पावै ॥
चौकी कहे कहाँ है जैहौ। जित देखौ तित चंपति ह्वैहौ ॥

दोहा।

चौंकि चौंकि चौकी उठी, दौकि दौकि उमराइ।
फाके लसकर में परे, थाके सबै उपाइ ॥ ६ ॥

छन्द।

अब उपाइ सूझनि के थाके। सुनि सुनि साहि सबनि कों ताके ॥
अब कीजै कैसो मनसूबा। हैं हैरान सीगरे सूबा ॥
तब मंत्रिन मिलि मंत्र विचार्यो। चंपति उर नहिं ये सब हार्यो ॥
जो अनेक जुद्धन कों जीते। सो फल पावै जो चित चीते ॥

१—बल दीन्हो = सहायता पहुँचाई। २—हा हा करना—विनती करना, अर्थात् सब उँगलियों के अग्रभाग को मुख के सम्मुख ले जाकर हा हा शब्द कहना महान दीनता का सूचक है। ३—हरौल—फ़ारसी हरावल = सेना का अग्रभाग।

तासौं भूल विरोध न कीजै। जौ कीजै तौ तन धन छीजै ॥
चंपति के चित की हम जानैं। औरन वैठ न पावै थानैं ॥
राज ओड़छे को सुनि लीजै। प्रवल पहारसिंह को दीजै ॥

दोहा।

पायो राज पहार नृप, चली चाह सव ठाइ।
गई भूमि भुजदंड वल, फेरी चंपतिराइ ॥ ७ ॥

छन्द।

गई भूमि चंपति फिरि फेरी। मेटी फिकिर दाहिनी डेरी ॥
नगर ओड़छे वजी वधाई। भई देस के मन की भाई ॥
मैंड[1] वुंदेलखंड की राखी। रही मैंड अपनो अभिलाषी ॥
नृपति पहारसिंह सुख पायो। चंपतिराइ मिलन को आयो ॥
तव नृप कलस पाँवड़े कीने। आदर करि आगैसर लीने ॥
भुजा पसारि मिले छवि छाये। उमगि अंगननि[2] मंगल गाये ॥
मुकताहलन अतुल भुज पूजे। चंपति के सवही जस कूजे ॥
धन चंपति फिरि भूमि वहोरी। भुजन पातसाही झकझोरी ॥

दोहा।

प्रलय पयोधि उमंड में, ज्यौं गोकुल जदुराइ।
त्यौं वूड़त वुंदेल-कुल, राख्यो चंपति राइ ॥ ८ ॥

छन्द।

राज पहारसिंह को राख्यो। उन उर दोष धर्‌यो गुन नाख्यो[3] ॥
सव जग चंपति के जस गावै। सुनि सुनि अनख[4] भूप उर आवै ॥
वढ़ी ईरषा उर में ऐसी। कथा भीम दुरजोधन कै सी ॥
उर मे छई[5] कपट कुटिलाई। करन लगे अपनी मनभाई ॥

१—मैंड़ = प्रतिष्ठा, वात। २—अंगननि = स्त्रियों ने। ३—नाख्यो = नाख्यो, मेट दिया। ४—अनख = डाह, ईर्षा। ५—छई = फैली।

नृप मन में यह मंत्र विचार्यो। इनि चंपति अरि कौ दल मार्यो॥
इनकौ मन तबही तै बाढ्यो। त्यौंहीं सुजसु जगत मुख काढ्यो॥
अब जौ लौं इनके जस फैले। तबलौं बदन हमारे मैले॥
अरु जौ कहूँ फिसाद उठावै। तौ हम पै दिल्लीस रुठावै॥

दोहा।

तातैं जौ चढ़ि मारियै, तौ अपजसु बिस्तारु।
न्यौति गुपित[1] कछु[2] दीजियै, यहै मंत्र है सारु॥ ९॥

छन्द।

सार मंत्र ऐसो ठहरायो। पाप पहारसिंह उर आयो॥
बिसर गई जो करी निकाई। उगल्यौ गरल दूध की थाईं[3]॥
एक समैं न्यौते सब भाई। आदर सौं ज्यौंनार बनाई॥
उग्र भरे सब बन्धु बुलाये। चंपतिराइ सहित सब आये॥
जथा उचित हित सौं बैठारे। परसन लगे बिसद पनवारे[4]॥
तहाँ भूप जे कुल के माने। ते छिन में काहू नहिँ जाने॥
पनवारो चंपति को आनौ। देखि सुवा सारो[5] किररानौ[6]॥
लोचन मूँदि चकोर डेराने। जानि गये जे चतुर सयाने॥

दोहा।

जाननहारे जानियो, भोजन के आरंभ।
भिंम बुंदेला कौं भयो, प्रगट भूप कौं दंभ॥ १०॥

छन्द।

भिंम दंभ भूपति को जान्यो। अपनो प्रान त्याग उर आन्यो॥
चंपति को पनवारो लीनौं। अपनो बदल चंपतिहि दीनौं॥
भोजन करि डेरन कौं आये। गुपित मंत्र काहू न जनाये॥

१—गुपित = गुप्तरूप से। २—कछु दीजियै = कोई विष दिला देना चाहिये। ३—थाईं = ठौर, बदले। ४—पनवारे = पत्तलें। ५—सारो = मैना। ६—किररानो = चिड़चिड़ाने लगा, किरकिराने लगा।

लगी भिंम कों अतुल दिनाई[1] । तुरत हि मीच समै विन आई ॥
भिंम लोक आनँद में पायो । बन्धु हेतु निज प्रान गँवायो ॥
गुपित हती नृप की कुटिलाई । प्रगट भिंम की मीच बनाई ॥
कोऊ करौ किती चतुराई । पाप रीत नहि छिपै छिपाई ॥
जो विधि रची होत है सोई । जस अपजसै लेहु किनि कोई ॥

दोहा ।

यह उपाइ निरफल भयो, नृप पहिराई[2] चोर ।
चटक चपट पट में चढ़ै, दये वीर पर वोर ॥ ११ ॥

छंद ।

नृपति पहार चोर पहिराये । चंपति के मारन कों घाये ॥
जबही रैन अँधेरी आई । चले करन तसकर मन भाई ॥
स्याम रंग कुलही[3] सिर दीन्हे । स्याम रंग कछनी कछ लीन्हे ॥
बाढ़ि धरै बगुदा[4] कटि बांधे । स्याम कमान स्याम सर सांधे ॥
होत न आहट भौ पग धारे । बिन घंटन ज्यौं गज मतवारे ॥
स्याम[5] रंग तन मांह समाने । चौकीदारन जात न जाने ॥
चोर पैठि महलनि में आये । तहां द्यौत हैं बने बनाये ॥
और भौन में दीपक दीन्हों । निज घर को चंपति घर कीन्हों[6] ॥

१—दिनाई = एक प्रकार का विष होता है, जो शेर अथवा तेंदू की मूँछ के बाल, बिच्छू के डंक, सांप के मुँह में भर दिए गए चावल, अथवा मेंढ़क से बनाया जाता है। उस विष को खिला देने से खानेहारा कभी तो अति शीघ्र परन्तु अधिकतर कुछ काल में घुल घुल कर मर जाता है। यह विष किसी औषध से अच्छा नहीं होता और कुछ दिनों में अपना घातक गुण करता है, इस कारण इसे दिनाई कहते हैं।

२—पहिराई = पहरा देनेवाले ।   ३—कुलही = टोपी ।

४—बगुदा (बगुरदा)—एक प्रकार का शस्त्र है जो पेशकब्ज की भांति बना होता है।

५—"स्यामरंग तन मांह समाने" अर्थात् काले वस्त्रों में छिपे हुए।

६—घर कीन्हों = बुझा दिया ।

दोहा ।

चोर दीप परगास में, लख्यो छाँह ते चोर ।
तानि कनपटी में हन्यौ, कढ्यो प्रान उहि घोर ॥ १२ ॥

छंद ।

गिरयो चोर चंपति को मारयौ । चोरनि लियो उठाइ निहारयौ ॥
चले चोर सब लोग जगाये । सोरसार करि दूर भगाये ॥
सदा प्रबुद्ध युद्ध है जाको । तासौं कैसे चलै कजाकी[1] ॥
यह सुनिकै चंपति की माता । दानबिधान ज्ञान गुन ज्ञाता ॥
निकट आपने पुत्र बुलाये । सुखद मंत्र के बचन सुनाये ॥
तुम कीन्हीं नृप को हित पैंडे । अब नृप परयो तुम्हारे पैंडे[2] ॥
तातें अब यह मंत्र बिचारो । दिल्लीपति मिलियो अखत्यारो ॥
मिलै दिलीस बहुत सुख पैहै । मनमान्यो मनसब[3] कर दैहै ॥

दोहा ।

ऐसे मंत्र बिचारि कै, पठयो दिल्ली उकील[4] ।
सुनत साहि उमग्यो हियो, कब देखौं यह डील[5] ॥ १३ ॥

छंद ।

सुनत साहि चंपति चित चाहे । देखन के उर लगे उमाहे ॥
पहुँच्यो चंपतिराइ बुँदेला । मानी साहि धन्य यह बेला ॥
दै मनसब कंधार पठाये । दारा की ताबीन लगाये ॥
गढ़ गंधार[6] जाइ कै घेरयौ । मुलकनि हुकुम साहि को फेरयौ ॥
जब उमराइ घेरि गढ़ लागे । चंपतिराइ युद्ध रस पागे ॥

१—कजाकी—शुद्ध कज़ाक़ी है = कपट, छल, चालाकी ।

२—पैंड़े परना = पीछे पड़ना । ३—मनसब = पद, अधिकार ।

४—उकील—इसका शुद्ध रूप वकील है = दूत ।

५—डील = महानुभाव, प्रतिष्ठित पुरुष ।

६—गंधार = शुद्ध शब्द कंदहार है ।

गढ़ के निकट मोरचा[1] रोपे। सब उमराइन के जस लोपे॥
ढकिल करी[2] सबतें अधिकाई। ओड़ी[3] गुरु गोलिन की घाई॥
डारे हलनि हलाइ गढ़ोई[4]। अरि के हिय की हिम्मत खोई॥

दोहा।

दारा गढ़ खंधार की, पाई फतै अचूक।
चंपति की हिम्मत लखे, उठी हिये में हूक॥ १४॥

छंद।

चंपति की हिम्मत उर आने। रीझ ठौर दारा अनखाने[5]॥
फतै पाई दिल्ली फिरि आये। मुजरा करि के साहि मिलाये॥
सिंह पहार अनपु उर आने। ठान प्रपंचनि के उर ठाने॥
चारि करै आप चहुं फेरा। खोज[6] डारि चंपति के डेरा॥
खोज पाइ जग इन्हैं लगावै। निरनै[7] देत अनुप उर आवै॥
इहि विधि डोर भेद के डारै। चतुरन हूँ नहि परत निहारै॥
कपट प्रपंच जु ह्वै करि आवै। झूठ ठौरि ते सांच बतावै॥
लिखे चितेरयो[8] ज्यों जल वीची। सम कागद में ऊँची नीची॥

दोहा।

दुहू ओर अन्तर परयो, क्रम ही क्रम यह रीति।
हिये अनपु[9] उनके बढ्यो, इनके थरी प्रतीति॥ १५॥

१—मोरचा रोपना = सैन्य [illegible] को आक्रमण कराने के लिये टिकाना।
२—ढकलि करी = प्रचंड रूप से धावा किया। ३—ओड़ी = सहन की।
४—गढ़ोई = गढ़ के लोग। ५—अनखानै = क्रोधित हुए।
६—खोज = चिह्न। ७—निरनै = समाधान।
८—चितेरयो = चित्रकार। ९—अनपु = झुंझलाहट।

छंद।

दु[illegible] मोरें अन्तर अब जान्यौ। पिसुन[1] प्रवेस तबै उर आन्यौ॥
भूप कह्यो दारा सौं ऐसे। सुनौ भाग चंपति कौ जैसे॥
तीन लाख की कौंच[2] सुहाई। दई साहि इनको मन भाई॥
हाल जमा नौ लाख गनाई। बिना तफावत अबलौं खाई॥
तातैं कौंच हमैं जौ दीजै। तौ नौ लाख रुपैया लीजै॥
यह सुनि कै दारा सुख पायो। पहिलौ अनपु हिये चढ़ि आयो॥
जहां न गुन की बूझ बड़ाई। चुगली सुनै चित्त दै साईं॥
रीझ ठौर प्रभु खीझ जनावै। तहां कौन गुन गुनी बतावै॥

दोहा।

रीझ फूलि खहन करै, डारि खीझ कै झौर।
ऐसो स्वामी सेइये, ताते दुःख न और॥ १६॥

छंद।

दारासाहि लोभ उर आन्यो। सेवा को सिगरो फल मान्यो॥
चंपति को यह बात सुनाई। तू जागीर तीगुनी पाई॥

१—पिसुन = छली चुगुलखोर।

२—कौंच = जालौन प्रान्तान्तर्गत दक्षिण भाग में एक नगर विशेष है और कौंच नामक तहसील का प्रधान नगर है। चँदेल वंश के इतिहास में प्रख्यात सिरसागढ़ नामक स्थान इसी तहसील के अंतर्गत पहूज नदी के तट पर है। जब महाराज पृथ्वीराज सिरसा गढ़ पर सेना संधान कर आए थे तब इसी कौंच नामक स्थान में उनकी सेना का डेरा पड़ा था। चौंड़ाताल तथा कुछ वीर बैठकें इत्यादि अब भी उस समय की स्मारक यहां देख पड़ती हैं। इसी के निकट पठा नामक पहाड़ी है। उसके निकट भी कुछ प्राचीन चिह्न पड़े हैं। इसी के "अकोढ़ी" नामक एक ग्राम के निकट रणस्तंभ रोपा गया था जहां पृथ्वीराज और चंदेलों का अंतिम युद्ध हुआ था। मुगल साम्राज्य में भी कौंच एक प्रसिद्ध सूबा था और यहीं पर तहसील के निकट मीरखाँ पिंडारी और अंग्रेजी सेना का एक विकट युद्ध हुआ था। यह नगर आज कल भी व्यापार की एक प्रसिद्ध मंडी है।

कौंच पहारसिंह मनभाई। देता हौं मेरे मन आई ॥
तीन हुकुम दारा जो बोले। चंपतिराइ बचन त्यों खोले ॥
कौंच जाइ चंडालनि दीजै। वृथा हमारो छोर न छीजै ॥
यह सुनि कै दारा अनखान्यो। अरुन रंग आनन में आन्यो ॥
चंपतिराइ समर उर टान्यो। दिग्गज से दोऊ ऐड़ान्यो[1] ॥
दिगपालन को दहसत बाढ़ी। मजलिस रही चित्र ल्यों काढ़ी ॥

दोहा।

दिगपालन दहसत बढ़ी, कठिन देखि वह काल।
तुरत आनि आड़ा[2] भयो, हाड़ा श्री छत्रशाल ॥ १७ ॥

छंद।

हाड़ा चंपति के ढिग आयो। दारा को न भयो मन भायो ॥
दारा अन्दर को पग धारे। चंपति के इत बजे नगारे ॥
डंका प्रगट विसर[3] के बाजे। चंपतिराइ देश में गाजे ॥
छोड़ि पातसाहन की सेवा। कियो अलंकृत आइ महेवा ॥
पुत्र कलत्र मित्र सब भेटे। दिल के दुःख सबन के मेटे ॥
चहूँ चक्र फौजैं फरमाई। अरि की बदन जोति मैलाई ॥
धनिकनि गढ़ि धरि रहे लुकाई। सूबन सौं हठि चौथ चुकाई ॥
दै हयवृन्द कविन्दन गाजे। निरमल सुजस जगत छवि छाजे ॥

दोहा।

फैले चंपतिराइ के, जग में सुजस बिलंद।
उदै भये तिहुँ लोक जनु, कैयक कोटिन चन्द ॥ १८ ॥

छंद।

तिहूँ लोक चंपति जसु जाग्यो। सुनि सुनि को न हिये अनुराग्यो ॥
नृपति पहार करी जे घातें। ते प्रगटी कहिबे की बातें ॥
जग में करो जे न कृतु मानै। नीकी करी लटी[4] उर आनै ॥

१—ऐड़ान्यो = ऐंठे। २—आड़ा होना = बीच बचाव करना।
३—विसर = कूच। ४—लटी = खोटी, बुरी।

तिनके थल जु बनै बनाये। नृपति पहारसिंह तै पाये ॥
सदा न जग मे जीवै कोई। जस अपजस कहिवे कौ होई ॥
जग जबतै अपजस जस छावै। क्रम तै अध ऊरधि गति पावै ॥
खोदे कुआ पघारे खाले। महल उठावै ऊंचे चाले ॥
इहि विधि कर्मन की गति गाई। वेद पुरानन सुनी सुनाई ॥

दोहा।

जैसी मति उपजै हिये, तैसो मनु ठहराइ।
होनहार जैसा कछू, तसा मिलै सहाइ ॥ १९ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे वीरवरपहारसिंह प्रपंचवर्णन नाम पञ्चमोऽध्याय ॥ ५ ॥

छठां अध्याय।

छन्द।

एक और अब सुनौ कहानी। होनहार गति जात न जानी॥
साहिजहां दिल्लीपति गायौ। जाकौ हुकुम चहूँ दिस छायौ॥
चारि पुत्र ताके मरदानै[1]। दारासाह आदि मनमानै[2]॥
और मुरादसाह अरु सूजा[3]। औरँगसाह समान न दूजा॥
बीतिन बरष साह रस भीनै। भोग पातसाही के कीनै॥
जदै अवस्था उतरन लागी। पुत्र प्रीति मन मैं अनुरागी॥
साहिजहां यह चित्त बिचारी। दारा कौं दीन्ही सिरदारी॥
दारा अपनौ हुकुम चलायौ। सब भाइन कौं हियौ हलायौ॥

दोहा।

हुकुमनु कै हिल्लोल कौं, भई और की और।
उमडि साहजादिन किये, तखत लेन के डौर[4]॥ २॥

छन्द।

भौत बिलख बुद्धिन के डारे। तखत लेन के चित्त बिचारे॥
साह मुराद हियौ हुलसायौ। गज सिक्का चलिबौ फरमायौ॥
औरँगसाह चाहि सुनि लीनी। बिलसाई बर बुद्धि प्रबीनी॥
इच्छा प्रगट तखत की छांडी। प्रीति मुरादसाह सौं मांडी॥
चित दै हित के लिखे लिखाये। अति प्रबीन उमगाइ पठाये॥
कह्यौ मुरादसाह सौं पैलौ। सरस बिचार मंत्र है ऐलौ॥
बिन ही दिल्ली तखत लै बैसै[5]। आन[6] चलै गज सिक्का कैसे॥
पैज[7] तखत पर बैठे जोई। दिल्ली पातसाह सो होई॥

१—मरदानै = वीर। २—मनमानै = दिल का। ३—सूजा = शुद्ध शब्द शुजाअ है। ४—डौर = डौल, ढंग। ५—बैसै = बैठे। ६—आन = और कोई। ७—पैज = हुज्जत, सरोरी।

दोहा ।

हमैं न इच्छा तखत की , यह आनौ सब कोइ ।
चलो तुम्है लै देहिंगे , होनी होइ सु होइ ॥ २ ॥

छन्द ।

औरँगसाह मंत्र तब कीनौ । साह मुराद हियै धरि लीनौ ॥
छिद्र ठहराय यहै ठहरायौ । दाढ़ी झोंति कुरान उठायो ॥
दक्षिन तैं उमड़े दोउ भाई । ठिले दोह दल पहुमि हलाई ॥
पूरब मैं सूजा दल साजे । प्रगट जुद्ध के धौंसा बाजे ॥
दारा घाट धौरपुर[1] बांध्यो । रोपि[2] घराने[3] कलहैं कांध्यो ॥
सूबन के दिल दहसत ऐसी । अवधौं दई करत है कैसी ॥
हलचल मची चहूँ दिस ऐसी । खलभल प्रलै काल की जैसी ॥
प्रगटी चाह सोंदरा[4] हरक्यो । चंपति कौ दच्छिन भुज फरक्यो ॥

दोहा ।

फरक्यौ चंपतिराइ कौ , दच्छिन भुज अनुकूल ।
बड़ी फौज उमड़ी सुनी , भई जुद्ध की फूल[5] ॥ ३ ॥

छन्द ।

बड़ी फूल चंपति सुख पायौ । औरँग उमड़ि अवंती आयौ ॥
सिंह मुकुंद हतो तंह हाड़ा । दल कौ भयो पेंड़ घर गाड़ा ॥
उमग्यो औरँग कौ दल गाढ़ो । हाड़ा भयो समर मैं ठाढ़ो ॥
बिकट मार समसेरन मांचो । बाजत नाद कालिका नाचो ॥
हाड़ा हरषि बिमानन बैठ्यौ । तब औरंग अवंती पैठ्यौ ॥
औरँगसाह तखत कौं उमड्यो । दारा जहाँ मेघ सौ घुमड्यो ॥
सुनो खबर दारा अति कोप्यौ । चांमिल घाट घरानो रोप्यौ ॥
फिकिर बढ़ी सब के दिल ऐसी । अबधौं दई होति है कैसी ॥

१—धौरपुर = धौलपुर । २—रोपि = स्थापित करके, सम्मुख जमाकर ।
३—घराने = तोपखाने, तोपें । ४—सोंदरा = सिंधदा, बारूद भरने की कुप्पी । ५—फूल = उत्साह, उमंग ।

दोहा ।

कैसी धौं अब होति है, कीजै कौन विचार ।
उड़ँ अरावे मैं सबै, भयो सुभट संहार ॥ ४ ॥

छन्द ।

तव औरंग सवनि तन ताके । बल वैासाउ[1] सबन के थाके ॥
चकृत चित्त चारहुँ दिस दौरे । कछु न वुद्धि काहू की औरे[2] ॥
तव औरंग मतो यह कीनो । विमल चित्त में चंपति दीनो ॥
हित सों लिखि फरमान पठायो । चंपतिराइ सुनत सुख पायो ॥
उमग भरे दल साजि उमंडे । नरवर[3] ढिग नैारँग जहँ मंडे ॥
तँह अलगारन[4] धाइ पहूँचे । देखे दल के झंडा ऊँचे ॥
चहूँ दिसि सोर कटक मैं छायो । चंपतिराइ बुंदेला आयो ॥
सुनि औरँग उर उमंग बढ़ाई । मनो फते दिल्ली की पाई ॥

दोहा ।

आनन औरँगसाह को, चढ़्यौ चैागुनो चाव ।
ल्यावो चंपतिराइ कैां, हमसैां मिलैं सिताव[5] ॥ ५ ॥

छन्द ।

धावन एक सहस जन धाये । चंपति कैां हित वचन सुनाये ॥
नैारँगसाह तुम्हे चित चाहै । सबै तुम्हारे भाग सराहै ॥
तातैं अब वड़ विलम[6] न कीजे । चलि दिलीस कैां दरसन दीजे ॥
तैालगि नैारँगसाह पठायो । तुरत वहादुरखाँ चलि आयो ॥
कह्यौ आइ चंपति सैां भाई । तुम इतनी क्यैां विलम लगाई ॥
अब यह समै विलम को नाही । भई तिहारे चित की चाही ॥

१—वैासाउ = व्यवसाय, पैारुष । २—वुद्धि औरना = समझ में आना ।
३—नरवर—गवालियर राज्यान्तर्गत नगर विशेष—राजा नल की प्राचीन राजधानी ।
४—अलगारन = कूच पर कूच करते हुए, शीघ्रता से, ।
५—सिताव—फार्सी शुद्ध शिताब = शीघ्रता से । ६—विलम = विलंब, अवेर, देरी ।

अब यह हाजिर है असवारी। चढ़ो पालकी करौं तयारी॥
चढ़ि पालकी पयानो कीन्हौ। दरस प्रसन्न साह कौ लीन्हौ॥

दोहा।

मुजरा करि ऊभौ[1] भयौ, पंचम चंपतिराइ।
लखि आँखिन औरंग की, आनन्द झलक्यौ आइ॥ ६॥

छन्द।

औरँग अति आदर सौं बोले। मिलतहिँ बचन मंत्र के पोले॥
दारा उमड़ि जुद्ध कौं आयौ। कटक अडोल धौरपुर छायौ॥
बिकट अरायौ सनमुख दीनौ। चामिल घाट बाँधि उन लीनौ॥
छुटे समुद्र सुरी चहुँघा के। उड़े मेघ मंदर से बाँके॥
जौ समसेरन होइ लराई। बोड़ै सुभट सुभट की घाई॥
उमगे सूर साह के बाजै। ठेलैं कौन प्रलै की गाजै॥
चामिल पार कौन बिधि हूजै। असे मन की इच्छा पूजै॥
साह भयौ समयौ यह ऐसौ। चंपतिराइ कीजियै कैसौ॥

दोहा।

कैसौ अब कीजै कहौ, पंचम चंपतिराइ।
अब आदर औरंग कौ, चम्पौ चौगुनौ चाइ॥ ७॥

छन्द।

बोल्यौ चम्पतिराइ बुँदेला। और घाट है कीजै हेला[1]॥
जौ दारा उत आड़ो आवै। तौ रन हमसौं जिते न पावै॥
सुनि औरँग अचरज उर आन्यौ। और घाट चम्पति तुम जान्यौ॥
चम्पति कही घाट हम जानै। तखन काज तुम करो पयानै॥
सुनि औरंग तखन रस भीने। चौदह लाख खरच कौ दीने॥
कीनौ कूच राति उठि जागे। चम्पति भयौ सबन के आगे॥

1—ऊभौ भयो = प्रदीप्तमान हुआ।

1—हेला = उतारा, फौज को धसा कर पार नदी को पार करना।

उमड़ि चले दारा के सोहैं[1]। चढ़ी उदंड जुद्धरस भौहैं ॥
चामिल उतरि सुभट गन गाजे। पार जाइ संधाने[2] बाजे ॥

दोहा।

चम्पति मुख औरंग के, भली चढ़ाई ओप।
नातर उड़ि जाते सबै, छुटे तोप पर तोप ॥८॥

छन्द।

चामिल पार भईं सब फौजें। तब नौरंग मन मानी मौजें ॥
दारासाह खबर यह पाई। चामिल पार फौज सब आई ॥
आगे चम्पतिराइ बुंदेला। ह्वै हरौल[3] कीन्हो बगमेला ॥
चामिल पार भये सब आछे। तजे अडोल[4] अरावे पाछे ॥
दारा के दिल दहसत बाढ़ी। चूमन लगे सबनि की डाढ़ी ॥
को भुजदंड समर में ठोंकै। उमड्यो प्रलै सिंधु को रोकै ॥
छत्रसाल हाड़ा तंह आयौ। अरुन रंग आनन छवि छायौ ॥
भयौ हरौल बजाइ नगारौ। सार धार कौ पैरन हारौ ॥

दोहा।

ह्वै हरौल हाड़ा चल्यौ, पैरनि साहसमुद्र।
दारा अरु औरँग मड़े, मनौ त्रिपुर अरु रुद्र ॥ ९ ॥

छन्द।

दारा अरु औरंग उमंडे। मनौ प्रलैघन घोर घमंडे ॥
बजे जुद्ध में निविड़ नगारे। दुहु दिसि बजे अरावे भारे ॥
गुरु गंभीर घोर धुनि छाई। फटि ब्रह्मांड परै जनि भाई ॥
त्यौं बोले उमराउनि हल्ला। जम के भये कटीले कल्ला ॥
हय गय रथ पैदल रन जूटे। घाइन सहित कवच धर फूटे ॥

१—सोहैं = सम्मुख, मुकाबिले में।
२—संधाने बाजे = बाजे सम्हाले और बजाने आरंभ किए।
३—हरौल—शुद्ध हरावल = सेना का अग्र भाग, सेनाग्रणी नायक।
४—अडोल = जो हल चल न सकें, अचल।

चंपति की अब बढ़ी बड़ूरी । मसहारिन[1] की मेटी भूखें ॥
दारासाह अवत जिन छाड्यो । अवत[2] पातसाही कौ माड्यो ॥
हाड़ा सार[3] धार में पैठ्यो । सूरज भेद बिमाननि बैठ्यो ॥

दोहा।

सूरन कौं सुरपुर मिल्यो , चंद्रचूड़ कौ हार ।
तखत मिल्यो औरंग कौं , चंपति कौं जस चार ॥ १० ॥

छंद।

चंपतिराइ सुजस जग गायौ । है हरौल दारा बिचलायौ ॥
हरबल है दारा कौ बांकौ । बेटा बली बहादुरखां कौ ॥
जुद्ध बुंदेलनि सौं अब साज्यौ । हय हथयार छाड़ि भगि भाज्यौ ॥
गाई फतै भयौ मनभायौ । औरँग उमड़ि आगरे आयौ ॥
दारा पकरि पठाननि लीन्हौ । साह मुराद कैद में कीन्हौ ॥
धरनी लोक दुहुनि तैं छूट्यो । औरँगसाह तखत सुख लूट्यो ॥
बैठ तखत बजे सधाने । चंपतिराइ साह मनमाने ॥
औरँगसाह कृपा करि भारी । मनसब[4] दीन्हौ दुसहहजारी[5] ॥

१—मसहारिन = मांसाहारी जन्तु, यथा गृद्ध शृगाल आदि ।

२—अवत = आज्ञा, नियम ।   ३—सार = लोह ।

४—मनसब = पद । ५—दुसहहजारी—दोसहहजारी—यह बादशाही समय में एक पद था जिसका पानेवाला बारह हजार घुड़सवार सेना का नायक होता था । सेना पचहजारी दसहजारी दस हजारी आदि नामों से अपने अपने पद के अनुकूल लिखे जाते थे और इन्हीं पदों के उपयुक्त उनकी जागीरें होती थीं ।

दोहा ।

पेरछ[१] अरु सहिजादपुर , कौंच कनार[२] समूल ।
मिली बड़ी जागीर सब , धरि[३] जमुना कौ कूल ॥ ११ ॥

छंद ।

मिली बड़ी जागीर सुहाई । जरैं[४] समीप[५] भतीजे भाई ॥
मुसकी तुरग लूट जो आनौ । खोज बहादुरखां सो जानौ ॥
कहि पठई चंपति कौं भाई । घर की लूट तिहारे आई ॥
दल में लुट्यो भतीजौ तेरौ । सो सब साज प्रीति में फेरौ ॥
वह करवाल ढाल अरु घोरा । दीजौ राखि आपनौ तोरा ॥
चंपति कौं यह बात सुनाई । बैठे पेंड़ प्रीति सों पाई ॥
तब चंपति ऊपर यह दीनौ । करि घमसान तुरग हम लीनौ ॥
ताकी अब चरचा न चलावौ । घर ही यह मन कौ समुझावौ ॥

दोहा ।

सुनत बहादुरखां बली , उत्तर दियौ न और ।
अनखु हिये में धरि रह्यो , डारि बुद्धि के डोर ॥ १२ ॥

१—पेरछ—यह नगर बेलातट झांसी ज़िले के अंतर्गत है । यह बड़ा पुराना ऐतिहासिक नगर है । कहा जाता है कि नृसिंह अवतार यहीं हुआ है और हिरण्यकश्यप की यहीं राजधानी थी । ईंटें यहां बहुत बड़ी बड़ी प्राचीन काल की भूमि के भीतर भरी पड़ी हैं । यहां ईंटे नहीं बनतीं, उन्हीं से सब काम चलता है । प्रसिद्ध किंवदंती है । "एरछ ईंट न होय" । यहां एक टूटा हुआ दुर्ग अद्यापि पड़ा है । मुग़ल साम्राज्य में यह एक प्रसिद्ध सूबा था ।

२—कनार—सूबे कनार यमुना तट का प्रान्त इटावे से लेकर बांदे तक कहाता था और इस सूबे की राजधानी कालपी थी । इस विषय का पता मुग़ल बादशाहों के फ़र्मानों से जो लगता है ।

३—धरि = पकड़े हुए, गहे हुए । ४—जरना = ईर्षा करना ।

५—समीप = समीपी, संबंधी ।

छंद ।

तौ लगि सोर कटकु में छायौ । पूरब तैं सूबा[1] चढ़ि धायौ ॥
गंगा उतरि प्रयाग पछेल्यौ । औरँगसाह सुनत दल पेल्यौ ॥
हुकुम बहादुरखां कौ कीन्हौ । उनि सुख मानि सीस धरि लीन्हौ ॥
उमड़ि फौज पूरब कौ धाई । हयखुर गरद गगन में छाई
और हुकुम चंपति पै आयौ । बैठे कहा साह फरमायौ ॥
गैरहाजिरी लिखि है कोई । मन सब घटै तगीरी[2] होई ॥
आलमगीर आप फरमायौ । हुकुम न मानै सो दुख पायौ ॥
उहित बचन उकील[3] सुनायो । चंपति हिये अनख बढ़ि आयौ ॥

दोहा । 325

अनखु बढ्यौ मनसब तज्यौ , सेरा कछु न सोहाइ ।
उदा है चंपति चल्यौ , आग आगरैं लाइ ॥ १३ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे औरंगजेब प्रपंच चंपतिराइ विक्रम मुकुंदहाडा-बध-दारासाह पराजय छत्रसालहाड़ा बध-वर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

१—सूबा—से अभिप्राय शुजा से है । यह बंगाल और आसाम का सूबेदार था। इससे औरंगजेब से खजुहे के समीप जो फतहपुर के जिले में है लड़ाई हुई थी ।

२—तगीरी शुद्ध अर्बी शब्द तग़यीरी تغیری है जिसका अर्थ तबदीली का है ।

३—उकील—शुद्ध रूप वकील—यहाँ अर्थ है शाहीदूत, शाही समाचार लाने हारा ।

सातवाँ अध्याय ।

छन्द ।

चंपतिराइ देस में आये । चंड प्रताप चहूँ दिस छाये ॥
फौज पेलि भाँड़ेर[1] उजारी । भुमियावट[2] उर में अखत्यारी ॥
ऐरछ आइ कोट में बैठे । सूवन के उर में डर पैठे ॥
पहुंची खबर साह कों ऐसी । चंपतिराइ करी उत जैसी ॥
सो औरंग चित्त धर लीनो । पहिल फिकिर सूजा की कीनो ॥
नौरंगसाह साज दल धायो । जूझ जीत सूजा बिचलायो[3] ॥
दावादार रह्यो नहि कोई । बैठ्यो तखत साहिबी ओई ॥

दोहा ।

गज सिक्का औरँग को, चल्यौ हुकुम लै संग ॥
देसनि देसनि कों चले, सूबा तेज अभंग ॥ १ ॥

छन्द ।

सूवा ह्वै सुभकरन सिधायो । हित सों पातसाह पहिरायो ॥
सँग बाइस उमराउ पठाये । लै मुहीम चंपति पै आये ॥
जोरि फौज सुभकरन बुँदेला । ऐरछ पर कीन्हो धगमेला ॥
बाजत सुने जूझ के डंका । उमड़ि चल्यो चंपति रनवंका ॥
माची मार दुहूँ दिस भारी । रचनहार कों मुसकिल पारी ॥

१—भांडेर = दतिया राज्यान्तर्गत नगर विशेष है । यहीं चितौड़ाधीश बापा रावल का पोषण हुआ था ।

२—भुमियावट = घरेऊ रीत पर अपने भूमिस्वत्व पर अधिकार करना ।

३—बिचलायौ = भगा दिया ।

चले हाथ चंपति के ऐसे। छूटे बान धनंजय कैसे॥
उतकट भट बखतर धर मारे। फूटे हय गय पक्खरधारे[1]॥
सूखे कढ़े रुधिर नहिं छोवैं। लागत प्रान परन के पीवैं॥

दोहा।

ठिल्यौ कटक सुभकरन कौ, ठिल्यौ खवास अडोल।
रनउमंग में उमड़ि कै, नच्यौ तुरंग अमोल॥ २॥

छन्द।

तबहिँ बान चंपति कौ छूट्यो। हदुवा लग्यो पुठी ह्वै फूट्यो॥
गिरौ तुरंग खवास हँकारयो। सो कासिमखाँ बरछी मारयो॥
उगरसाह तंह मार मचाई। साहि गढ़ै अति धोप चढ़ाई॥
चंपतिराइ विजै तँह लीनौ। मुँह मुरकाइ[2] अरिन कौ दीनौ॥
विकट कटक मुकहोरि बुलायौ। हांति उमड़ि परौनी[3] धायौ॥
निकट रायगिरि तैं तहँ आयो। तहां फोज बंका दल छायो॥
जाने कटक उमराइ करेरौ। दीनौ राति उमंडि दरेरौ॥
सुभट बान गोलिन सौं फूटे। अरि के विकट मोरचा छूटे॥

दोहा।

पैठे उदभट कटक में, कपटे विकट पठान।
घाइन घालत[4] घाय सौं, करि चंपति की आन॥ ३॥

छन्द।

तहाँ मार माची अति भारी। चंपतिराइ तेग झुकि झारी॥
उमड़ि घेरि कौं घटदल कीन्हो। कटक युद्ध कौं पैदल लीन्हो॥
समर बीर बैरिन पग रोपे। जो न जिहाज चोट धरि कोपे॥
घपंत अस्त्र कवच धर फूटे। मयामेघ मानौ भर जूटे॥

१—पक्खर = पाखर, हाथी घोड़ों का कवच।

२—मुरकाना = फेर देना, भगा देना। ३—परौनी = स्थान विशेष।

४—घालना = मारना, चलाना।

तहाँ चौदहा मेघ सिधारयौ। सुनि सरदार समान हकारयौ ॥
कहै चौदहा मुजरा मेरौ। हौं मारौं सरदार अनेरौ ॥
चंपत लख्यौ वचन सुनि प्यारौ। औचक आनि कियौ उजियारौ ॥
छुट्यौ बान बैरी कौ भूल्यौ। छाती लग्यौ कढ़यौ अति रूल्यौ ॥

दोहा ।

पंचम चंपतिराइ के, लग्यौ बान कौ घाइ।
अधिक युद्ध के रस भयो, बढ़्यौ चौगुनौ चाइ ॥ ४ ॥

छन्द ।

हला बोलि बैरी महि आयो। चंपतिराइ युद्धरस छायो ॥
रन चंपति की नची कृपानी। धरी भीम जनु कीचक घानी ॥
फौज फारि चंपति जसु लीन्हौ। अमृत हरत ज्यौं सुपरन कीन्हौ ॥
कटकु खोज बंका कौ कूट्यौ। चंपतिराइ विजै सुख लूट्यौ ॥
जीति पाइ अनघोरी[1] आये। चाल दई सुभकरन सिधाये ॥
तँह सिकार खेलन अभिलाषी। देवीसिंह नृपति की राखी ॥
आइ अजीतराइ तहँ रोके। बर भुजदंड समर मैं ठोके ॥
रहो अजीतराइ के पेंड़े। पैठि सक्यौ सुभकरन न मेंड़े[2] ॥

दोहा ।

राजा देवीसिंह कौं, डेरौ दीनौ देस।
उमड़्यौ चंपतिराइ पै, श्री सुभकरन नरेस ॥ ५ ॥

छन्द ।

सुनि सुभकरन जुद्धरस भीनौ। मंत्र सुजानराइ सौं कीनौ ॥
लरत भिरत बहु काल बितीते। घने जुद्ध सूबन सौं जीते ॥
पेंड़ पातसाहिन सौं कीनो। गई भुमि बंधुन लै दीनौ ॥
कठिन ठौर मसलहत बताई। नौरँगसाह दिली तब पाई ॥

१—अनघोरी = चुपचाप, अचानक । २—मेंड़े = सीमा ।

दारा दल जीते मुद्दरा तैं। बड़ी कोन अब हम कौं घाते॥
घाइल भये हमारे भाई। और अवस्था सी कछु आई॥
ये सुभकरन मिले दल साजे। बंधु विरोध करत हम लाजे॥
जो कीजै अब उमड़ि लराई। जीते [redacted] जग में न बड़ाई॥

दोहा।

गोतघाउ¹ तैं आजु लैं, हमैं बचायो ईस।
अब सलाह इन सौं करैं, कछू न ह्वैहै खीस²॥ ६॥

छन्द।

ज्यौं मन आनि लगाई बातैं। होई सलाह कटक मिन जातैं॥
सुनि सुभकरन घनो सुख पायो। मन मिलाइ मिलिबो ठहरायो॥
त्यौं चंपति कहि कुशल सुहाती। लिखी सुजानराइ कौं पाती॥
मुरछो³ घाइ देह बल आयो। बोल सिकार तुरग दौरायो॥
बाँचत चिठी जान यह लीनी। चंपतिराइ सलाह न कीनी॥
मिलिये काज बोल हम बोल्यो। हित सौं हियो सुभकरन खोल्यो॥
बोल बोलि जौ मिलन न जैये। तो झूठे जग में ठहरैये॥
तातैं बनै मिलै लिरधारै। चंपति हमैं न झूठे पारै॥

दोहा।

मिलिबो राइ सुजान कैं, हिये रह्यो ठहराइ।
दल अमखोरी ले चले, घर कौं चंपतिराइ॥ ७॥

छन्द।

घर कौ चंपतिराइ सिधाये। दल लै दुवन दलीपुर आये॥
तंह छत्रसाल मगतिरस भीनै। उमगि पिता के दरसन कीनै॥
पहुँचि येदपुर में छवि छाये। मिले सुजानराइ सन भाये॥

१—गोतघाउ = बंधु विरोध; और हत्या।   २—खीस = हानि।
३—मुरछो = घाव भर आया।

दोऊ वीर मंत्र कौं वैठे। दिगपालनि के उर भय पैठे॥
तहाँ सुजानराइ जो वोले। वचन सलाह करन के खोले॥
ते चंपति के चित्त न लागे। उद्दित जुद्ध बुद्धि रस पागे॥
जब हम बिरस[1] साह सौं कीनौ। तब इन बचन कह्यौ रिस भीनौ॥
हम न साह कौं मनसब छैहैं। भुमियावट में सामिल रैहैं॥

दोहा।

जब हम भुमियावट करी, तव इन करी मुहीम॥
हमै जीति पै ओंड़छौ, चाहत है सब सीम॥ ८॥

छन्द।

चंपतिराइ सलाह न मानी। राइ सुजान वहै ठिक ठानी॥
मन बच कर्म संधिरस राचे। मिलै न चंपति जब हैं साचे॥
तहँ सुभकरन साजि दल धाये। समर ठानि चंपति पै आये॥
फौजै उमड़ि निकट जब आई। तव कीन्ही चंपति मनभाई॥
दल पर वान वज्र से वरपे। कौतुक लखें देवता हरपे॥
हलनि हलाइ फौज वँध फोरै। घनझुंडा[2] ज्यौं पवन झकोरै॥
खलभल परी टुवन दल भानै। कित धौं गयो कौन नहि जानै॥
जव न व्यौंत कछु चलै चलाये। तव सुभकरन हजूर बुलाये॥

दोहा।

सँग लै राइ सुजान कौं, मुजरा कीन्हो जाइ।
देखि साहि सुभकरन को, अनतहि दियो पठाइ॥ ९॥

छन्द।

त्यौंही साह कियो मनसूवा। दक्षिण को भेजो करि सूवा॥
नामदारखां नाम वखानो। दिल्लीपति के अति मन मानो॥
रतनसाह तिन संग पठाये। चंपति रहे देस में छाये॥
लिखी नवावसाह कौं ऐसी। चाहे करन वड़ाई जैसी॥

१—बिरस = बिगाड़, विरोध।   २—घनझुंडा = दल, बादल।

रतनसाह चंपति कैदी जायौ । मिल्यौ मोहि सेवा में आयौ ॥
ऊतर साह न दूजौ दीन्हौ । बांचत लिखी कैद करि लीन्हौ ॥

दोहा ।

दिल्लीपति की बूझ कौ, जबही सुन्यौ जुवाब ।
रतनसाह कौ तुरतही, विदा कियौ जु नवाब ॥ १० ॥

छन्द ।

राइ सुजान करी जे घातैं । ते न भईं सब मन की बातैं ॥
ह्वै उदास ह्वांतैं उठि आये । ए विचार मन में ठहराये ॥
जहां न आदर बूझ बड़ाई । जहां न प्रापति[1] बंधु न भाई ॥
जहां न कोऊ गुन कौ पूछै । तहां न पल भर ठाढ़े हूजै ॥
सेवा पातसाह की छाड़ी । फेरि सलाह चौड़ुघे माड़ी ॥
तब विनई हीरादे रानी । हम सेवा नृप की उर आनी ॥
कछु न कपट आनौ हम माहीं । निहचै चंपति में हम नाहीं ॥
तब रानी जुग फूल्यौ आन्यौ । उर विश्वास करेवौ ठिक ठान्यौ ॥

दोहा ।

त्यौंही राइ सुजान सौं, हितुन कही समुझाइ ।
तुम अपनी रच्छा करौ, रचियतु इहां उपाइ ॥ ११ ॥

छन्द ।

यह सुनि राइ सुजान सिधाये । तज चौड़ौ देदपुर आये ॥
अँगदराइ रतन गुन भारे । छत्रसाल अगडुग के तारे ॥
तीनौं कुँवर महेवा छाये । समाचार फौजन के आये ॥
तिनमें छत्रसाल परवीने । खेलत आखेटक रस भीने ॥
देलहि बरष ग्यारहौ लागौ । प्रगट साल सोरह कौ दागौ ॥
अंगदराइ मंत्र तँह कीन्हौ । ढिग बुलाइ छत्रसालहि लीन्हौ ॥

१—प्रापति = प्राप्ति ।

हित सो कहे वचन निरधारे। मामनि[१] के तुम जाउ छतारे[२] ॥
श्रौर मंत्र मत उर में आनो। हुकुम मानि तुम करो पयानो ॥

दोहा।

ज्यौं खरदूखन के समैं, धरे धनुष तूनीर।
अज्ञा श्री रघुनाथ की, मानी लछमन वीर ॥ १२ ॥

छन्द।

जो छत्रसाल तहां पगु धारे। जहाँ सुने मामा अनियारे ॥
समाचार चंपति सब लीन्है। डेरा जाइ वेरछा कीन्है ॥
हीरादे[३] फौजे फरमाई। डंका देत जतारह आई ॥
तहँ तें दो फौजें करि धाये। दुहु दिसि दोऊ बीर दबाये ॥
श्रौचक फौज वेदपुर आई। भीर[४] सुजान न जोरन पाई ॥
तीन सुभट सँग लीन्है बैठे। प्रतिभट उमड़ि जाइ कर पैठे ॥
इत सुजान की छुटी बँदूखें। फूटी वर वैरिन की कूखें ॥
झिल झिल फौज ठिलाठिल धावै। चहुँदिस छोर छुवन नहि पावै ॥

दोहा।

दारू[५] गोली के घटे, तीरन माची मार
छूछे[६] भये तुनीर सब, परयो फौज को भार ॥ १३ ॥

छन्द।

परयो भार मारू सुर बाजें। तीनौं सुभट समर सुभ छाजें ॥
उमड़ि मनोला हरी जसोधी। दल में तेग तड़ित सी कौंधी ॥
मार करें रनसिन्धु विलोरें[७]। तेगनि तमकि ताल सो तोरें ॥
लरयौ उलटि रन पंडित पांडे। झुक झपेटि खंडे अरि चांडे ॥
रुचि सों सार स्रात ज्यों मेवा। वाइन के धरि कंजा नेवा ॥
पाइ दुहुँ के परे न पाछे। पैरें सार धार में आछे[८] ॥

१—मामनि = मामाश्रों के यहाँ। २—छतारे = छत्रशाल का प्यार का नाम।
३—हीरा दे = हीरादेवी। ४—भीर = फौज। ५—दारु = बारूद।
६—छूछे = रिक्त, खाली। ७—विलोरें = हिलावैं। ८—आछे = भले।

स्वामि हेत तिल तिल तन टूटै । भानु हेत सुरपुर सुख लूटै ॥
फौजैं पिली रुकन नहि जानी । सुरपुर कौं उमगी ठकुरानी ॥

दोहा ।

सब ठकुरानिन उमगि कै, कीन्हौ अगिन प्रवेस ॥
देखत साहस थकि रह्यो, देविन सहित दिनेस ॥ १४ ॥

छन्द ।

लख्यौ सुजानराइ ढिक ठायौ । सबही कौ विक्रम मन भायौ ॥
यह संसार तुच्छ करि जानौ । राखौ रजपूती कौ बानौ ॥
तन कौ कियौ न लोभ न जी कौ । धरयौ लिलाट राज कौ टीकौ ॥
सब के संग अमरपुर लीनौ । काढि कटार पेट में दीनौ ॥
मरयौ सुजानराइ कै आयौ । लरयौ मदन आनन छवि छायौ ॥
घोड़ी धरि मखाने की धाई । जूझौ मनै मार कै माई ॥
समिटि फौज छाँते फिरि आई । जहां खबरि चंपति की पाई ॥
चंपति जहां जुद्धरस भीने । रोगन[1] आनि सिथिल करि लीने ॥

दोहा ।

बल धरि धाये खल सबै, अथर ज्यान[2] की पार ।
नातर को बचतौ कहां, थिरचै चंपति राइ ॥ १५ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे सुभकरन पराजय-
चंपतिवधवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

१—रोगन आनि सिथिल करि लीनैं = महाराज चंपतराय रोगों से ग्रसित थे और श्रान्त तथा शिथिल होकर निर्बल हो रहे थे । २—ज्यान = निर्बलता ।

आठवाँ अध्याय ।

छन्द ।

चंपतिराइ सुनै दल धाये। छाड़ि ओरछा अंत सिधाये ॥
तीन रोज बीते जटवारे[1]। फौजे फिरे खोज निरधारे ॥
तब चंपति यह मंत्र विचारयौ। सहरा[2] कौ जैबौ निरधारयौ ॥
सहरा भूप इन्द्रमनि भाषे। हते साह नाली में राखे ॥
जब हजूर चंपति पग धारे। तहाँ कैद में भये निहारे ॥
चंपति अरज साह सौं कीन्ही। कैद छुड़ाइ भूप कौ दीन्ही
छुट्यौ इन्द्रमनि देसहिँ आयौ। फेरि राज सहरा कौ पायौ ॥
करी हती इहि भांति निकाई। तातें मति सहरा कौ धाई ॥

दोहा ।

सहरा कौ सूधे भये, चंपति सिथिल सरीर ।
घात ताक पाछे परी, वैरिन की भट भीर ॥ १ ॥

छंद ।

टिले दलेल दौवा दल पाछे। सोरह सहस सुभट सँग आछे ॥
चंपति संग भीर कछु नाहीं। सँग असवार पचीसक आहीं ॥
सहरा कौं सूधे पग धारे। दिन दिन बढ़ै रोग अति भारे ॥
दौर[3] कोस सोरह की कीनो। उतरि वरिक घोरन दम दीनो ॥
तुरँगनि रातिबु[4] दैन विचारो। तौं लगि अरि कौ सुन्यौ नगारो ॥
नजर परी वैरिन की गोलै[5]। चंपति बैठे तरकस खोलै ॥

१—जटवारा = नगर विशेष ।   २—सहरा = नगर विशेष ।
३—दौर = धावा ।   ४—रातिब = दाना, चारा ।   ५—गोलै = झुंड ।

चढ़्यौ तुरी तरकस कटि मांहीं । ब्यौंत[1] बान घालिन[2] कौ नांहीं ॥
तंह आड़ौ[3] इक औघट[4] आयौ । दव करि चंपतिराइ नकायौ ॥

दोहा ।

औघट के नाकत तहां, तन कौ लगि न बार ।
घारि पुलरी भारिके, उतरि परद्यो इहि पार ॥ २ ॥

छंद ।

पीछे तहां इन्द्रमनि राजा । औघट धस्यौ तुरंगम ताजा ॥
गिरौ इन्द्रमनि दिन तैं थोरी । साथल बन्यौ न औघट घोरी ॥
मिली फौज बैरिन की बांकी । काढ़ि कृपान इन्द्रमनि हांकी ॥
टूक टूक तन सन्मुख टूट्यौ । बीरलोक कौ आनँद लूट्यौ ॥
जब लगि जूझ इन्द्रमनि कीन्हौ । चंपति गांउ दौर करि लीन्हौ ॥
सहरा सहर खबर यह ठाई । साहिबसिंह धधेरै पाई ॥
चंपतिराइ चले इत आये । नाते प्रगट प्रीति के पाये ॥
ऐसे समै कहा मनु धावै । हितू बिना को काके आवै ॥

दोहा ।

तातैं इहां बुलाइ कै, चंपति कौ निरधारि ।
यह बिचारि पठये तहां, तै द्वै सै असवारि ॥ ३ ॥

छंद ।

तँह दौवा[5] सियराम सिधारयो । अरु गुपाल वारी निरधारयो ॥

१—ब्यौंत = अवसर । मौका । २—घालिन = चलाने का ।

३—आड़ौ = बीच में । ४—औघट = कुघाट, नाला ।

५—दौवा = बुंदेलखंड के राजाओं में यह प्रथा है कि राजा को बाल्यावस्था में जिस धाय ने दूध पिलाया है उसका पुत्र जो राजा के समान वय का होता है उस राजा का दौवा अर्थात् धाय-पुत्र कहाता है । राज्य दर्बार में जाति का विचार न करके इस दौवा का विशेष सम्मान होता है । उसके लिये वेतन, तथा जागीर लगा दी जाती है । ये धायें बहुधा अहीर खवास और राजपूत आदि जातियों की स्त्रियां होती हैं । राजा अपनी धाय के पति को कक्का कह करि संबोधन करते हैं । दौवा को राजा अपने सहोदर की भांति मानते हैं ।

करिहि कूंच तिहि गावैं आये। चंपतिराइ जहां सुन पाये॥
औचक सुनी फौज जब आई। चंपतिराइ कमान चढ़ाई॥
उठि कै हिम्मत हिये बढ़ाई। सेंके[1] विना कमान चढ़ाई॥
उतरे ताहि बहुत दिन वीते। फिरी कमान मनोरथ रीते॥
छत्रसाल तंह बैठे आगे। उर उत्साह जुद्ध के जागे॥
त्यौंही छत्रसाल की माता। जग में एक पुन्य की त्राता॥
कढ़्यौ कटार हाथ में लीन्हौ। हुलसि पतिव्रत में मनु दीन्हौ॥

दोहा।

तहां धंधेरे[2] गांऊ के, जुरे[3] फौज सौं जाइ।
अति अडोल वातैं कहीं, सब कौ प्रगट सुनाइ॥ ४॥

छंद।

को हौ तुम आवत मन बाढ़ै। चंपति।को हम तजैं न काढ़ै॥
जौहर पहिल हमारे ह्वै है। औार छांह तब इनकी छ्वैहै॥
सुनि सरदार फौज के वोले। इते रोस काहे कौ खोले॥
हम उर नाहिं कपट छल छाये। चंपति चलै लैन हम आये॥
हम इनकौं सहरा लै जैहैं। दुशमन कहूँ खोज नहिँ पैहैं॥
यह विधि सीतल बात सुनाई। सुनत प्रतीति सबनि कौं आई॥
तहां उतरि उन डेरा कीन्हा। सब के चित्त सुचित करि दीन्हा॥
सहरापुर कछु दिना गमाये[4]। ह्वांते सीता वरहिँ सुहाये॥

दोहा।

देवालो रघुनाथ को, हतो निकट तिहि राउ।
दरसन को चंपति गये, धरें भगति को भाउ॥ ५॥

१—सेंकना = आग दिखा कर गरम करना।

२—धंधेरे = राजपूतों की एक जाति। बुंदेलखंड में धंधेरे, परमार, बुंदेले ये तीन प्रकार के राजपूत परस्पर संबंध औार बेटी व्यवहार करते हैं।

३—जुरे = भिड़े, सम्मुख हुए। ४—गमाये = व्यतीत किये।

छंद ।

देखे उदित रूप सुहाये । सीता राम लखन छवि छाये ॥
अरि की फौज रोस रुख पागी । उमडि तुरतु सहरा सौं लागी ॥
सोचु विचार भयो अति भारी । कछु ठहराउ नहीं निरधारी ॥
एकै कहै कूच करि जैये । मोरन गांउ बचाई हैये ॥
करी इंद्रमनि की हम नीकी । कहा आन करि हु है फीकी ॥
एकै कहै खबर सुनि लीजै । इनको नहीं भरोसो कीजै ॥
हाते फौज साजि कै धाये । हम सौं कहै लैन हम आये ॥
गयो मुहीम इद्रमनि राजा । सूनो सहर सुनौ सिरताजा ॥

दोहा ।

बन्यो आइ मरिबो इहां , घर घर माच्यो घेर ।
रिपु सौं राइ सुजान कौं , लैन न पाया बैर ॥ ६ ॥

छंद ।

है उदास सिगरे जो बोले । सुनि छत्रसाल बचन सब पोले ॥
इहां बने मरिबी तो नीको । जंह रघुनाथ सरन सबही को ॥
चंपति ध्योत बुद्धि के कीन्हे । सुनि विचार सबही के लीन्हे ॥
सब को मूल देह निरधारयो । असुर मारि भुवभार उतारयो ॥
रिपिन देह आनंद सो लीन्हो । तपु करि त्रिन चंचल यस कीन्हो ॥
जनक जजाति देह धरि आये । जग्य दान करि स्वर्ग सिधाये ॥
सूरन सतिन देह जे पाये । करि करतूति सुजस बगराये ॥

दोहा ।

ताते अँग मैं देह की , रच्छा कीजै आदि ।
सब साधन यातैं सधैं , और बात सब बादि ॥ ७ ॥

छंद ।

हम ही देह धरयो जग माही । करतूती कीन्ही चित चाही ।
एक बात जु रही है कीबे । बैर सुजानराइ को लीबे ।

जदपि अनित्य देह यह गाई। समये छूटि एक दिन जाई॥
जौ कहूँ सदरार में छूटै। तौ छत्री सुरपुर सुख लूटै॥
तातैं तनक देह बल आवै। तौ कीजे जोई मन भावै॥
कैहूँ रोग देह ते छूटै। राखौ बांधि समुद्र जौ फूटै॥
कितिक औंछड़े में दल आही। जुरत जुद्ध जमलोकहि जाही॥
जौ कहूँ नेकु बुद्धि बल पाऊँ। तौ दिल्ली झकझोरि झुलाऊँ॥

दोहा।

जौ मुकाम क्यौंहूँ बनै, तौ कीजे उपचार।
असवारी कौं बल बढ़ै, झारौं झुक झुक सार॥ ८॥

छन्द।

जौलों सहरा भई लराई। फतै दलेल दोवा तहँ पाई॥
साहिबराइ बिताव रहोऊ। गढ़ में रहे सकिल[1] के दोऊ॥
साहस चित्त दुहुन का छूट्यो। गुपित पाप चंपति कौ ऊट्यो॥
तब पाती लिखि गुपित पठाई। दौवा अरु बारी कौ आई॥
तुम बिस्वास चँपति कौ कीजै। जीवदान हमकौं तुम दीजै॥
चाहत हौं न अरिन की बाही। हमकौं कठिन परी गढ़ माही॥
पहिल फतै हमही पह लीजै। पातसाह सौं मुजरा कीजै॥

दोहा।

जबलों चंपतिराइ कौं, जियत सुनै सब कोइ।
तबलों अरि की फौज की, दौरे हम पर होइ॥ ९॥

छंद।

सुनी चिठी दौवा अरु बारी। नीचन नीचो बुद्धि बिचारी॥
कहीं जुरयौ फौजन को नाकौ। मोरनगांव चलौ वह बाकौ॥
इत मुकाम चंपति कौं भावै। सहराबारौ कूच करावै॥

1—सकिल के रहे = भाग कर जा घुसे।

कूच मुकाम बनै नहि दोई। जैसी होनहार सो होई ॥
तहँ इक बुद्धि चित्त में आनी। लालकुंवरि परतिच्छ भवानी ॥
दै दै धन पंडा सब साधे। सुमिरन करि रघुबर अवराधे ॥
पति के रहिबे की ठिक पारी। इतै कूच की करी तयारी ॥
सुनि चंपति अति ही सुख पायो। गुपित मंत्र काहू न जनायो ॥

दोहा।

छत्रसाल कीन्हो बिदा, तुरत राज तिहि ठांउ।
हमही आवत तुम चलो, ज्ञानसाह के गांउ ॥ १० ॥

छन्द।

छत्रसाल उठि रात सिधारे। ज्ञानसाह के गांउ पधारे ॥
गये बहिन के मिलन जहां ही। आदर भाव प्रीति कछु नाही ॥
बड़ दुख होइ इकतरो आवै। तीन उपास न बल तन लावै ॥
बहिन देखि कछु बात न बूझी। मिली न धाइ कहाधौं सूझी ॥
ह्वै उदास फिरि आये डेरा। भई रसोई कहां कुबेरा[1] ॥
तौलगि ज्ञानसाह घर आये। समाचार सब सुने सुनाये ॥
तब डेरा दै जिनस पठाई। भई रसोई रात गमाई ॥
समी परे सब करे हलाई। बहिन कौन को काकौ भाई ॥

दोहा।

छत्रसाल कौ करि बिदा, चंपति भये तयार।
सँग दो सौ ठाढ़े भये, सहरा के असवार ॥ ११ ॥

छंद।

चंपतिराइ बुद्धि यह कीनी। ठकुराइनि कों आज्ञा दीनी ॥
मोरनगांउ चला उत धारी। चले तहां कौ घाट हमारी ॥
पीछे एक घाट पर कोई। नस सिख तैं पट ओढ़े सोई ॥

१—कुबेर = अतिकाल, अबेर।

सँग लीजे सहरा के वारी । दो से घोरे फिरे हथ्यारी ॥
फौज टारि मोरन लै जैयो । प्रभु कों छल सों इहां छपैयो ॥

दोहा ।

एक माइके को तहां, सेवक हतो हजूर[१] ।
ताहि बुलायो जानि के, याते परै न भूर[२] ॥ १२ ॥

छन्द ।

कही वात तासों ठकुरानी । तैं प्रतीति को है हम जानी ॥
तातें तोकों मंत्र सुनायो । प्रभु के चित्त व्यौंत यह आयो ॥
तू चलि पौढ़ि खाट पर आछे । हौंहूँ चलत संगही पाछे ॥
यह सुनि के वह भरी न हामी[३] । झुक झहरानी नोनहरामी[४] ॥
पाइन परी जदपि ठकुरानी । स्वामिभगति उर तऊ न आनी ॥
जब अति सोर करत वह जान्यो । तब कीनो वाही को मानो ॥

दोहा ।

कूच करे चंपति चले, होनी हिये विचार ।
जिततें महृति चाहिये, तित तें धाई धार ॥ १३ ॥

छन्द ।

चली फौज सँग सहरा वारी । संग दो से असवार हथ्यारी[५] ॥
ताके घात पाप उर आने । चंपति तिन्हें सहाइक जाने ॥
सात कोस जो लों चलि आये । भये दगैलन[६] के मन भाये ॥
आपुस माझ इशारत[७] कीनी । कर उलछार सें हथी[८] लीनी ॥
मारे सुभट ढुइक उन संगी । चंपति पै उमड़े ढुर जंगी ॥

१—हजूर = उपस्थित था । २—भूर = चूक, भूल ।
३—हामी न भरी = स्वीकार न किया । ४—नोनहरामी = कृतघ्न ।
५—हथ्यारी = शस्त्रधारी । ६—दगैलन = दग़ाबाज़ों, विश्वासघातियों ।
७—इशारत = इंगित, इशारा । ८—सें,हथी = बर्छी, कटार ।

रोगन चंपतिराइ दबाये। कछु उपाय चले न चलाये॥
ऐसो समौ लख्यौ ठकुरानी। पतिव्रत माँझ चलायो पानी॥
चुटकि तुरग पति के ढिग जाही। धरी खाग इक वीर सिपाही॥

दोहा।

खाग छुवन पाई नहीं, बढ़्यौ मरन कौ चाउ।
कटरा काढ़्यो पेट में, दये घाउ पर घाउ॥ १४॥

छन्द।

दै दै घाउ मरी ठकुरानी। चंपतिराइ दगा तब जानी॥
यह संसार तुच्छ निरधारयौ। मारि कटारिन उदर विदारयौ॥
चले विमान बैठि सँग दोऊ। जै बोलत सुरपुर सब कोऊ॥
धनि चंपति तुम राख्यो पानी[1]। धनि धनि कालकुँवरि[2] ठकुरानी॥
धनि चंपति जिन खल दल खंडे। धनि चंपति निज कुल जिन मंडे॥
धनि चंपति निरबल जिन थापे। धनि चंपति जिन सबल उथापे॥
धनि चंपति सज्जनमन भाये। धनि चंपति जग जस बगराये॥
धनि चंपति की कठिन कहानी। धनि चंपति की रुचिर कहानी॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते चंपतिप्रनाशो नाम अष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

१—पानी रखना = प्रतिष्ठा स्थापित करना, बात रखना, शान रखना।
२—कालकुँवरि = छत्रसाल की माता का नाम था।

नवाँ अध्याय।

दोहा।

धनि चंपति के श्रौतरौ, पंचम श्री छत्रसाल।
जिनकी श्रज्ञा सीस धरि, करी कहानी लाल॥ १॥

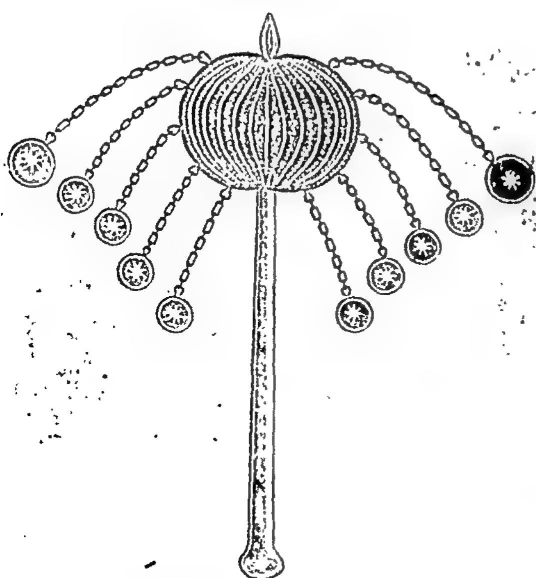
छंद।

बालापन तैं बर बुधि लीनी। सकल हथ्यारन पै रुचि कीनी॥
तुपक[1] तीर अरु सकति[2] कृपानी[3]। छुरी गुर्ज[4] की रीतै जानी॥

१—तुपक = बंदूक। २—सकति = शक्ति, बर्छी।

३—कृपानी = कृपाण, तलवार।

४—गुर्ज = शस्त्रविशेष। यह एक शस्त्र गदा के रूप का होता है श्रौर गदा के गोल भाग अर्थात् ऊपर के लट्टू में पतली पतली जंजीरें कुंडों में लगी होती हैं। इन जंजीरों के सिरे पर छोटे छोटे लट्टू लगे रहते हैं श्रौर इसे घुमा कर मारने से कई एक प्रहार साथ ही साथ होते हैं। एक श्रोर तो गदा की चोट श्रौर साथ ही साथ, उन लट्टुश्रों श्रौर जंजीरों की चोट पड़ती है। इस शस्त्र का रूप इसी के अनुसार होता है।



विद्या बाहुजुद्ध[1] की भाई। तरु नर विलगन में अधिकाई॥
असवारी में रंग मचावै। मन के संग तुरंग नचावै॥
चौगानन[2] खेलत छबि छावै। बेंटा[3] सब तै अधिक उड़ावै॥
लछन पुरुष लच्छन सब जानै। पच्छी बोलन सगुन बखानै॥
सतकबि कबित सुनत रस पागै। बिलसत मति अरथनि में आगै॥
सब सिकार की जानै घातैं[4]। रुचतीं दान जुद्ध की बातैं॥

दोहा।

पूरन पुन्य प्रताप तें, सकल कला अनयास।
बसी आइ छत्रसाल उर, दिन दिन बढ़ै प्रकास॥ २॥

छन्द।

बढ़ै प्रकास बुद्धि के ऐसें। बरनै चक्रवतिन[5] के जैसें॥
मात पात की इच्छा पूजी। कीरति विदित कविंदन कूजी॥
ग्यारह बरष बदिक्रम बीत्यौ। खेलन आखेटक श्रम जीत्यौ॥
ऐसे समै और विधि ठानी। होनहार गति जात न जानी॥
औरँगसाह तख्तपति आयौ। मेटन हिंदुधरम कौ लाग्यौ॥
चंपति हिंदुधरम रखवारौ। दिल्लीदल कौ जीतनहारौ॥
तासौं चलै कौन ,फौ बैंड़े। परयौ दिलीस बुद्धि बल पैड़ै॥
चंपति जदपि तखत कै दीनौ। तऊ दिलीस उलटि छल कीनौ॥

दोहा।

कीनौ उलटि दिलीस छल, हारि बुद्धि के डौर।
सुवन कौ जितवार[6] पै, काढ़ि पठाऊँ दौर॥ ३॥

१—बाहुजुद्ध = मल्लयुद्ध, कुश्ती।
२—चौगान = पोलो की भांति का खेल।
३—बेंटा = गेंद।
४—घातैं = दांव।
५—चक्रवतिन = चक्रवर्तिन।
६—जितवार = विजयिता, जीतनहारा।

छन्द ।

सुवन को दल दपट दवावै । ता पर दौर कौन की आवै ॥
तब औरंग बुद्धि उर आनी । फरमाई हीरादे रानी ॥
ज्यों रन भीषम को जसु जागै । अर्जुन दियो सिखंडी आगै ॥
कीन्हीं कथा उमडि इन ऐसी । भीषम और सिखंडी कैसी ॥
जासों कुल दिल्लीदल हारयो । सो चंपति सुरलोक सिधारयो ॥
सार पहिर रवि मंडल फारयो । जीत्यो सुरग जीति दिसि चारयो ॥
गयो सूर सुरपति के लोके । फूटो समुद कौन अब रोके ॥
उमरे फिरत जुद्ध को गाढ़े । चहूँ ओर वैरी बल बाढ़े ॥

दोहा ।

चहूँ ओर वैरी बढ़े, छल बल ताकत घात ।
सूनो वन मृगराज को, दुरद[1] उखारत खात ॥ ४ ॥

छंद ।

ऐसी दसा होन जब लागी । चंपति चमू सोक सों पागी ॥
सहरा में छत्रसाल प्रवीने । उतै पिता की अग्या लीने ॥
सुनै पिता सुर लोक सिधारे । त्यों माता पतिव्रत पन पारे ॥
कानन परत चाह अनचाही । हिरदै सोक सिंधु वेथाही ॥
दुख की लहर लहर पर आई । हियो हिलोर हगन पर छाई ॥
गये पिता कत छाड़ि अकेले । अब हम राज कौन के खेलै ॥
माता विन को लाड़ लड़ैहै । को उठि भोर कलेऊ[2] देहै ॥
मात पिता दीन्हे सुख जैसे । ते वीते सब सपने कैसे ॥

दोहा ।

सुपन मनोरथ से भये, या जुग के व्यवहार ।
प्रगट पेखियत सांच से, वीतत लगै न वार ॥ ५ ॥

१—दुरद = हाथी । २—कलेऊ = प्रातः काल का भोजन ।

छंद।

बीते[1] प्रगट प्रियव्रत गाये। जिन सप्तद्वीप समुद्र बनाये॥
बीते पृथु जिन पुहुमि सिंगारी। पर्वत पांति धनुष सों टारी॥
नल हरिचंद सत्त रखवारे। गये बीत जिन सुजस बगारे॥
बीते जनक विदेह सयाने। जिन सुख दुःख एक करि जाने॥
अर्जुन भीम प्रतिज्ञा जीती। अक्षौहिनी अठारह बीती॥
बीते जिते देह धरि आये। जग जस रहे धर्म तैं छाये॥
ज्यों छत्रसाल बुद्धि उर आनो। तज्यो सोक हिम्मत ठिक ठानी॥
न्हाइ पिता कों अञ्जलि दीन्ही। कथन छत्र धरम धुर लीन्ही॥

दोहा।

छत्र धरम धुर ले उठ्यो, महावीर छत्रसाल।
रीति घड़ेन की विपति मैं, धीरज धरत विसाल॥ ६॥

छंद।

धरि धीरज छत्र साल सिधारे। हांक सुनै अंगद अनियारे॥
चले छाड़ि सदन कों ऐसे। पंडव तज्यो जतु गृह जैसे॥
हिम्मत बल दल दुख के मेटे। अंगद आइ देवगढ़[2] भेटे॥
कुसल पिता की बूझी ज्यौंही। दृगनि नीर भरि आये त्यौंही॥
समाचार बीते हत जैसे। अंगद जान लिये सब तैसे॥
धुंध बाहुबल कछू न धीरे। चकित चित्त चारों दिसि हेरे॥

१—बीते = मृत हुए।

२—देवगढ़ = ललितपुर प्रांत के जालौन नामक स्टेशन के निकट बेतवा तट पर अत्यंत प्राचीन स्थान है। यह भगवान पद्मानन की जन्मभूमि है। यहाँ का कोट सघन वन से ढँका है। यहाँ गुप्तवंशीय राजाओं के बनवाये मंदिर देखने योग्य हैं।

वैरी बढ़े करत मन भाये। वल वौसाउ चले न चलाये॥
जरतु हियो निज तेजनि ऐसे। विषधर वँध्यो मंत्रवस जैसे॥

दोहा।

ज्यौं विषधर मंत्रन वँध्यौ, त्यौं अंगद अनखाय।
लेत उसासैं क्रोधवस, चलत न वल व्यौसाय॥ ७॥

छंद।

त्यौं छत्रसाल धीरधर वोले। सरस विचार मंत्र के खोले॥
अंगद कों यह वात सुनाई। राजनीति कछु जामें पाई॥
साहस तजि उर आलस मांड़े। भाग भरोसे उद्यम छांड़े॥
ताहि तजै जग संपति ऐसे। तरुनी तजै वृद्ध पति जैसे॥
तातैं अव उद्यम उर आनो। दूर देस को करौ पयानो॥
भूपन कछुक माई के पाये। राखि दैलवारे[1] हम आये॥
ते सव मांगि खरच को लीजे। दूर देस कहि उद्यम कीजे॥
यह विचार अंगद सुनि लीन्हो। तुरत विदा छत्रसालहि कीन्हौ॥

दोहा।

भये देवगढ़ तें विदा, छत्रसाल सिरताज।
पहुँचि दैलवारैं कियो, पूरन मन को काज॥ ८॥

छन्द।

त्योंही लगन व्याह की आई। पहिलही तें ह्वै रही सगाई॥
कै पवार कुलमार कुरी के। उद्दित अगिनवंस के टीके॥
तिहि कुल देवकुमारि छवि छाई। लै अवतार रुकमिनी आई॥
कुल पवित्र भूपित भो ऐसे। दीपक दीपसिखा तें जैसे॥
दूलह छत्रसाल तिह पाये। करि विवाह कीने मनभाये॥
रूप सील पतिव्रत सरसानी। भई भूप की जेठी रानी॥

१—दैलवारा = स्थान विशेष।

ब्याहि बनी[1] छत्रसाल सिधारे। विसद ब्योत उद्यम के डारे॥
प्रथम बुद्धि ऐसी उर आनी। भेंट भान प्रोहित सौं ठानी॥

दोहा।

भेंट करी इन भान सौं, अपनै प्रोहित जानि।
भान मिले जजमान कौं, राज गरब उर आनि॥ ९॥

छन्द।

प्रोहित लख्यो राज मद छाक्यो। नव छत्रसाल आपु तन ताक्यो॥
जिन चंपति सूबा बिचलाये। तिनके पुत्र कहाँ हम आये॥
तातें और ब्यौंत चितु लीजे। बड़े ठौर कढ़ि उद्यम कीजे॥
त्यौंहीं पातसाह फरमाये। नृपमनि जे जयसिंह कहाये॥
कूरम कुल उद्दित जग गाये। सूबा ह्वै दच्छिन तें धाये॥
चढ़ी ओर कूरम की फौजें। चढ़ी मनौ दरियाउ की मौजें॥
तै बिलोकि छत्रसाल सिहाने। प्रगट करन बिक्रम उर आने॥
मिले आइ जयसिंह नृपाले। उनि हित सौं चाहो छत्रसाले॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते जयसिंह-
समेलनं नाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥

१—बनी—बधू = दुलहिन।

दसवां अध्याय ।

दोहा ।

मिलि कै नृप जयसिंह सौं, अंगद लिये बुलाइ ।
मनसिव भयौ दुहूनि कौ, रहे संग सुख पाइ ॥ १ ॥

छन्द ।

रहे संग कूरम के ऐसे । नृप विराट के पंडव जैसे ॥
यद्यपि मनसम मनसिव नाहीं । सब तें उमगि अधिक उर माहीं ॥
जहां जूझ के बजे नगारे । तहां उमगि उर लरै छतारे ॥
सनमुख धसै वीररस पागे । घालै घाउ सबहिं ते आगे ॥
अरुन रंग आनन छवि छावै । अरि के अस्त्र गुविंद बचावै ॥
जहां गढ़न सौं होइ लराई । तहां करै सब तें अधिकाई ॥
करै मोरचा सब तें ऊँचे । जहां और के मन न पहूँचे ॥
गिरै गाज से तहँ मतवारे । राखि लेहिं तहँ राजन हारे ।

दोहा ।

या विध नृप जयसिंह के, रहे संग छत्रसाल ।
त्यौं फरमान दिलीस कौ, आइ गयो ततकाल ॥ २ ॥

छन्द ।

त्यौं फरमान साह कौ आयो । बली बहादुरखां फरमायो ॥
लिखी मुहीम देवगढ़ जैयै । विकट मवास[1] जेर कर ऐयै ॥
सुनि फरमान चढ़ाईं भौंहैं । पिल्यौ नवाब देवगढ़ सौंहैं ॥
नृप मद्दत छत्रसाल पठाये । कोका[2] की तावीन[3] लगाये ॥
कोका संग चले सुख पाये । ये विचार चित में ठहराये ॥

---

1 मवास = जागीर । 2 कोका = धायपुत्र को कहते हैं ।
3 तावीन = मातहती, सेवा, अनुचरता ।

जबहिं साह दच्छिन तें धाये। चंपतिराइ हजूर बुलाये ॥
मारँग कलह तखन हितु काध्यो। दारा घाट धौलपुर बाँध्यौ ॥
तहाँ हरौली[1] चंपति कीन्हीं। चामिल उतरि फतै जु दीन्हीं ॥

दोहा।

दुदस हजारी कौ तहाँ, मनसिब दियौ दिलीस।
पेरछ कौंच कनार कुल, अरु पाई बकसीस ॥ ३ ॥

छन्द।

ये सबाब सब आनत चाहौं। इनसौं कछु कहिबे की नाहीं ॥
इन चंपति सौं भाइप[2] मानो। पहलो पाग जगत में आनो ॥
इनकौ संग भलौ है तातें। करिहैं भलौ पुराने नातें ॥
यह विचार काका सँग धाये। चालि दूर कूच देवगढ़ आये ॥
निकट जाइ अब बज्र नगार। उमड़े उताह देवगढ़धार ॥
सत्तर सहस सुभट रन बाँके। रोके आइ गिरिन के नाके ॥
लागी लाग भराने छूटे। जे हरौल तिनके मन टूटे ॥
हटत हरौल भयौ भय भारी। पैठ्यो चंचल धुटक[3] छतारी ॥

दोहा।

सिंहनाद गल गर्जि कै, मज्ज उठ्यो भट भीर।
छता बीररस उमग में, गनै न गोली तीर ॥ ४ ॥

छन्द।

गनै न गोली तीर छतारी। देखत देव अचंभौ भारी ॥
एक बीर सहसन पर धावै। हाथ बीर को उठन न पावै ॥
खगिन मारि करी घमसानी। समर भूमि स्रोनित सौं सानी ॥
नची छता की ओर कृपानी। किलकी[4] उमगि कालिका रानी ॥
सँग के सुभट जुद्ध में जूटे। भीर परे तिन सौं सँग छूटे ॥

---

१ हरौली = सेनानायकत्व।　　२ भाइप = भाईपन।
३—धुटक = चपल, प्रचंड।　　४—किलकी = हुंकारी।

फारत फौज छता अवलोक्यो। उदभट रुकै कौन को रोक्यो॥
उमगि भरे अरि कौ दल भानौ। घाउ लगत तन तनक न जानौ॥
घाइ खाइ छत्ता रन जीत्यो। अरि पद प्रले काल सौं बीत्यो॥

दोहा।

बिरभानौ चंपति बली, समर भयानक ठान।
भभरि भीर अरि की भगी, काल रुद्र उर आन॥ ५॥

छन्द।

बैरी भगे मानि भय भारी। परे बिडर[1] ज्यौं बाघ बिडारी॥
बिडरत[2] अरि के कटक निहारे। तव नवाव के वजे नगारे॥
पाई फतै परे तह डेरा। तौ लगि भई सांझ की बेरा॥
सब कौ मिले सबनि के,संगी। बिछुरौ एक छता रनरंगी॥
रनमंडल[3] संगिन सब हेर्यो। चकित चित्त चारिहुँ दिसि फेर्यो॥
निस के पहर कलप से बीते। मिल्यौ न वीर मनोरथ रीते॥
बूझत खबर फिरै चहु' फेरी। ताकत दिसा दाहिनी डेरी॥
भूख प्यास की सुरत बिसारै। जीते जुद्ध तऊ मन हारै॥

दोहा।

मन हारे ढूँढत फिरै, कहां छतारे वीर।
मिलै आजु तौ है भली, नातर तजौं शरीर॥ ६॥

छन्द।

मति[4] सरीर तजिबे की कीन्ही। दीनदयाल बुद्धि उर दीन्ही॥
एक बेर फिरि फेरी दीजे। चलौ चाह[5] लसगर की लीजे॥
चाह लेन लसगर की धाये। पेखन तहँ ये बचन सुनाये॥
हम बीसक असवार हथ्यारी। संग फौज के करी तयारी॥
खेतु छाड़ि बैरी जब भागे। वहस बढ़ै हम पीछे लागे॥

१—बिडर = भगेड़। २—बिडरत = भागते हुए। ३—रनमंडल = रणभूमि।
४—मति = विचार। ५—चाह = खोज, समाचार।

गये दूर दल तें कढ़ि ज्यौंही । सूरज चल्यौ अस्त कौ त्यौंही ॥
तब बातें मुरके सब भाई । सूरज सनमुख दिसा बताई ॥
तहाँ एक कौतुक हम देख्यौ । जाकौ अचिरज जात न लेख्यौ ॥

दोहा ।

जीन कस्यौ इक दूर तें , देख्यो तहाँ तुरंग ।
ताके धरिबे को हिये सब कै बढ़ी उमंग ॥ ७ ॥

छंद ।

बढ़ि उमंग धरिबे कौ धाये । जब नजीक[1] छिनक पर आये ॥
घाइल तहाँ लख्यौ रस भीने । कढ़ी कृपान हाथ में लीने ॥
ताकी छिनक मूरछा जागी । छिनक जोगनिद्रा सो लागी ॥
करै तुरी[2] ताकी रखवारी । ढिग न जान पावै मसहारी ॥
पूछ उठाइ चौंर[3] से टारैं[4] । जो ढिग आवै ताहि पिछारैं ॥
याहि धरन धाये बहुतेरे । पहुँचे निकट दाहिने डेरे ॥
जब तुरंग यह सनमुख धायौ । भज्यौ पिंडर सो जीयन आयौ ॥
यह सुनि सुभट छमा के धाये । बिछुरे मनौ प्रान फिरि आये ॥

दोहा ।

तौ लगि उदयाचल चढ्यो , सूरज सिंदुर रंग ।
त्यौंही दौरि दूर लौं , सब की नजर प्रसंग ॥ ८ ॥

छंद ।

सब की नजर दूर लौं दौरी । चीन्हा तुरी तबै सब पौरी ॥
देख्यौ तहाँ तुरी रिझानौ । स्वामिधर्म कौ बाँधे बानौ ॥
इन तुरंग की करी बड़ाई । नौकरी तुमही सौं बनि आई ॥
राति अकेले चौकी दीन्ही । हमते अधिक भक्ति तुम कीन्ही ॥
जब तुरंग इहि भाँति लड़ायौ[5] । सबी जान रोस बिसरायौ ॥

१—नजीक = नज़दीक, निकट। २—तुरी = घोड़ा। ३—चौंर = चँवर।
४—टारैं = हिलावें। ५—लड़ायौ = फुसलाया गया।

निकट जाइ प्रभु कों उन देख्यो। जीवन जनम सुफल करि लेख्यो॥
मुजरा करि सबहो सिर नायो। चेतन देखि हिये सुख पायो॥
जल मँगाइ प्रभु को मुख धोयो। फते सुनाइ समर श्रम खोयो॥

दोहा।

करी काइजा[1] तुरग की, सीच्यो बदन बनाइ।
डेरा ल्याये खेन ते, प्रभु को पान खवाइ॥ ९॥

छंद।

कोतल[2] भयो तुरी संग आयो। जगत विदित जाको जस गायो॥
बांधे घाइ कीर्त्ति जग जागी। दल में चाह चलन यह लागी॥
सुनी नवाब चाह यह तैसी। आदि अंत तें बीती जैसी॥
करी तुरी की बड़ी बड़ाई। ऐसो करत भले जे भाई॥
ताते ताको नाम नवीनो। प्रगटि भले भाई कहि दीनो॥
जिन छत्रसाल करी घन घाई। तिनकी कछु चरचा न चलाई॥
रीझन तैसी सब बिसराई। बाँकनि अपनी फते लिखाई॥
सुनत फतूह साह सुख पायो। वढ़ि नवाब को मनसिब आयो॥

दोहा।

मनसिब बढ़्यो नवाब को, दियो साह सुख पाइ।
छत्रसाल के भुजन की, को न कमाई खाइ॥ १०॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते देवगढ़जीति
वर्णनं नाम दशमोऽध्यायः॥ १०॥

१—काइजा करना = घोड़े को लगाम चढ़ा कर उसका दूसरा छोर खींचकर उसकी पूँछ की जड़ में बांध देना।

२—कोतल घोड़ा वह कहाता है जिस पर जीन आदि तो कसी हो परंतु कोई सवार न हो और जो धीरे धीरे चलाया जाता है। इसे कोतल चलना कहते हैं।

ग्यारहवाँ अध्याय।

छंद।

छत्रसाल पंचम रन कीन्हो। जैतपत्र कों कहि लै दीन्हो॥
आइ मिले सब विकट मवासी। चुक्यौ[1] अमल रहौ रैयत वासी॥
फिरि नवाब दच्छिन कौं धाये। छत्रसाल तिन संग सिधाये॥
जदपि विक्रम प्रगट जनायो। फल नवाब तें कछू न पायौ॥
तन मन भयौ अनख अधिकारी। तुरकन तें कब बन्यो हमारी॥
पिता हमारे सूबा डाँडे। तुरकन पर अजमाये खाँड़े॥
करी पातसाहन सौं पेंडै। परयौ रह्यौ मुगलन के पैंडे॥
पेंड़[2] बुंदेलखंड की थापी। चंपति कीर्ति जगत मध व्यापी॥

दोहा।

तिन चंपति के नंद हम, सीस नवावैं काहि।
हम भूले सेयौ वृथा, हितू जानिकै याहि॥ १॥

छंद।

हितू जानि सेयौ अविवेकी। तातें कहौ होइ क्यों नेकी॥
ताकौ हम ऐसौ फल पायौ। याके संग कसालो[3] आयौ॥
हम तौ छत्रधर्म प्रतिपाल्यौ। रीझ न याकौ माथौ हाल्यौ॥
मूरख के आगे गुन गायौ। भैंसा बीन बजाइ रिझायौ॥
वृथा कमल थल माह लगायौ। ऊसर में पानी बरसायौ॥
खर के अंग सुगंध चढ़ायौ। वायस कौ घनसार[4] चुनायौ॥
बधिर कान में मंत्र सुनायौ। सूरदास कौं चित्र दिखायौ॥
कुठरा[5] करिबे कौं घन टेयै[6]। जो अविवेकी साहिब[7] सेयै॥

दोहा।

अविवेकी कौ सेइ कै, को न हिये पछिताइ।
बीजा बये बबूर के, कहा दाख फल खाइ॥ २॥

१—चुक्यौ = पूरा प्राप्त हुआ। २—पेंड़ = मान। ३—कसालो = कष्ट
४—घनसार = कपूर। ५—कुठरा = कुल्हाड़ी। ६—टेयै = घिसियै।
७—साहिब = स्वामी।

छन्द ।

हिंदू तुरक दीन द्वै गाये। तिनसौं वैर सदा चलि आये॥
लेख्यौ सुर असुरन कौं जैसौ। केहरि करिन वखान्यो तैसो॥
जवतै साह तखत पर वैठे। तवतै हिंदुन सौं उर पैठे॥
महँगे कर तीरथनि लगाये। वेद देवाले निदर ढहाये॥
घर घर वाँधि जंजिया लीनै। अपने मन भाये सब कीनै॥
सब रजपूत सीस नित नावै। ऐड़ करै नित पैदल धावै॥
ऐड़ एक सिवराज[1] निवाही। करै आपने चित की चाही॥
आठ पातसाही झुकझोरै। सूवनि वांधि डांड़[2] लै छोरै॥

दोहा।

ऐसे गुन सिवराज के, वसे चित्त मैं आइ।
मिलिवोई मन मैं धर्‌यो, मनसिव तज्यौ वनाइ॥ ३॥

छन्द ।

इतहि पातिसाही सब झूमैं। उतहि सिवा के दल मैं घूमैं॥
इतकौ उतहि जान नहिँ पावै। जो निकसै सो सीस गँवावै॥
दुहु दिसि होत खरी हुसियारी। चौकिन निस दिन होत तयारी॥
तहाँ जान छत्रसाल विचार्‌यो। ब्यौंत सिकार खेल कौ डार्‌यो॥
तीछन अस्त्र मृगन पर वाहै। वन पहार दच्छिन के गाहै॥
सुभट संग पटरानी लीन्ही। दुरगम गिरिन वसेरे कीन्हो॥
भोर चलै सूरज दै वाये। दच्छिन दैहि अस्तगिरि आये॥
निस मैं पीठि ओर ध्रुव चाहै। बुधि बल सब कौ जात निवाहै॥

दोहा।

निसि मैं नक्षत्रनि चलै, दिन मैं भानु विचारि।
लाग[3] देहि सब साथ कौ, रोज मृगनि कौं मारि॥ ४॥

---

[1]—सिवराज = शिवाजी। [2]—डांड़ = दंड।

[3]—लाग = भोजन की सामिग्री।

छन्द।

घाटी नकी गिरिन की ठाढी। देखी तहाँ भीमरा[1] बाढ़ो॥
तरे बाँधि काठन के भेरा[2]। परे पार के[3] बन में डेरा॥
घन ही बन घाटी सब हेरी[4]। चौकी रही दाहिनी डेरी॥
कृष्णा चढ़ी देखके त्योंही। उतरे पार भीमरा ज्योंही॥
उतरि पार सिवराज निहारे। सबके भये अचभे भारे॥
तंह सिवराज सोच अति बाढे। देखत भये दूर ते ठाढ़े॥
कुसल पूछि ढिग ही बैठारे। कैसे पहुँचे बीर छतारे॥
कही किसा[5] अपनो सब जैसी। चितु दै सुनी सिवा सब तैसी॥

दोहा।

सिवा किसा सुनिकै कही, तुम छत्रो सिरताज।
जीत आपनी भूम कौ, करौ देस कौ राज॥५॥

छन्द।

करौ देस कौ राज छतारे। हम तुमतैं कबहूं नहिं न्यारे॥
दौरि देस मुगलन के मारौ। दबटि दिली के दल संहारौ॥
तुरकन की परतीत न मानौ। तुम केहरि तुरकन गज जानौ॥
तुरकन में न विवेक बिलोक्यो। मिलन[6] गये उनकौ उन रोक्यो॥
हमकौ भई सहाइ भवानी। भय नहिं मुगलन की मन मानी॥
छल बल निकसि देस में आये। अब हम पै उमराइ पठाये॥
हम तुरकनि पर कसी कृपानी। मारि करेंगे कीचक घानी॥
तुमहू जाइ देस दल जोरौ। तुरक मारि तरवारनि तोरौ॥

दोहा।

राखि हिये ब्रजनाथ कौ, हाथ लेउ करवार।
ये रक्षा करिहैं सदा, यह जानौ निरधार॥६॥

१—भीमरा = भीमा नदी। २—भेरा = बेड़ा। ३—के = करके।
४—हेरी = देखी। ५—किसा = क़िस्सा = कथा, वृत्तान्त।
६—ज्ञान पड़ता है कि जब महाराज छत्रसाल शिवा जी से मिलने गये थे, यह वह समय था जब शिवा जी दिल्ली से औरंगज़ेब के षड्यंत्र से निकल कर दक्षिण पहुँच चुके थे।

छत्रनि की यह वृत्त बनाई। सदा तेग की खाइ कमाई ॥
गाइ वेद विप्रन प्रतिपाले। घाउ एड़धारिन[1] पै घाले[2] ॥
तेगधार में जो तन छूटै। तो रवि भेद मुकत सुख लूटै ॥
जैतपत्र जो रन में पावै। तो पुहुमी के नाथ कहावै ॥
तुम हो महाबीर मरदाने। करिहो भूमि भोग हम जाने ॥
जो इतही तुमकों हम राखैं। तो सब सुजस हमारे भाखैं ॥
तातें जाइ मुगल दल मारो। सुनिये श्रवननि सुजस तिहारो ॥
यह कहि तेग मँगाइ बँधाई। बीर बदन दूनी दुति आई ॥

दोहा।

आदर सों कीन्हें विदा, सिवा भूप सुख पाइ।
मिली मनो उर उमग में, भूमि भावती आइ ॥७॥

छन्द।

मानहु भूमि भावती पाई। दृढ़ मसलहत[3] यहै ठहराई ॥
साहस सिद्धि धरैं मन माँहीं। फेरि भीमरा कृष्णा गाहीं[4] ॥
दच्छिन में सूबनि को भेला। तहाँ सुनै सुभकरन बुँदेला ॥
जिन लोहे लहरात सभाये[5]। तीन खून तिन माफ कराये ॥
तिनसों इन मिलिबो ठिक ठानो। हितू अनहितू चाहत जानो ॥
इन अपनो जब खबर सुनाई। तब सुभसाहम[6] नौ निधि पाई ॥
मिले दौरि अति आदर कीनो। सबतें सिरैं बैठका दीनो ॥
दिन दिन दिलजोई[7] करि राखे। हित सों वचन अमृत से भाखे।

दोहा।

कछुक द्योस सुभसाह के, पास रहे छत्रसाल।
जब उचाट देखे हिये, तब जान्यो उन हाल ॥८॥

१—एंड़धारिन = ऐंठवाले विरोधियों पर। २—घाले = चलाये।
३—मसलहत = मनसूबा, विचार। ४—गाही = पार की।
५—सभाये = पार किये। ६—सुभसाहम = शुभकरण।
७—दिलजोई = खातिर, ढाढ़स।

छन्द।

जानि हाल निज पास बुलाये। दिलजोई के बचन सुनाये ॥
जो कहिये तो अरज लिखावे। जाके सुनत साह सुख पावे ॥
चतुर उकील अरज लै जैहै। फेरि साह मनसिब लिखि दैहै ॥
अरु जो हमै इहां सगु दीजै। तौ घर ही ठकुराइस[1] कीजै ॥
यह सुनि छत्रसाल जो बोले। साहस सिंधु खजाना खोले ॥
हम चलि सौ मनसिब लै देखे। कछु दिन तुरक हितू करि लेखे ॥
सेवा अपने पे नाहीं। हम न पतैहैं[2] इनकी छाहीं ॥
जो घर ही ठकुराइस कीजै। तौ कैसे जग में जसु लीजै ॥

दोहा।

तातें अब दिल्लीस के, दीरघ दलनै बिलोइ[3]।
अपनौ उद्दिम[4] ठानयौ, होनी होइ सु होइ ॥९॥

छन्द।

यह बिचार अपनो कहि दीन्हो। सुनि सुभसाह अचंभो कीन्हो ॥
कलह पातसाहन सौ काधै। ऐसौ मौह मौर को बांधै ॥
हिम्मत हिये धरी उन ऐसी। करिहै यहै कहत है जैसी ॥
तातें बिदा इन्हैं सब कीजै। इनको देखि प्रतिग्या लीजै ॥
तौ लगि चाह चली ठिकठाई। सो राजन के घर घर आई ॥
ठौर ठौर के गिरे दिवाले। सुनत हिये हिन्दुन के हाले ॥
पातसाह फरमान पठायो। हुकुम फिदाईखाँ को आयो ॥

दोहा।

नगर ओड़छे में सुनै, हिन्दू धरैं गुमान।
ते निज पत्थर पूजि के, फैलावत कुफरान[5] ॥१०॥

१—ठकुराइस = हुकूमत, प्रभुत्व।
२—पतैहैं = विश्वास करेंगे।
३—बिलोइ = विचला कर, हिला कर।
४—उद्दिम = पुरुषार्थ।
५—कुफरान = काफिरपन, अविश्वास।

छन्द ।

ऊँची धुजा देवालन राजै । घंटा संख झालरै बाजै ॥
छापै देत तिलक दै ठाढ़े । माला धरै रहत मन बाढ़े ॥
ऐसा हुकुम सरे[1] का नाही । क्यों पै करत चित्त की चाही ॥
जौ कहुं कान संख धुनि आवै । मुसलमान तौ भिस्त[2] न पावै ॥
सीसौ औटि[3] कान जौ नावै[4] । तौ दोजख तैं खुदा बचावै ॥
तातैं ढाहि[5] देवाले दीजै । तिनके ठौर मसीदैं[6] दीजै ॥
मुलना[7] तहाँ निवाज गुदारैं[8] । बाँग देहि नित सांझ सकारैं[9] ॥
न्याउ चुकावै फाजिल काजी । जाते रहे गुसाईं[10] राजी ॥

दोहा ।

सुनत कान फरमान यह, कही फिदाई खान ।
हुकुम चलाऊँ साह कौ, मेटि कुल्ल कुफरान ॥११॥

छन्द ।

ढाहि देवालय कुफर मिटाऊँ । पातसाह कौ हुकुम चलाऊँ ॥
जो कहुँ बीच बुँदेला आवै । तौ हमसों वह फतै न पावै ॥
जौ मानी मन सूबनि मौजै । जोरन लगे ग्वालियर फौजै ॥
सहस अठारह तुरी पलानै[11] । धूमघाट पर धुज फहरानै ॥
यह सुनि महावीर रस छायौ । बान बाँधि धुरमंगद धायौ ॥
पर्यौ जाई डेरन पर ऐसे । मत्त करिन पर केहरि जैसे ॥
सांगनि मारि फौज विचलाई । पर फतूह धुरमंगद पाई ॥

१—सरे—शुद्ध रूप अर्बी—शरअ = मुसलमानी धर्मशास्त्र ।
२—भिस्त—शुद्ध रूप बिहिश्त = स्वर्ग । ३—औंटि = पिघला कर ।
४—नावै = डाले । ५—ढाहि = गिरा । ६—मसीदैं = मसजिदें ।
७—मुलना = मौलाना, मुल्ला । ८—गुदारैं = पढ़ें ।
९—सकारैं = प्रातःकाल । १०—गुसाईं = खुदा ।
११—पलानै = सजे ।

दोहा।

भज्यो फिदाईखां अली, रही कछु न सम्हार।
दिये पाग के पेंच उहि, गोपाचल के पार ॥१२॥

छन्द।

खबर सुजानसिंह पर आई। जीते हू दल दहसत खाई॥
अब की थनी गई करि पेसै। वैर साह के बचियतु कैसै॥
अब जौ येस साह उर आवै। तौ हम पै फौजें फरमावै॥
यह उतपात उठ्यो रे भाई। भई जुझार सिंह की हाई॥
तब तौ चंपति भयो सहाई। गिली[1] भूमि भुजबल उगिलाई॥
चंपतिराई कहां अब पैयै। कैसे अपनौ बंस बचैयै॥
सांस अघाई बुंदेला लीन्हौ। फिरि फिरि चंपति की सुधि कीन्हौ॥
ज्यौं यह फिकिर भूप उर आई। त्यौं हरकारन खबर सुनाई॥

दोहा।

पंचम चंपतिराई कौ, छत्रसाल बिरभाइ।
करन ढूंढ़ देसहिं चल्यो, मनसिब तज्यो बनाइ॥ १३॥

छन्द।

जब यह खबर भूप सुनि पाई। बढ़ी उमगि अरु दहसत आई॥
जौ तुरकन पर कसी कृपानी। तौ कीनो मेरी मनमानी॥
जौ मन में कछु दून बिचारै। तौ कृपान हमही पर भारै॥
तातें थनत प्रीति उर आनै। खोदि गाड़िये बैर पुराने॥
यह बिचारि तँह पांच पठाये। जँह छत्रसाल सुनै ठिकठाये[2]॥
पहुंचे आई पवांर प्रवीनै। छत्रसाल सौ मुजरा कीनै॥
जथा उचित हित सौं बैठारे। बूझी कुसल कहां पगु धारे॥
तब पांचन यह अरज सुनाई। फिकिर सुजानसिंह उर आई॥

१—गिली = निगली हुई। २—ठिकठाये = ठहरे हुए थे।

दोहा।

पातसाह लागे करन, हिन्दुधर्म कौ नासु।
सुधि करि चंपतिराइ की, लई बुँदेला सांसु ॥ १४ ॥

छन्द।

त्योंही सुने अरंभ तिहारे। कह्यो भूप भन वीर छतारे ॥
ऐसी कछुक उमगि उर आई। निधि-अंजन[1] खोजत निधि पाई ॥
हमहिं तिहारे पास पठायो। कह्यो भूप यह वचन सुहायो ॥
जो कहुं वीर दृगनि भर देखों। अपने भये काज सब लेखों ॥
ताते भूपहिं देउ दिखाई। फेरि करौ अपनी मनभाई ॥
मिटिहै फिकिर तिहारे मेटे। ऐसे सुजस और पर भेटे ॥
यह सुनि छत्रसाल तँह आये। नृपति सुजानसिंह जहँ छाये ॥
सुनत नृपति निज निकट बुलाये। मानो मनवंछित फल पाये ॥

दोहा।

मनवंछित फल से मिले, जब देखे छत्रसाल ॥
मिले उमगि उठि दुरहिं[2] ते, सिंह सुजान नृपाल ॥ १५ ॥

छन्द।

हित सों सिंह सुजान निहारे। बूझी कुसल निकट बैठारे ॥
कह्यो वंस के छत्र छतारे। तुम तें ह्वैहैं काज हमारे ॥
जब तें चंपति करयो पयानो। तब तें परयो हीन[3] हिंदवानो[4] ॥
लग्यो होन तुरकन को जोरा। को राखे हिंदुन को तोरा[5] ॥
तुम चंपति के वंस उज्यारे। छत्र धरमधुर थंभनहारे ॥
तुम लीनी हिम्मत हिय ऐसी। आनि फेरिहो चंपति कैसी ॥

१—निधि-अंजन-ऐसा विश्वास है कि एक प्रकार का सिद्ध अंजन होता है जिसके लगाने से भूमि में गड़ी हुई संपत्ति प्रत्यक्ष देख पड़ने लगती है।

२—दुरहिं = द्वार पर से।   ३—हीन = निर्बल।

४—हिंदवानो = हिन्दू जाति।   ५—तुरा—शुद्ध रूप तुर्रा है = कलगी।

अब जौ तुम कढि करौ कृपानो। सौ फिरि चढ़ै हिन्दु मुख पानो ॥
नृपति बचन चितु दै सुनि लीने। हँसि बोले छत्रसाल प्रवीने ॥

दोहा।

महाराज हम हुकुम तें, बांधत हैं किरवाल।
तौलौ फिकिर न चाहिहै, जौलौ घट मैं प्रान ॥ १६ ॥

छन्द।

जौलौ घट में प्रान हमारे। तौलौ कैसी फिकिर तिहारे ॥
पै सब किसा आपु की जानो। कहै कौन सो कथा पुरानी ॥
जौ फिरि साह प्रपंच उठावे। तौ लरने घरही में आवे ॥
तातें सावधान हिय ह्वैकै। धरौ भार सो उठिहै लैकै ॥
यह सुनि नृप नीचे दृग आने। फेर बचन बोले ठहराने ॥
चंपतिराइ तेग कर लीनो। ओप[1] बुंदेल बंस कौ दीनो ॥
भुजन पातसाही झकझोरी। गई भूमि जुरि जुद्ध बहोरी ॥
उदयाजीत बंस के आये। हम पै सदा छोह करि आये ॥

दोहा।

पंचम उदयाजीत के, कुल कौ यहै सुभाउ।
दलै दौरि दिल्लीस दल, जिमि दुरदन[2] बनराउ ॥ १७ ॥

छन्द।

तिहि कुल छत्रसाल तुम आये। दई दिखाई नैन सिराये[3] ॥
यौं दृग प्रेम हिये मैं लैकै। बैठे बीच बिसुंभर दैकै ॥
राखी तेग बिसुंभर आगे। कीन्हीं सौंह सांच उर पागे ॥
सब जिनके दिल मैं छल आवै। लोक दुनहुं के तिन पावै ॥

१—ओप = कान्ति, चमक। २—दुरदन = हाथियों, ह०।
३—सिराये = शीतल हुए।

अब जो पाप हिये में लैहै। तिनको दंड विसुंभर दैहै॥
यह कहि प्रीति हिये उमगाई। दिये पान किरवान बधाई॥
दोऊ हाथ माथ पर राखे। पूरन करौ काज अभिलाखे॥
हिन्दुधरम जग जाइ चलावौ। दौरि दिलीदल हलनि हलावौ॥

दोहा।

अभै देंहु निज वंस कौ, फते लेहु फरमाह।
छत्रसाल तुम पै सदा, करै विसुंभर छांह॥ १८॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते नृपसुजानसिंह
मिलापो नामैकादशोऽध्यायः॥ ११॥

बारहवाँ अध्याय।

छन्द।

यों असीस नरपति जब दीन्हो। माथे मानि छतारे लीन्हो॥
यहांतें चले विदा ह्वै ज्योंही। उड्यो फरक दच्छिन दृग त्योंही॥
चलि नौरंगवादहि[1] आये। पैठन सहर सगुन सुभ पाये॥
देखे तहां बीर बलदाऊ। नजर मिलत उठि मिले अगाऊ[2]॥
भेटे प्रीति परस्पर लीन्हो। भोजन थार एकहो कीन्हो॥
मिलि बैठे तँह दोऊ भाई। राम कृष्ण कैसी छवि छाई॥
छत्रसाल पंचम यों बोले। मंत्र विचार हिये के खोले॥
दाऊ सब मनसिब हम छांड्यो। विग्रह हिये साह सौं मांड्यो॥

दोहा।

तातें अब तुमहू चलो, ह्वै है भलो इलाज।
एक मंत्र ह्वैके हितू, साधत हैं सब काज॥ १॥

छन्द।

राम कृष्ण भुवभार उतारे। राम लषन मिलि रावन मारे॥
चंपतिराइ सुजान सयाने। एक मंत्र ह्वै अरि दल भाने॥
त्यों हम तुम मिलि दोऊ भाई। तुरकन पै कीजै घनघाई[3]॥
जुद्ध जीति बसुधा बस कीजै। दै दान जगत जस लीजै॥
यह सुनि बलिदिवान[4] अनुरागे। लच्छन कहन बखिन के लागे॥
विपत मांह हिम्मत ठिकठानें। बढ़ती भये छमा उर आनें॥
बचन सुदेस[5] समनि मद्दि आये। सुलस[6] जोरबे मैं रुचि [illegible]॥
जुद्धन जुरै अकेले सौ से। सहज सुभाइ बखिन के [illegible]॥

१—नौरंगाबाद = धांतरी के निकट नगर विशेष है। २—अगाऊ = आगे से।

३—घनघाई = प्रहार। घन भारी हथौड़े को कहते हैं। अभिप्राय यह है कि दुश्मन पर ऐसे ऐसे कठिन प्रहार करें जो घन की चोट के समान हों।

४—बलिदिवान = बलदाऊ। ५—सुदेस = समुचित।

६—सुलस = एक प्रकार का लोहा। यहां शस्त्र से अभिप्राय है।

दोहा ।

ते सुभाव तुम में सवै, छत्रसाल कुलथंभ ।
करन विचारै और को, एते बड़े अरंभ[1] ॥ २ ॥

छन्द ।

एते बड़े अरंभ तिहारे । तुम ते हम ह्वैहै क्यों न्यारे ॥
पै विचार मन में यह आनौ । फेर अरंभ करो जे जानौ ॥
मानस आप काज को दौरै । करता जो रचि राखी औरै ॥
तौ सव काज वृथा ह्वै जाहीं । होती काके चित की चाहीं ॥
जानत कौन देहधर ऐसी । प्रापति हानि कौन को कैसी ॥
यह करता अपने कर राखी । सो जग में सवही को साखी ॥
ताकी कछू इसारत पैये । तौ दृढ़ मंत्र यहै ठहरैयें ॥
वलि की कही छता सुनि लीनो । वोले वुद्धि वढ़ाइ प्रवीनो ॥

दोहा ।

चाहत जो करतार की, कछू इसारत साखि ।
तौ द्वै चिठी उठाइये, प्रभु के आगे राखि ॥ ३ ॥

छन्द ।

कै समसेर साह सों वांधे । कै छाड़ो मनसिव हम कांधे ॥
जौन उठाइ चिठी प्रभु देहैं । माथे मानि वहै हम लैहैं ॥
यह विचार कीनो अनुरागे । चिठी लिखाई धरि प्रभु आगे ॥
तव अजान[2] सो एक मँगाई । तेग वांधिवे की उठि आई ॥
तव प्रतीत वलदाऊ कीनी । माथे मानि चिठी वह लीनी ॥
कह्यो धन्य छितिछत्र छतारे । तुम कुलचंद हिंदुगन तारे ॥
अव हमसों रन रुपै[3] न कोऊ । चलिये एक चित्त मिलि दोऊ ॥
जो दृढ़ मंत्र हिये ठहराये । उतरि नर्मदा देसहिं आये ॥

१—अरंभ = आरंभ । २—अजान = अवोध वालक । ३—रुपै = ठहरेगा ।

दोहा।

संवन सत्रह सै लिखे, आठ आगरे बीस।
लगत बरष बाईसई, उमड़ चल्यौ अवनीस॥ ४॥

छन्द।

गहनौ[1] कठिन ठौर लै राख्यौ। दिल्लीदल जीतन अभिलाख्यौ॥
कीनै सुभट खरच दै माजे। पांच तुरंग संग कौ साजे॥
प्रथम भले भाई उर याने। लच्छो मृगछौना मरदानै॥
घोड़ भभूला दामिन घोरी। जुरै न जोर पौन गति थोरी॥
ये सब सुभट संग के जानौ। कुंवर नरायनदास बखानो॥
गोविंदराइ पँत पुरचारे। सुंदरमनि पमार अनियारे॥
दलसिंगार राममनि दौवा। मेघराज परिहार अगौवा॥
धुरमंगद बगसी[2] मरदानौ। खांगरु[3] खरी किसोरी जानौ॥

दोहा।

प्रबल मिश्रदलसाह ज्यौं, त्यौं हरकृष्ण प्रसंस।
लच्छे राउत राममनि, मानसाह हरिवंस॥ ५॥

छन्द।

मेघौ अरु परदीन दयाले। फानु भाट बगसीसनि[4] पाले॥
फौजे मियां समर अति सूरौ। लोहलराऊ सिरोमनि पूरौ॥
पंवल डोमर खरगे बारी। मोदी पते सबै हितकारी॥
पांच सवार पचीस पियादे। त्रिरचे बिकट सहज मैं सादे॥
चले अिसहटौ तै सजि माऊ। बगुदा गये जहां बलदाऊ॥
बलदाऊ दम करी तैयारी। तुमहुं चलौ करौ असवारी॥
त्यौं बल कहो बिजैरी जैयै। रतनसाह को संग चलैयै॥
छत्रसाल त्यौं गये बिजैरी[5]। भेटे रतनसाह भर कौरी[6]॥

१—गहनौ—भ्राता के आभूषण। २—बगसी = शुद्ध रूप बख्शी है।
३—खंगरु = धंधार (जाति विशेष)। ४—बगसीसनि पाले = बख्शिशों का पला हुआ, दान से पला हुआ। ५—बिजैरी = स्थान विशेष, बिजावर के निकट है।
६—कौरी = गोद, अंक।

दोहा ।

छत्रसाल बोले सुनौ, रतनसाह सिरमौर ।
भुमियाचट उर में धरौ, करौ देस कौ दौर ॥ ६ ॥

छंद ।

दौर देस दिल्ली के जारौ । तमकि तेग तुरकन पर झारौ ॥
हम सेवा करिहैं अनुरागे । लड़िहैं उमगि तिहारे आगे ॥
जुद्ध वृत्ति छत्रिन की गाई । तातें यह मेरे मन आई ॥
अपनौ वर्नधर्म प्रतिपालौ । साहन के दल दौरि उसालौ[1] ॥
जे भुमिया[2] हम में मिलि रैहैं । तेई संग फौज के ह्वैहैं ॥
जे न लागिहैं संग हमारे । दोष न लागै तिनके मारे ॥
जे उमराव चौथ भरि दैहैं । तेई अमल[3] देस को पैहैं ॥
जिन में पेड़ जुद्ध की पावौ । तिनपै उमगि अस्त्र अजमावौ ॥

दोहा ।

तेग छाइहै देस में, देस आइहै हाथ ।
शत्रु भागिहैं मान भय, लोग लागिहैं साथ ॥ ७ ॥

छन्द ।

रतन कही यह क्यों वनि आवे । विना भीत[4] को चित्र वनावे ॥
धन वल उदभट जो धन जाके । विग्रह वनै भरोसौ ताके ॥
को रच्छक कौने मत दीनौ । को वलवंत सहायक लीनौ ॥
छत्ता कह्यो रच्छक सो जानौ । सोइ वलवंत सहायक मानौ ॥
जो प्रभु तिहु लोक कौ स्वामी । घट घट व्यापै अंतरजामी ॥
सो मति देत नरनि कों तैसी । होनहार आगै कछु जैसी ॥
जिनकौ जौन वृत्ति प्रभु दीनी । ताही मांह सिद्धि तिन लीनी ॥
आवत हमैं भरोसौ ताकौ । करुना सिंधु विरद[5] है जाकौ ॥

१—उसालौ = छिन्न भिन्न कर दो । २—भुमिया = भूम्याधिकारी, जिमीदार ।
३—अमल = कर । ४—भीत = दीवाल, स्थल है ।
५—विरद = कीर्ति, यहां यथार्थ गुणमय नाम से अभिप्राय है ।

दोहा ।

करुनानिधि प्रभु एक है, जाते यह संसार ।
ताको सेवन सार है, जग है और असार ॥ ८ ॥

छन्द ।

सो प्रभु है ऐसो हितकारी । संगहि रहै करै असवारी ॥
सेवक जहां कहूं को धावै । तहां संग ही लाग्यो आवै ॥
जहां सेवकहिं निद्रा लागी । साहिब तहां संग ही जागी ॥
ग्राह गह्यो हाथी जब हारयो । कमल चढ़ावत ही निरधारयो ॥
गाढ़ परे प्रहलाद बचाये । खंभ फारि नरहरि कढ़ि आये ॥
द्रुपदसुता की लज्जा राखी । वेद पुरान सिमृति[1] सब साखी ॥
बड़े सांकरे[2] होत सहाई । अति अद्भुत याकी गति गाई ॥
ऐसो भरे भरी ढरकावै । जो मन करै सो फेर भरावै ॥

दोहा ।

जब जैसो चाहै करयो, तब तैसी मति देइ ।
जो जैसो उद्यम करै, सो तैसो फल लेइ ॥ ९ ॥

छन्द ।

चारि बरन जे जग में आये । सबको प्रभु उद्यम ठहराये ॥
हाथ पाइ उद्यम को दीनो । तातें उद्यम करत प्रवीनो ॥
उद्यम तें संपति घर आवै । उद्यम करै सपूत कहावै ॥
उद्यम करै संग सब लागै । उद्यम तै जग में जसु जागै ।
समुद्र उतरि उद्यम तै जैये । उद्यम तै परमेस्वर पैये ॥
जब यह सृष्टि प्रथम उपजाई । तेव वृत्ति क्षत्रिन तब पाई ॥

१—सिमृति = शुद्ध रूप स्मृति है ।   २—सांकरे = विपत्ति में ।

जितनी जाहि बीरता दीनी। तितनो पुहुमि जीति तिहि लीनी ॥
तातै दौर देस कौ कीजे। पुहुमी जीति तेगवल लीजे ॥

दोहा।

जदपि मंत्र छत्ता कह्यो, वेद पुरान प्रमान।
तदपि रतन मान्यौ नहीं, होनहार बलवान ॥ १० ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते रतनसाह-छत्रसाल संवादो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

तेरहवाँ अध्याय।



छन्द।

प्रथम धीरता उमगि बढ़ाई। धर्मधर्म रुचि चित्त चढ़ाई॥
राजनीति की रीति बताई। ईश्वर की ईश्वरता गाई॥
फिरि उद्यम की करी बड़ाई। रतनसाह मन कछु न,आई॥
तब मन माह भये पछिताये। रोज अठारह वृथा गमाये॥
त्यौं सोवत सपनौ हरि दीनौ। समाधान नीकी विधि कीनौ॥
अंतरिच्छ बोले बरबानी। छत्रसाल काढ़े कसौ कृपानी॥
त्यौं बसुधा बनिता ह्वै आई। हाथ जोड़ यह अरज जनाई॥
हौं रहिहौं बस भई तिहारे। मन क्रम बचन कहत निरधारे[1]॥

दोहा।

यह सुनिकै ताकी तहाँ, करी निमा छत्रसाल।
सुधन ठौर अनिमिष मनौ, भई पूर्व दिसि लाल[2]॥ १॥

छन्द।

भई पूर्व दिसि बदन ललाई। विहसत कमलमुकुल छवि छाई॥
तिमिर समूह दिसनि तै भागे। बिछुरे मिले कोक अनुरागे॥
उठे जागि छत्रसाल प्रवीनै। तुरत जीन घोरन पै कीनै॥
मुरली मधुरध्वनि तँह बाजी। चली सिपाह संग उठि ताजी॥
हाँते चलै कूच करि ज्यौंही। मिले आइ बलदाऊ त्यौंही॥
पै डेरा मैं डेरा पारे। डोर बजाइ डुंद के द्वारे॥
छत्रसाल की खबर सुहाई। वाकीयान . बुँदेले पाई॥
आगी हैन दूर तैं आये। महिमानी करि आनँद छाये॥

१—निरधारे = निश्चय करके। २—भई पूर्व दिसि लाल = प्रभात हो गया।

दोहा।

वाकीखाँ सो मिलि छता, दई दुंद[1] की नीउ।
लंक लैन को राम ज्यों, किये मित्र सुग्रीउ ॥ २ ॥

छन्द।

तहाँ आइ त्यों मिल्यै। सवेरो। कुँवरराज रनधीर धँधेरो ॥
तव सवहिनि मिलि मंत्र विचारयौ। सव को छत्र छता निरधारयौ ॥
तँह सम अंस हुते द्वै साऊ[2]। छत्रसाल पंचम वलदाऊ ॥
वलि दिवान त्यों परम प्रवीने। सरस विचार चित्त में लीने ॥
सो के अंस वरावर कीनै। तिन में पाँच जिठाई दीने ॥
सो में पैतालीसै आये। छत्रसाल ने पचपन पाये ॥
या विधि अंस[3] दुहुनि ठहराये। उमगे प्रेम परस्पर छाये ॥
छत्रसाल त्यों परम प्रवीनै। सील सुभाइ सवै वस कीनै ॥

दोहा।

एक मंत्र ह्वैके तहाँ, वढ़े परस्पर प्यार।
काँधे वर विक्रम सवनि, वाँधे उमगि हथ्यार ॥ ३ ॥

छन्द।

त्यों यह खवर सुनत चितचाही। पहुँचे धाइ कदीम[4] सिपाही ॥
तीस अस्वार सैन तँह साजी। उमड़ी तुपक तीन सै ताजी ॥
प्रथम दैार कै तँह इलाज के। जँह सरीक हे कुँवरराज के ॥
गह्यौ[5] धँधेरन दुरग आसरो। गाँउ गढ़ी को दृढ़ दुगासरो[6] ॥
इतहि वीर छत्रसाल उमंडे। उतहि धँधेरन रनरस मंडे ॥
दुहुँ दिसि तुपक तराभर[7] माची। उदभट भोर वीररस राची ॥
पसर करी छत्रसाल वुँदेला। टूट्यो गाँउ प्रथम वगमेला[8] ॥
मारि गाँउ मनभायो कीनो। पहिलो वैर वाप को लीनो ॥

१—दुंद = युद्ध। २—साऊ—शाह = शिरोमणि। ३—अंस = भाग। ४—कदीम = प्राचीन। ५—गह्यो धंधेरन दुरग आसरो = धंधेरों ने कोट का आसरा लिया अर्थात् कोट में जा घुसे। ६—दुगासरो = छिपाव। यह शब्द दुगना से जिसके अर्थ बुंदेलखंडी में छिपना है बना है। ७—तराभर = तड़ातड़। ८—वगमेला = आक्रमण।

दोहा।

खेत छाँड़ि बैरी भगे, गढ़ी गह्यो सफराइ।
धरमद्वार[1] माँग्यो तबै, पाये प्रान बराइ ॥ ४ ॥

छन्द।

तब हितु आइ धँधेरन कीनौ। तुरत ब्याह कौ बीरा दीनौ ॥
बीरा लै रतनागर मारयौ। धाकनि काँपि उठी दिसि चारयौ ॥
दौरि घेड़[2] सिरौंज कौ कीन्हो। कुंदा के गिरि डेरा दीन्हो ॥
जहाँ केसरीसिंह धँधेरौ। मिल्यौ आइ करि नेह घनेरौ ॥
त्यौंही तेज छता के फैले। परे सिरौंज सहर में पेलै ॥
तँह उमराउ हते अगआनै। महमद हासिम नाम बखानै ॥
आनंदराइ चौधरी बंका। दीनौ दुहुन जुद्ध कौ डंका ॥
विकट पठान जुद्ध कौ साजै। धौंसा निकट जुझाऊ बाजै ॥

दोहा।

धौंसा धुनि सुनि कै छता, दई फौज फरमाइ[3]।
घाट रोपि बाँध्यौ उमड़ि, घाट[4] तोपचिन धाइ ॥ ५ ॥

छन्द।

प्रबल पठान जुद्धरस छाये। करि विचार हला कौं धाये ॥
सनमुख बजी बँदूखैं ज्यौंही। यै बिचारि चित आये त्यौंही ॥
जदपि पठान सुद्ध पिल जैहैं। गोलिन वृथा बजाये[5] हैहैं ॥
तातें दई फौज मन बाढ़ी। सनमुख लाग लगाये ठाढ़ी ॥
हम चौघट ह्वै हला कीजै। तेगनि मार - फते कर लीजै ॥
चौघट[6] धसे घाट रन रुद्धो। छत्रसाल लै तुपक[7] समुद्धो ॥
तुपकन मारि करे मनमाये। खेत पठान पचासक आये ॥
त्यौं बैरिन दिल दहसत आई। बिहरी फौज सिरौंजहि आई ॥

१—धरमद्वार माँगना = धर्म की दुहाई देकर गढ़ को खाली करके जीवित निकल आने के लिये शत्रु से मार्ग माँगने की प्रार्थना करना।

२—घेड़ करना = गाय बैल आदि पशु छीन लेना। ३—फरमाइ दई = आज्ञा दी। ४—घाट रोपना = रास्ता रोकना। ५—बजाये होना = मारा जाना। ६—चौघट = कुराह। ७—तुपक = बँदूक।

दोहा ।

विडरी फौज सिरौंज की, दिल में दहसत खाइ ।
चंड[1] तेज छत्रसाल को, रह्यो दिसनि में छाइ ॥ ६ ॥

छन्द ।

छत्रसाल पंचम रन जीत्यौ । तुरकनि पर परलै[2] सो बीत्यो ॥
मारि फौज औड़ेरहि[3] आये । त्यौरी त्यों रन तें उठि धाये ॥
लूटि गांव कीने मनभाये । पकर पटैल[4] जैत कौ ल्याये ॥
लई लूट घेरी अति चांडी । उखरी गढ़ी न सासा छांडी ॥
छत्रसाल करुनारस मंडे । जैत पटैल डांड बिन छंडे ॥
ह्यांते फिर औड़ेरहि आये । चंड प्रताप चहूं दिसि छाये ॥
महमद हाशिम संका मानो । चपे[5] चौधरी उतर्यो पानी ॥
रहे ससाइ[6] सांस लै दोऊ । बाहर सहर न आवे कोऊ ॥

दोहा ।

त्यों धामौनी में सुनै, खालिक जाको नाउ ।
वैठ्यो जोर मवास कै, थानै दै हर गांउ ॥ ७ ॥

छन्द ।

सो जीतन छत्रसाल विचार्यो । गौनौ गांउ दौर करि मार्यो ॥
घेरि पिपरहट में ते कूटे । भगे थनैत तुरंगम लूटे ॥
धौरासागर डेरा पारे । गंजि गरब खालिक के डारे ॥
तहां गौंड़ जोरे बनवासी । मिल्यौ दामजीराइ मवासी ॥
ह्यांते हनूटूक कों आये । हनूमान के दरसन पाये ॥
धामौनी सों लई लराई । भेड़ा मारि पथरिया लाई ॥
लखरौनी बड़िहारन मारी । रहे रामठां जगथरि जारी ॥
गिरिवर मार खेभरा मार्यो । सोखि सुनौदा पल में गार्यो ॥

१—चंड = प्रचंड । २—परलै = प्रलय । ३—औड़ेरी = गांव, राठ के निकट । ४—पटैल = जमीदार । ५—चपे = झंपे, लजाने ।
६—ससाइ रहे = भयभीत हो गये ।

दोहा ।

रहे सिदगवा गांउ के, विकट पहारनि जाइ ।
धामौनी तें जोर दल, खालिक पहुंच्यौ धाइ ॥ ८ ॥

छन्द ।

धामौनी तै खालिक धाये । डंका आन नजीक बजाये ॥
उमड़ि चल्यौ छत्रसाल बुँदेला । तुरकन के घोड़े धकमेला ॥
तब दिल में दहसत अति जागी । मुरकि फौज खालिक की भागी ॥
चले फौज चंद्रापुर जारयो । दौर मुलक मैहर[1] कौ मारयौ ॥
हाँति फेरि रानगिरि[2] लाई । खालिक चमू तहाँ चलि आई ॥
उमडि रानगिर में रन कीन्हौ । खालिक चालि मानि भै दीन्हौ ॥

दोहा ।

लये नगारे ऊँट हय, लूट निसान बजार ।
खालिक बचे बराइ जय, मानै तीस हजार ॥ ९ ॥

छन्द ।

तीस सहस खालिक जब डाडे । लूटि पाटि अपने घर छाँडे ॥
छूटे डाँड मानके ज्यौंही । उठ्यौ दस्त[3] खालिक कौ त्यौंही ॥
करै देस में कहौ न कोई । धासिल[4] डाँड कहाँ ते होई ॥
जब छत्रसाल वीर यह जानी । तब बरात बासा पर मानी ॥
दागी केसौराइ तहाँकौ । जाहिर जोर मवासी बाँकौ ॥
तहाँ बरात लिवाइ पठाई । देखन अति धाके रिस आई ॥
बाँधि बरात डारि उहि दीनी । तुरतहि तमकि तेग कर लीनी ॥
फिरी बरात बुँदेला जानी । तब बासा पर फौज पलानी ॥

दोहा ।

ठिल्यौ बुंदेला धंध[5] दै, बासा घेरयौ जाइ ।
त्यौंही सनमुख रन भिर्यौ, दागी बडो बराइ ॥ १० ॥

१—मैहर = नागौद के निकट एक राज्य है । २—रानगिर = सागर के मार्ग में देवहर नदी के तट पर एक स्थान है जहाँ हरसिद्धिदेवीजी का मंदिर है और जो तीर्थ स्थान समझा जाता है । ३—दस्त = अधिकार ।
४—धासिल = प्राप्त । ५—धंध देकर = घोर नाद करता हुआ ।

छन्द ।

खुरी कराह तुरी चढ़ि धायो । फेरत सहिथी बलगत आयो ॥
छत्रसाल छत कौन कहावै । सो मेरे सनमुख कढ़ि आवै ॥
देखौं समर छत्र पन ताको । कढ्यो नाम जुद्धन में जाको ॥
उमड़ि वचन त्यों बलमि सुनायो । त्यों छत्रसाल तुरग झमकायो[1] ॥
झमकि तुरंग भयौ कढ़ि सोहैं । बोल्यो वचन बदन विहसोहैं ॥
पहिल घाउ घालौ तुम आछे । हिये [2]हौस रहि जैहै पाछे ॥
जो रन बहस परस्पर बाढ़ो । देखत फौज दुहू दिस ठाढ़ो ॥
त्यौ उहि बहक[3] सैहथी बाही[4] । बच्छ[5] आड़ि छत्रसाल सराही ॥

दोहा ।

बच्छ आड़ि बरछी हन्यौ, छत्रसाल रनधीर ।
त्यौंही सांगि उछाल कर, हुमकि[6] हन्यो वह बीर ॥ ११ ॥

छन्द ।

अरि के सांगि दुहूं दिस साली[7] । तऊ न वाकी हिम्मत हाली ॥
फेरत सांग सामुहे आवै । पै कृपानु को घाउ[8] न पावै ॥
अरि की चोट मान त्यौं कीन्हौं । चेहू तेग मान मुंह लीन्हौं ॥
त्यौं सर दीपसाह को छूट्यो । तऊ न बीर समर तें छूट्यो ॥
तब छत्रसाल करी मनभाई । हुमकि सांगि दुहु हस्त हलाई ॥
ठेलाठेल हलाइ गिरायो । बीर बरआह खेत वह आयो ॥
जो रन में कपि रुद्र रिझायो । दागी कों सिर काटि चढ़ायो ॥
लूटि लाट वासा सब लीन्हो । बड़ी पटारी को मन कीन्हो ॥

१—झमकायो = चमकाया, तीव्र किया । २—हौस = इच्छा, उमंग ।
३—बहक = उछल कर । ४—बाही = साधी । ५—बच्छ = ढाल ।
६—हुमकि = आवेश से । ७—साली = छेद दी ।
८—घाव—दांव ।

दोहा।

घड़ी पटारी मारिकै, फतै लई तनकाल।
शकीयां के देस कौ, पहुंचे श्री छत्रसाल ॥१२॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते केसोराइ-दांगी-वध-वर्णनं
नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

चौदहवां अध्याय।

छन्द।

मधु दिन तहाँ मुकाम वजायो। सुरह्यो घाउ चाउ चित आयो॥
छरी भीर छत्रसाल बुँदेला। सुभट छ सातक आपु अकेला॥
सहज सिकार खेल रस पागे। वनवराह मृग मारन लागे॥
सैद बहादुर हिम्मत कीनी। खवर जसूसनि सैां सब लीनी॥
दलसजि उचकि आनि हंकारयो। खलभल सहज खेल में डारयो॥
ज्यों हरिनन की होत हँकाई। उचका उठै बाघ विरझाई॥
त्योंही सैदबहादुर धायो। डंका निकट नगीच वजायो॥
सुनि डंका छत्रसाल रिसाने। छत्रधरम कौ बांधे बाने॥

दोहा।

फौज बहादुर सैद की, परी फंद में आइ।
वाके॥ थल वीरन दई, गोलनि गोल गिराइ॥१॥

छन्द।

गिरी गरज गाजै सो गोली। डगडग चमू अरिन की डोली॥
मुगल पठान खेत में जूझे। वैरिन व्यौंत चाल के सूझे॥
चमकि चाल तुरकन त्यों दीनो। जीतपत्र छत्ता तंह लीनो॥
हांतें उमड़ि वराचा मारयो। धूमघाट पर डेरा पारयो॥
गोपाचल पे खलभल माच्यो। सैदमनौवर त्यों रिस राच्यो॥
जोरी फौज निसान वजाये। धूमघाट पर उमड़त आये॥
त्यौं छत्रसाल वीररस वाढ़े। सनमुख गये जूझ कौ ठाढ़े॥
माची मार रुद्र अनुराग्यो। वाजन सार सार सो लाग्यो॥

दोहा ।

सेख्द उबेलनि ठेल दल, पिले बुँदेला बीर ।
महा भयानक भांति लख , पगनि डगमगे मीर ॥२॥

छन्द ।

डगे मीर तजि खेत पराने । पिले बुँदेला रन सरसाने ॥
मुगल पठान हने जे जूटे । सेद सहर भीतर लै लूटे ॥
सहर लूट कीनो मन भाई । गढ के गेरत रहटो लाई ॥
लूटि ग्वालियर मुल्क उजारयो । हाते दौरि कजियां मारयो ॥
गिरिवर मारि करे अरि हीने । कटिया केनव डेरा कीने ॥
त्यों महमद हाशिम चलि आये । सग बनंद चौधरी धाये ॥
पिले उमंडि तीन सजि गोलै । तीन्या मार खग्ग झक झोलै ॥
तै आयत छत्रसाल निहारे । बढ़लि उमडि तिहूं दिस मारे ॥

दोहा ।

तीन्यौ गोल पिदार पैं, फते लई छत्रसाल ।
सुधि करि त्रिपुर सँहार की, नाचे भूत बिताल ॥३॥

छन्द ।

हाते हनूटूक की आये । भयौ व्याह त्यौ बजे बधाये ॥
अति आतंक चहू दिसि फैले । भय वदन वैरिन के मैले ॥
हीन फतूह लगी मनमानो । चली चौथ सुकि जग में जानो ॥
सुनत चाह कुंवरन मन कीनी । सबन संग छत्रसालहि दीनी ॥
रतनसाह त्यौंही चलि आये । अमर दिवान खबर सुनि धाये ॥
सबलसाह हितु आये कीनें । बेसौराइ मिले मनु लीनें ॥
धारू चर कीरति मन भाये । दीप दीवान दीप छवि छाये ॥
मिले रामजू समर सूरे । पृथीराज बल विक्रम पूरे ॥

दोहा।

माधोराइ वसंत अरु, उदैभान त्यों वर्न।
अमरसिंह 'परताप तँह, मिले चंद अरु कर्न ॥४॥

छन्द।

अब सब सुनैा साहिगढ़[1] वारे। जिन रन मध्य अस्त्र झुक झारे॥
आइ इन्द्रमनि मिले अगाऊ। उग्रसैन सम काहि गनाऊ॥
जगत सिंह वानैत वुँदेला। रन मेँ करत प्रथम वगमेला॥
सकतसिंह त्यौं गुनति गरूरे। दान कृपान वुद्धि वल पूरे॥
जामसाह अंगद मरदानें। मनसिव छांडि मिले जग जानें॥
आये परवतसिंह प्रवीनें। रूपसाह त्यौं रन रस भीनें॥
देव दिवान प्रेम उर वाढ़े। भारत साह समर अति गाढ़े॥
चंद्रहंस अरिकुल कैा घाती। मिल्यैा सुजानराइ कैा नाती॥

दोहा।

दूजे भारतसाह त्यौं, राइ अजीत वसंत।
वलि दिवान के नंद द्वै, चित्रांगद जसवंत ॥५॥

छन्द।

रामसिंह जैसिंह वखाने। जादैाराइ करनजू जाने॥
गाजीसिंह कटेरा[2] वारे। दै करनाल दुवन जिन मारे॥
जगतसिंह मुनि कविन प्रमाने। त्यौं गुपालमनि परम सयाने॥
ग्रैार अनेक कहां लगि गाऊँ। गनती सत्तर कुंवर गनाऊँ॥
केते सगे सोदरे सारे। ग्रैार पमार अँधेरे भारे॥

१—साहिगढ़ = महाराज हृदयशाह के राज्याधिकारी पन्ना नरेशों की एक शाखा का राज्य साहिगढ़ में था परन्तु अब वह राज नहीं रहा।

२—कटेरा = यह एक राज्य झांसी प्रान्त में है। यहां का राज ओड़छाधीशों के वंश की एक शाखा है। यहां के अधीश्वर बड़े वीर

नाते ममा फुफू के जेते। मिले आइ छत्रसालहिं तेते॥
उच्च निसान दलनि फहराने। धौंसा धुने घन से घहराने॥
उमडि चली गोलन पर गोलैं। दल के भार फनी[1] फन डोलैं।

दोहा।

लगन लगे कुल कटक में, तम्बू तुंग कनात।
भंडा गड़े बजार में, अति ऊँचे फहरात॥१॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते सैदबहादुर जुद्ध या कुंवरन कौ आगमन वर्णनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥

पन्द्रहवां अध्याय।

लागी चमू चढ़न चतुरंगै। ज्यों जलनिधि की तरल तरंगै॥
ऐड़दार[1] जितही सुनि पावैं। फौजैं उमड़ि तहां को धावैं॥
वासा अरु वृंदावन वारयो। प्रलै पथरिया ऊपर पारयो॥
दीनी लाइ निदर निदराई। फौज बहुत राई पर आई॥
पहिली पसर रनेही टूट्यो। कोटा कूट दमोया लूट्यो॥
धामौनो मैं धूम मचाई। जब न और की बचै बचाई॥
तब खालिक ऐसी मति कीनी। वाकन खबर साह को दीनी॥
लिखो बहादुरखां को ऐसैं। बादर फट्यौ ढाकियै कैसैं॥

दोहा।

चहूं चक्क गमड़े फिरत, वड़े बुँदेला वीर।
अमल गये उठि साह के, थके जूझ करि मीर॥१॥

छन्द।

कोका खबर हजूर जनाई। वहै लिखी वाकन में आई॥
सुनत साह मन में अनखानै। भेजे रनदूलह मरदानै॥
सँग बाइस उमराइ पठाये। आठक लिखे मद्दती ठाये॥
विदा भये मुजरा करि ज्योंही। बजे निसान कूच करि त्योंही॥
दतिया अरु ओड़छो बगौनी। सजी सिरोंज कोंच धामौनी॥
उमड़ि इंदुरखी चढ़ी चँदेरी। पिलि पाडौर जुद्ध की टेरी॥
ये मुद्दती उमड़ि चढ़ि आये। मनसिबदार तीस टिक टाये॥
करयो गढ़ा[2] कोटा पर पेला[3]। जहां सुनै छत्रसाल बुँदेला॥

१—ऐंड़दार = विरोधी, विमुख   २—गढ़ा = यह दुर्गम दुर्गसागर के निकट है।   ३—पेला = आक्रमण।

दोहा।

उमड़्यो रनदूलह सजे, तीस हजार तुरंग।
बजे नगारे जूझ के, गाजे मत्त मतंग ॥२॥

छन्द।

दिन के पहर तीन तब बाजे। लागी लाग मीर गल गाजे॥
त्यौं छत्रसाल चढ़ाई भौंहें। बड़े बंब है भये भिरौंहें॥
उमड़ि रारि तुरकन त्यौं मांडी। छूटे तीर उड़ति ज्यौं टांडी[1]॥
त्यौं रन उमड़ि बुंदेला हांके। रंजक[2] धुंधन धामनिधि[3] ढांके॥
बाजन लगी बंदूखें सोई। गिरे तुरक जे लगे[4] बगोई॥
गिरत हरौल गोल के साऊ। कढ़ि कतार तें ढिले अगाऊ॥
लगे बान गोलिन की चोटें। नट ज्यौं उछल लाग लै लोटें॥
समर विलोकि सुरन भय कीनो। सूरज सरक अस्तगिरि लीनो॥

दोहा।

जोत जामगिन[5] में जगी, लागे नखत दिपान।
रन असमान समान भौ, रन समान असमान॥ ३॥

छन्द।

पहर रात भर भई लराई। गोलिन सर सैयिन भर लाई॥
धाइ धाइ सब स्यान अघाने। लोह मानि तजि कोह पराने॥

१—टांडी = टिड्डी, टीड़ी। २—रंजक—वह बारूद जो तोप या बंदूक के भीतर भरी हुई बारूद में आग पहुँचाने को बाहरी छिद्र पर रक्खी जाती है रंजक कहाती है। ३—धामनिधि = सूर्य। ४—लगे बगोई = मारने थे। ५—जामगी = सांक की जड़ को कूट कर उसकी डोर बट लेते हैं और उसे आग में सुझा कर जला लेते हैं। यह आग उस डोरी में बराबर सुलगती रहती है और बिना बुझाये नहीं बुझती। इसी को रंजक में छुआ देने से वह जल उठती है। इस डोर को जामगी कहते हैं। यह शब्द फारसी "जामगीर" से बना है।

डेरा कोस ढूंक पर पारे। हिम्मत रही हिये सब हारे॥
अड़े बुँदेला टरै न टारे। जीते जूझ बजाइ नगारे॥
रनदूलह रन ते विचलाये। ह्वाँ ते हनूटूक कौ आये॥
मारि गुनाह मरोरी टोरी। खग्ग भार भागर भकझोरी॥
फिरि मवास रतनागर मारयौ। औड़ेरा में डेरा पारयौ॥
दल दौरन हरथौन उजारी। धामौनी में खलभल पारी॥

दोहा।

चौंकि चौंकि चहुँ दिस उठे, सूबाखान खुमान।
अबधौ धावै कौन पर, छत्रसाल बलवान॥ ४॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे रनदूलहपराजयो नाम पंचदशोऽध्यायः॥ १५॥

सोलहवाँ अध्याय।

छन्द।

त्यौंही दौर करकरा कूट्यो। आसपास मरघर कौ लूट्यो॥
सो गाढ़ी सकलात[1] सहीनो। पातसाह कौ जात पठीनो॥
सो ताकों छत्रसाल बुँदेला। लई लुटाइ फौज सो पेला॥
सबही लूट छूटकर पाई। लुंगी[2] मोल मैाधुबन लाई॥
लूटी रसद साह की ज्यौंही। वाकन लिखी हकीकत त्यौंही॥
सुनी दिलीस खबर ठिकठाई। सूबा दल कौं नालस आई॥
रनदूलह डाँडे रपऊमी। पठये साह रोस करि रूमी॥
लै मुहीम रूमी रिस कीनी। मोट[3] उठाइ भरे[4] की लीनी॥

दोहा।

फौज जोरि रूमी चढ्यो, बाजे तबल निसान।
छत्रसाल तासों करचौ, बसिया में घमसान॥ १॥

छन्द।

बसिया में माच्यौ रनखेला। उत रूमी इत बीर बुँदेला॥
तुपक तीर सैथी तरवारे। बान पयायन बीर हँकारे॥
उमगे भिरत जुद्धरस पागे। कटि कटि गिरन परस्पर लागे॥
कढ्यो कल्यानसाह मन भाठे। पग परिहार न दीने पाछे॥
मीर यहबहे उमड़त आये। सनमुख जुटे हटे न हटाये॥
गना रूम के तके बुँदेला। किया तुरकदारनि कौ पेला[5]॥

1—सकलात = (सैागात) भेंट। 2—लुंगी = फौज की भीड़।
3—मोट = गठरी। 4—भरा = झगड़ा। 5—पेला = धावा।

तिन चोटैं कीन्हीं चितचीती[१]। साखे भई सबनि की रीती ॥
गनी रूम कौ समर पहारू। बाटन लग्यो सबनि कौ दारू ॥

दोहा।

भई भीर गलबल मच्यौ, दारू बाटत लेत।
लग्यो पलीता सीढरन[२], उद्यो धूम उहि खेत ॥ २ ॥

छन्द।

त्यौंही हला बुँदेलनि बोले। समर खेत खग्गनि के खोले ॥
लागे मुँह ते मारि गिराये। पिलिवन बीर धुँवा पर धाये ॥
दारू उड़ै उड़ै अरि ज्यौंही। मारे बीर बुँदेलनि त्योंही ॥
रूमी बिडरि खेत तें भाग्यो। छत्रसाल जस जग में जाग्यो ॥
ज्यौं रँग मच्यौ दिल्ली में औरै। दुदिलौ[३] भये साह कित दौरै ॥
नृप जसवन्तसिँह के बेटा। कढ़ै दिल्ली कौं मारिव बेटा ॥
फिरि जोधापुर धनी अन्यारे। अंतिसाह अजमेर पधारे ॥
त्यौं अकबर सहिजादौ साऊ। राठौरन पर पिल्यौ अगाऊ ॥

दोहा।

त्यौं प्रपंच रचि बुद्धि बल, दुरगदास राठौर।
सहिजादे सौं मिलि किये, तखत लैन के डौर ॥ ३ ॥

छन्द।

तखत लैन के लोभ बढ़ाये। पुत्रहिँ पितहिँ बैर उपजाये ॥
सहिजादौ संगी कर पायौ। तब दच्छिन कौ बाहि चलायौ ॥
ताकी पीठ साह उठ लागे। दच्छिन कौं उमगे रिस पागे ॥
रूमी भगे साह त्यौं जाने। कारी परी कुल तुरकाने ॥
बल व्यवसाइ सबनि के थाके। तब दिल्लीस तहबर मन ताके ॥

१—चितचीती = मनचाही।

२—सीढ़रा = सिँगड़ा, बारूद भरने की कुप्पी, जो बहुधा काठ, पीतल अथवा चमड़े की बनती है। ३—दुदिलौ = दुचित्ता, चिंतित।

जानि जुद्ध अमनैक अठायौ। तहवरखाँ इहि देस पठायौ॥
चढ़ी चमू तहवर की बाँकी। दिसा धूरि घँघरि सी ढाँकी॥
ज्यों तहवर की सुनी अवाई। त्यौंही लगन ब्याह की आई॥

दोहा।

सावर तै आई लगन, मिले बोल बंधान।
दयादये[1] बीरा[2] दियो, अब हितु भयौ निदान॥४॥

छन्द।

जब दिन निकट ब्याह के आये। मंगलगीत दुहूँ दिस गाये॥
तब दल बलदाऊ सँग राखे। लागे करन काज अभिलाखे॥
छरी बरात ब्याह की साजी। तीन सचार संग अरु बाजी॥
दूलह छत्रसाल छबि छाये। करन ब्याह सावरहि सिधाये॥
तँह विधि सौं भागीनो कीनी। बांध्यो मौर इंद्रछबि लीनी॥
लागी परन भाँवरैं ज्यौंही। परी फौज तहवर की त्यौंही॥
आनी बनी दोई बनि आई। दोऊ बरी करी मनभाई॥
इतहि भाँवरैं सजी सुहाई। उत तुरकनि सौं मची लराई॥

दोहा।

रन दपि तहवर खान कौ, मुह मुरकायौ मारि।
पूरन वेद विधान सौं, लई भाँवरैं पारि॥५॥

छन्द।

मारी फौज तुरक मुरकाये[3]। तँह सब धाये बजे बधाये॥
ब्याही बरी जीति अरि लीनी। कंकन छोरहि तुरंगम दीनौ॥
धामौनो धैरन झकझोरी। फिरि पिंडारि सब घरी पिंडोरी[4]॥
धारी वार मघासौ कूटे। गाँउ कलौंजर के सब लूटे॥

१—दयादये=सुपके से। २—बीरा=पान। ३—मुरकाये=लौटा दिये, भगा दिये। ४—पिंडारी=झकझोर डाला। बुंदेलखंड में पिंडारी दौरा को भी कहते हैं।

रामनगर मारयो करि डेरा। कालिंजर कौं पारयो घेरा॥
रोज अठारह गढ़ सौं लागे। चौकिन तहाँ द्यौस निसि जागे॥
बाहिर कढ़न न पावै कोई। रहे संक सकराइ गढ़ोई[1]॥
लई रोकि चारिउ दिस गैलै। गढ़ पर परै रैन दिन पैलै॥

दोहा।

चिंतामनि सुर की तहाँ, कीनौ आइ सुदेस।
अति आदर सौं लै चले, न्योतौ करि निज देस॥ ६॥

छन्द।

न्योतौ करि कीनी महिमानो। धन्य घरी सबही वह मानो॥
तातें तुरी तिलक में दीनौ। उर आनंद परस्पर लीनौ॥
ह्वाँतें कूच विदा ह्वै कीनौ। कालिंजरहिं दाहिनौ दीनौ॥
लरे उमडि तहँ सुभट अन्यारे। घाटी रोकि वीर गढ़वारे॥
छत्रसाल त्यौं हल्ला बोल्यौ। खग्गन खेल बुँदेलन खोल्यौ॥
समर भूमि अरिलोथिन पाटी। रोकी रुकै कौन की घाटी॥
बारि बनहरी लूट मचाई। धामौनी सौं लई लराई॥
पटना अरु पारौलि उजारै। तहवरखाँ पै परी पकारै॥

दोहा।

फौज जोर तहवर तहाँ, ठने जूझ के ठान।
गौने में छत्रसाल के, दल कौ परयो मिलान॥ ७॥

छन्द।

परयो मिलान जाइ जब गौनै। करकै तंबू तनै सलौनै॥
दहिनी दिस उतरे बलदाऊ। जहँ गोली पहुँचे पहुँचाऊ॥
थम्हे अपनी अपनी पाली[2]। परयो पहार पीठ तन[3] खाली॥
ऊपर सिखर चौपरा[4] जान्यौ। सो देखन छत्ता उर आन्यौ॥

१—गढ़ोई = गढ़वाले। २—पली = दल। ३—तन = ओर।
४—चौपरा = छोटा वर्गाकार तालाव जो सब ओर से पक्का बँधा हुआ हो।

छरी मीर कौतुक मन बाढ़े। चढ़ि करि भये शिखर पर ठाढ़े ॥
ज्यौं यह खबर जसूसन दीनो। त्यौं तहवरखां बागै लीनो[1] ॥
बखतरपोस सहस दस धाये। प्रलै मेघ से उमड़त आये ॥
निकट आइ धौंसा घहराने। हयखुरधार छटा छहराने ॥

दोहा।

बड़ी फौज उमड़ी निरखि, रच्यौ छत्ता घमसान।
चढ़ि सनमुख रनमुख तहाँ, बरपन लाग्यौ बान ॥ ८ ॥

छन्द ।

बरपन लाग्यौ बान बुंदेला। कियौ तुरक दै ढाल ढकेला ॥
'बखतरपोस बान सों फूटे। मल से स्रतज छांछ के छूटे ॥
कौतुक देखि जोगिनी गाई। खप्पर अटनि माजती धाई ॥
बिसुनदास तहँ मार मचाई। चोप करेरहि[2] भली चढ़ाई ॥
गह्यो पहार बुंदेला गाढ़े। त्यौं पठान पैठे मन बाढ़े ॥
चंड लेहु दुहुँ दिस ठहराने। सूरज गगन मध्य ठहिराने ॥
सोर सिंहनादन के माचे। भूत बिताल ताल दै नाचे ॥
हेरम खबर जूझ की पाई। सुभट मीर त्यौं उमड़त आई ॥

दोहा ।

चढ़े रंग सफजंग के, हिन्दू तुरक प्रमान।
उमड़ि उमडि दुहुँ दिस लगे, कोरन लोहा बान ॥ ९ ॥

छन्द ।

कोरन लोह बान भट लागे। दुहुँ ओर रन में रस पागे ॥
सुतरनाल[3] हथनाले[4] छूटी। गरजि गरजि गाजै सो टूटी ॥

१—बागैं लीन्हीं = अभारूढ़ होकर आक्रमण किया। २—करेरहि = करेरावाले को। ३—कोरनलोह बान लगे = विकट युद्ध होने लगा और शस्त्र चलने लगे। ४—सुतुरनाल = तोपें ५—हथनाल = वे तोपें जिनके चरख हाथी खींचें।

गोलिन तीरन की झर लाई। माची सेल्ह[1] समसेरन घाई॥
त्यों लच्छे रावत प्रभु आगे। सेल्हन मार करी रिस पागे॥
प्रबल पठान मारि के साऊ। कढ़्यो मिश्र हरिकृष्ण अगाऊ॥
उमड़ि लोह लपटन मन दीनो। तन के होम स्वामि हितु कीनो॥
बाघराज परिहार पचारयौ। सार पेर रवि मंडल फारयौ॥
जूझयो नन्दन छिपी[2] सभागो। ब्योतन लग्यो इन्द्र को बागो॥

दोहा।

कृपाराम सिरदार त्यों, कढ़्यो धँधेरो धीर।
बैठ्यो जाई बिमान चढ़ि, भानु भेदि वह बीर॥ १०॥

छन्द।

उतहि पठान चढ़त गिरि आवैं। इत छत्रसाल बान बरसावैं॥
इक इक बान दुद्वै भट फूटे। झुक झुक तऊ झपट रन जूटे॥
बान बेग जगतेस हँकायो। त्यों करवान झरप झुकझारयो॥
घाउ ओड़ि भुज ऊपर लीने। उमड़ि पांउ रम सनमुख दीने॥
गिरे पठान डील त्यों भारे। गोलनि सेल्ह सरनि के मारे॥
जंघा घाउ छतारे ओढ्यो। भुजडंडन रनसिंधु बिलोड्यो॥
पिले तुरक जे बलतरवारे। ते रन गिरे छता के मारे॥
बढ़े गिरिन स्रोनित के नाले। धर धमकन धरनीतल हाले॥

दोहा।

कहर[3] जूझ द्वै पहर भो, झरयो[4] सार सो सारु।
तेज अरिन को त्यों घट्यो, लोथन पट्यो पहारु॥ ११॥

छन्द।

बारह बीर खेत इत आये। सत्ताइस घाइल छबि छाये॥
तुरक तीन से खेत खपाये। घाइल द्वै से बीस गनाये॥

१—सेल्ह = भारी सांग। २—छिपी = छीपा जाति [illegible]ष जो कपड़े पर बेल बूटे रंग से छापते हैं। ३—कहर = कठिन। ४—झरयो सार सो सारु = लोहा बजा, शस्त्र चले।

मारि तुरक कौ मुँह मुरकायौ। रन मैं विजै बुँदेला पायौ॥
मुरके तुरक खग्ग फिर घोल्यौ। बल दिवान पर हल्ला बोल्यौ॥
बजे नगारे फेर जुझाऊ। रन मैं रुप्यौ उमडि दलदाऊ॥
पहर राति सुर मार मचाई। मुरक्यौ तुरक उहाँ खग्ग खाई॥
घोडि अरिन के दाल ढकेला। भलैं लर्‌यौ बलकरन बुँदेला॥
उभरि खेत तहवर बिचलायो। सूबन के उर साल सलायौ॥

दोहा।

सले साल सूबानि के, धकनि हलै पठान।
दियौ भाल छत्रसाल कैं राजतिलक भगवान॥ १२॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते तहवर युद्ध वर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः॥ १६॥

सहर लूटि थानौ फिर मांड्यो। डांड चुकाइ करोरी[1] छांड्यो॥
डामोनी कौ मुलक उजारयौ। दल दौरन, गडरौला मारयौ॥

दोहा।

लूटपाट मुरकी लई, दई करहिया लाइ[2]।
मदर मदापुर जारि कै, रहे राजगिर जाइ॥२॥

छन्द।

तहवरखां हेरत हिय हारयो। याहि दयाइ दमोयौ धारयौ॥
सुनी पुकारन तहवर टेरे। तब डेरा कीन्हों पट हेरे॥
दौर मजुनहर पर पुनि कीनी। भुमियन तमकि तेग कर लीनी॥
सत्ताइस गांवन के ठाये। ढोल बजाइ बीठ जुर धाये॥
मची मार त्यौं छिले धुँदेला। गिमिर कियो रागन रिज खेला॥
किरपाराम चौधरी मारयौ। घाउ मान बगसी तन धारयौ॥
ज लगि न सूबा सनमुख आवे। त लगि मयासिन खेत खपावे॥
जब लगि द्रगनि न दुरद निहारे। तब लगि केहरि हरिन सँहारे॥

दोहा।

मियां दुरद भुमिया हरिन, कानन मुलक बिसाल।
फांदि सिकार गेलन लग्यौ, समरसिंह छत्रसाल॥३॥

छन्द।

छत्रसाल रनरंग प्रवीने। दौरन दबटि द्रेम बस कीने॥
भेड़ा मारि खिनेवा धारयौ। दौरि दलीपुर दलमल गारयौ॥
धारी बछिहा रंग भैलानी। मिढुली मारि लई दाकौनो।
मलि मुगावली अरु महँगानी। दलि मुराउ दीनो मगरौनी॥
पटहेरे पंचहार गँवाये। घर की रही न ईंट हटाये॥

१—करोरी = बादशाही में एक राज्य कर्मचारी के पद का नाम था जो वर्तमान काल के तहसीलदार के समान होता था।

२—लाइ = आग लगा दी।

लूट्यो अमौदा ईसुर बारो । दल्यो दौर करि दाँगी वारो ॥
दई पजारि पलोर पठारी । सिरला भीत भीत सों मारी ॥
सिलवानी बिलवानी लाई । बासौधे में लूट मचाई ॥

दोहा ।

बारि बिलखुरा रमपुरा, रहसैदी परजार ।
चेइढ़ डौगरु ग्यासपुर, शानाबाद उजार ॥४॥

छन्द

दौरि बिलैरा बरहो बारयो । बजि बबूरिया डेरा पारयो ॥
बड़खेरा बलहरा बलेहो । दौरि दलनि दल मल्यौ रनेहो ॥
बड़ी बचैया आग लगाई । धूम धुंधु धुव धामनि लाई ॥
धासी एक राममनि धावै । चालिस कोस दौरि करि आवै ॥
नृप छत्रसाल ताहि इत राख्यो । और देस जीतनि अभिलाख्यौ ॥
उतरे नदी पार दल ज्योंही । मिले आइ सब सेंगर त्योंही ॥
झमकि झार सागर पै झारयौ । धौसनि धमकि धमहरा मारयौ ॥
टोरी टोर पलक में लीनी । लपक लाल लहटूटी दीनी ॥

दोहा ।

बीची बारो कोपरा, कारो बाग झपेट ।
लगत बडोए में बड़ी, लूटी हाट लपेट ॥५॥

छन्द ।

हटरी मार करयो मन भायो । हटि हिंडोरिया हलन दलायो ॥
लभरी खोद खूंद छिमला सों । रोंद राखि भंज्यो भोंरा सों ॥
आंधसेरी उमराव न मान्यो । मारयो दोस उतारयो पान्यो ॥
हाड़ा दुरजनसाल प्रवीनो । तिन हित छत्रसाल सों कीनो ॥
दियो देस तिनकों तब डेरो । धूपसि मार खदोयो खेरो ॥
मारि मयापुर धारी बेरी । धुरहट मारि पिपरहट पेरी ॥

ले रमगढा सुनागढ लीनौ। मारि गढा काटा वस कीनौ॥
दई पजारि पैठि पुरवाई। लीनी लूटि कठिन कुरवाई॥

दोहा।

एते दसौंधी कर कढे पीछे हटे न पाउ।
बैस बखत उमड में मोडयो सनमुख घाउ॥६॥

छन्द।

कुम्भराज कजियो उजारयौ। कच्कन कचरि कु थरपुर मारयौ।
लै कधीरपुर लयौ घटेरा। कन्दरापुर में रह्यो न फेरा॥
रैादि रौनङ्ग रनगिरि लाई। हडति जमहटा लूट मचाई॥
फतेपुरा चन्द्रापुर लीनो। चापि बाढिपुर चपटै कीनो॥
लयौ लाजरौ लोधा वारौ। बघराटा मारयौ भय भारौ॥
दोरनि उमडि ग्रमानै लीनौ। मारि उदैपुर कैतुक कीना॥
सय्यद लरे रातगढ टूट्यो। गढधारनि कौ धीरज छूट्यो॥
लई सौरई बरु सादौरी। लूट गांउ गिरद के पौरा॥

दोहा।

टारी ओर सिलात है, लई तौर कमान।
लयो गीरफामर भिल्यौ, झुकझोरी भरखान॥७॥

छन्द।

एसी समै घोर निधि कीनो। सिह सुजान स्वर्ग गति लीनी॥
त्याही राज इन्द्रमनि पायौ। छत्रसाल सौं हित बिसरायौ॥
मांग मुहीम छता पर ठानी। तौ छत्रसाल न्यि रिस मानी॥
मारि मुलक में लूक लगायौ। सतघारि हय पारी प्यायौ॥
चढि गुदनार गरौठा मारयो। त्यौ ही कगर बजनयौ बारयो॥
बाधि घेरि डैरौन उजारी। घार उजहरा ऊपर पारी॥
सुनत इन्द्रमनि कौ मन आकुर्यौ। तरल सुआनराइ कौ तास्यौ।
तब दल धामौनी पर धायौ। तहपरखां कौ अमल उठायौ॥

दोहा ।

दौरि दमौयो दलमल्यो, लखरौनी परजार ।
गौनौ हीरापुर लयो, दई बार मिलवार ॥८॥

छन्द ।

कर हरथौन हनौता हेला । डहुली पै पारयो बगमेला ॥
झपटत झार झोल करि डारी । रहिली पहिली दौर उजारी ॥
बारि मुलक हेरी से दीने । सबै भये भूपाल अधीने ॥
साठ कोस की दौरन दौरे । रन के ध्यांत न वैरिन औरे ॥
चौथ भेलसा लौ की आनी । अकबकाइ[1] उज्जैन परानी[2] ॥
चौकी गढ़चांदा चकचौकै । दहसत मान देवगढ़ दौकै ॥
धाकनि आनि गढ़ापति माने । सूबा उर में संक समाने ॥
रन सनमुख उमराउ न आवैं । चौथ देइ तब देस बचावैं ॥

दोहा ।

अमल उठाये साह के, देस दिल्ली के वार ।
आड़े आवै औार को, सूबन मानी हार ॥९॥

छन्द ।

सूबन सबन हार हिय मानी । छत्रसाल की बजी कृपानी ॥
दौरन देस दिल्ली के वारे[3] । भये व्योम में अनल उज्यारे[4] ॥
उमड़ि धूम रविमण्डल पूरे । ठौर ठौर जनु उठे बघूरे ॥
त्योंहि पातसाह फरमायो । सेख अनौर साजि दल धायो ॥
बखतरिया पखरैत हथ्यारी । चढ़े सहस दस होत तयारी ॥
आगे सौक झुमत गज माते । गजत अराये होत न हाते ॥

१—अकबकाइ = घबरा कर, बिलबिला कर ।   २—परानी = भागी ।
३—वारे = जलाये ।   ४—अनल उज्यारे = अग्नि का प्रकाश हुआ ।

सैयद सेख पठान अन्यारे। माछ बजत ते होत निन्यारे॥
बान रहकला[1] तोप अँजाले[2]। सहसनि सुतरनाल हथनाले॥

दोहा।

लोहदात दल साजि त्यौं, उमड्यो सेख अनौर।
उठन धूम चहुँ दिसि तकै, करै कहाँ को दौर॥१०॥

छन्द।

दौर अनौर कोस दस आये। घुमों कोस चलिस लौं धाये॥
दौरत देस बुँदेला आवैं। छोर अनौर न छोयन पावे॥
धाये तुरक जुद्धरस भीने। पीठ लगाई बहबहे कीने॥
जानी फौज फंद में आई। तब त्योंघे में मार मचाई॥
मीर बहबहे उमड़न आये। डंका निकट नजीक बजाये॥
तब छत्रसाल चढ़ाई भौंहैं। पैस्यो उमड़ि फौज के सोहैं॥
घोड़ि मस्त छत्रिन के बांके। बघतरपोस हला करि हांके
छमकि तुरी बरछा उलछारे। बच्छ ताकि प्रतिबच्छ हिंकारे॥

दोहा।

गाहन के धमके उठे, द्वियौ डमरु हर डार।
नचे जटा फटकारिकै, भुज पसारि तनकार॥११॥

छन्द।

घाइन धमके मचे घनेरे। बघतरपोस गिरे बहुतेरे॥
फरफरात फर में धर लागे। सेख अनौर मानि भय भागे।
गिरे खेत अनवर के साथी। लुटे भँडार ऊँट हय हाथी॥
घेरे अनवर जान न पाये। डांड मान तब प्रान बचाये॥
मारि लूट अनवरखां डांडे। चौथ सियां[3] दुलाय लै छांड़े॥

1—रहकला = तोप की गाड़ी।
२—अंजाल = वह तोप जिसमें जंजीरदार गोले भरते हैं।

आलमगीर खबर यह पाई। अनवर कों तागीरी[1] आई॥
बोले साह कोप करि ऐसे। फैले हुकुम हमारे कैसे॥
मनसिवदारन हिंमत खोई। देखो निमकहलाल न कोई॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते अनवरपराजयो नाम सप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥

१—तागीरी = बदली।

अठारहवाँ अध्याय।

दोहा।

यों कहि ताके तुरतही, सुतरदीन की ओर।
जे ईरानी निसबती, काबिल कौम अमीर ॥१॥

छन्द।

सुतरदीन त्यों कोरनिस[1] कीनी। तिन्है ज्वाद धामौनी दीनी ॥
देसनि देसनि लिखे पठाये। क्यों फिसाद येते फैलाये ॥
सरे मुहीम साह रिस छाका। क्यों ये लिखन दुंद के बाका ॥
औार सिख्र दई सुनो सब योनी। भेजे सुतरदीन धामौनी ॥
त्यों मिरजा धामौनी आये। बँदोबस्त कीने मनभाये ॥
सजी हजार तीस असवारी। दल में निसु दिन रहै तयारी ॥
छत्रसाल पै पांच पठाये। बचन औाम के आनि सुनाये ॥
ये मिरजा उहित ईरानी। रन में जिनकी बजी कृपानी ॥

दोहा।

इन्है मुकाबिल ओर को, दिल्ली में उमराउ।
चाहत है इनसों सबै, सूबादार सदाउ ॥२॥

छन्द।

इन समान उमराइ न कोई। को रन इन्हैं मुकाबिल होई ॥
बड़े भाग छत्रसाल तिहारे। मिरजा आप सुढील निहारे ॥
मिहरबान ह्वै लिखे पठाये [तब हम पास रावरे आये ॥
ते अब लिखे खोलकै बाँचौ। इनकी दफ्तर[2] दौर तें बाँचौ ॥
इनकी रिस खोटी हम जानैं। को इनसों सनमुख रन ठानैं ॥
इनसौं बचे जुझ जबही लौं। कुसल मानि लीजे तबही लौं ॥

१—कोरनिस = अभिवादन। २—दफ्र = दफ्तर।

तातें इनको भलो मनावो । इन देसनि मत दुंद मचावो ॥
रजावंद तुमसैा जो ह्वै है । तैा मँगाइ मनसिब पुनि दैहै ॥

दोहा ।

ताते इनके देस को, छोर छाँड़ अब जाउ ।
जैा मिरजा कहुँ कोपिहै, तो फिर कहां निबाहु ॥ ३ ॥

छन्द ।

ज्यों छत्रसाल बचन सुनि लीने । त्यौं बोले बर बुद्धि प्रवीने ॥
मिरजा बड़े सवनि ते गाये । याकी चैाथ पाइ हम आये ॥
सो हमेस हमकों भरि देहै । तो हम इनको छोर न छैहै ॥
चैाथ न देहैं जैा मनमानो । तो मुलकन को परे न छानी[1] ॥
विग्रह उठै देस लुटि जैहै । मिरजा अमल कहाँ ते लैहै ॥
जिन प्रभु हमको तेग बँधाई । ते सब ठौरन सदा सहाई ॥
गरबीलिन के गरवनि ढाहे । गरवप्रहारी बिरद[2] निबाहे ॥
केतिक मिरजा की रिस खोटी । प्रभु के हाथ सबन की चोटी ॥

दोहा ।

जे जग में दुसमन बड़े, काम क्रोध अरु लोभ ।
ते मिरजा हितुवा करै, कहे मानिहै छोभ ॥ ४ ॥

छन्द ।

विनही जुद्ध जीति अभिलाषे । त्योंही वचन क्रोध के भाषे ॥
चैाथ लोभ के देन न माने । तीनो सत्रु मित्रु करि जाने ॥
मिरजा के विग्रह मन भायो । तो हमहू याते सुख पायो ॥
प्रथम सृष्टि करता जेव कीनो । तब रनवृत्ति छत्रियनि दीनो ॥

१—छानी = छत्त, छप्पर; खपरैल "मुलकन को परै न छानी" से अभिप्राय है कि देश भर में घरों पर छाया न रहने दी जायगी अर्थात् देश उजाड़ दिया जायगा । २—विरद = बान; टेक, यश ।

पग पग अश्वमेध फल चाहै। ते कृपान रन सनमुख बाहै॥
भेदत भानु सुभट रन भावै। रन में रुद्र ताल दै नावै॥
रन अवलोकि अमर सुख पावै। रन में उमड़ि अपछरा गावै॥
रन में हवे सुजस जग छावै। ताते रन छत्रिन कौं भावै॥

दोहा।

जौ रन कौ सनमुख पिलै, मिरजा बड़े जुझार।
तौ सेरहन धमके मचै, समसेरन झनकार॥ ५॥

छन्द।

जो उछाह रन के बढ़ि आये। है वर दये पांच पहिराये॥
दीने पान सँदेस सुनाये। रन बनयोरन के मन भाये॥
पै हम इन्हैं रोकिहैं तौलौं। फिर न आइहै उत्तर जौलौं॥
जौ मिरजा दै चौथ पठाई। तौ सलाह निवही ठिकठाई॥
दिन दस बाट हेरिहैं आछै। मनभाई करिहैं ना पाछै॥
चले पवौर बिदा ह्वै ज्योंही। बजे निसान कूच के त्योंही॥
चहूँ चक्र माचे भय भारे। तिन समाल पर डेरा पारे॥
दल की दौर जौन दिसि जानौ। तहां समाधानी ठिक ठानौ॥

दोहा।

फिरि पवौर हाते गये, सुतरदीन के तीर।
गोसे ह्वै बातें कही, टारि सभा की भीर॥ ६॥

छन्द।

ऐरो बली बुँदेला गाढ़े। जोति जोति फौजैं मन बाढ़े॥
विग्रह करैं ये न बस ह्वैहै। हितु कीनै फिरि छोर न दैहै॥
जाकी धर्मरीति जग गावै। जो प्रसिद्ध बलवंत कहावै॥
लै अवतार बड़े कुल आवै। जुद्धन जुरै जगत जसु छावै॥
जाहि जोट मैयनि कौ भावै। करत अनारथी[1] न घन आवै॥
सत्य :वचन जाके ठिक ठावै। प्रीति जोग ये सात गनावै॥

[1] —अनारथी = अनार्थपन।

इनसों भूलि विरोध न कीजै । साम दाम सों बस करि लीजै ॥
जो वे चौथ देस की पावैं । तौ काहे को दूंद[1] उठावैं ॥

दोहा ।

ऐसे मंत्र सुनाइ के, रहे पांच गहि मौन ।
त्यौं मिरजा बोले तमक, कही बात यह कौन ॥ ७ ॥

छन्द ।

जौ हम सत्रु चौथ दै साधैं । तौ हथ्यार काहे को बांधै ॥
वाकन लिखि खबर जौ धावै । तौ हमकों बदनामी आवै ॥
जान प्रवीन तुम्हे हम भेजा । तुम तौ दिया जलाइ करेजा ॥
यों कहि ह्वां तै पांच उठाये । सैयद सेख पठान बुलाये ॥
सब सों कही सजौ असवारी । करौ जूझ की सबै तयारी ॥
सब सों जीति जीति मन बाढ़े । रन मैं रुपत बुंदेला गाढ़े ॥
उचकें फौज इहांतै धावैं । लैन हथ्यार न कोऊ पावैं ॥
जिहि दिसि होत खरी हुसियारी । पैठौ ताकी ताक पछारी ॥

दोहा ।

काटि कटक किरवान बल, बांटि जंबुकनि देहु ।
ठाठ जुद्ध इहि रीत सों, बाट धरन धरि लेहु ॥ ८ ॥

छन्द ।

लगा लगाइ उमड़ि दल धाये । बाट छोड़ि औघट ह्वै आये ॥
ठौर ठौर इत चढ़ी रसोई । भोजन कहौ कौन विधि होई ॥
धूरि धुंध नभमंडल देखी । आंधी उठी सबनि उर लेखी ॥
छत्रसाल के तुरग नवीने । चौकिन खरे काइजा कीनें ॥
त्यों छत्रसाल बुद्धि उर आनी । चढ़ी चमू तुरकन की जानी ॥
ह्वै असवार तुरी झमकाये । दल मैं सबनि हथ्यार बँधाये ॥

१—दूंद = द्वंद ।

सुभट छ सातक आपु अकेला। दल सनमुख कीनौ बगमेला ॥
कही पुकार चलत हम आगे। पहुँचौ सबै लाग[1] के लागे ॥

दोहा।

ज्यौं अरिदल सनमुख पिल्यौ, छत्रसाल रनधीर।
कुंभ सुतु सनमुख चल्यौ, सोखन समुद गँभीर ॥ ९ ॥

छन्द।

सुभट घटा कवचनिजुत कारी। उमडत आयत निकट निहारी ॥
त्यौं छत्रसाल जुद्धरस छाये। तानि कमान बान बरषाये ॥
कवच समेत कवचधर फूटैं। संग के सुभट थाघ से छूटैं ॥
करी उमड़ि सेल्हन घन घाई। हठि हरौल की गोल हलाई ॥
ठेल हरौल गोल जब हकी। जुर्‌यौ परसराम सोलंकी ॥
उदभट पोर उबिल सब आये। दुहु तिन असवार गिराये ॥
झलकी बदन सबनि कै लाली। हाकी[2] हरषि आपनी पाली[3] ॥
हटी दूल अरिदल अधिकारी। कोसक लौं भगि गई पछारी ॥

दोहा।

त्यौं मिरजा अपनी अनी, थाँभी तबल बजाइ।
कही सबनि सैा बलगनै, लेहु गनीम न जाय ॥ १० ॥

छन्द।

जौलगि तुरकन कटक सम्हारे। तौलगि कढ़ि बनवीर हँकारे ॥
सनमुख घाट तोपखिन बाँधे। कलह कराल युद्ध ह्वै काँधे ॥
उमडि चमू तुरकन की धाई। बनवीरन गोलिन झर लाई ॥
सैयद सेख पठान अन्यारे। गिरे खेत गोलिन के मारे ॥
हटे न मीर जुद्धरस भीने। धरि धरि लोथ मोरचा कीने ॥
घने मीर बनवीर उछोने। पेलि मनंग घाट उन लीने ॥

1—लाग के लागे = सहायता के लिये। 2—हाकी = आगे बढ़ाई। 3—पाली = दल।

छुटत घाट करकै पग रोपे। त्यों पठान पैठे उत कोपे॥
तहँ मिरजा रन के रस भीने। बांधि कतार गोल द्वै कीने॥

दोहा।

दुहूँ ओर द्वै गोल करि . बाँधी बार कतार।
जनु रन को द्वै सिखिर कौ , जंगम भयो पहार॥ ११॥

छन्द।

पिले पठान जुद्धरस बाढ़े। रन में रुपे बुँदेला गाढ़े॥
माची मार दुहूँ दिस भारी। जनि जम दई तमकि करतारी॥
उमड़ि नरायनदास हँकारयो। सोक सँहार घाट तन धारयो॥
बिरचि अजीतराइ रन कीनो। मीरनि मार घाट तब लीनो॥
बालकृष्ण बिरुयो मन आछे। घाउ ओड़ि पग धरयो न पाछे॥
गंगाराम चोदहा चांडो। लरयो बजाइ खेत में खांडो॥
मेघराज परिहार अगाऊ। रन में रुप्यो[1] हनत अरिसाऊ॥
सनमुख पिल्यो राममनि दौवा। अरु हरौल के हने अगौवा[2]॥

दोहा।

लरे हांक हिंदू तुरक , झरयो सार सों सार।
भये भानु रथ रोक के , कौतुक देखनहार॥ १२॥

छन्द।

ठिले मीर सनमुख त्यों बांके। त्यों रन उमड़ि बुँदेला हांके॥
भारी भीर परी जब जानी। छत्रसाल कर कढ़ी कृपानी॥
बखतरपोस हला करि काटे। रुंड मुंड रनमंडल पाटे॥
फौजदार मिरजा को प्यारो। जूझो बरगीदास अन्यारो॥
बरगीदास कट्यो रन ज्योंही। परयो चाल मिरजा को त्योंही॥
गिरे तुरक छत्ता के मारे। जोजन लों धर[3] पे धर डारे॥

१—पाठान्तर—कट्यो। २—अगौवा = अग्र भाग, आगेवाले लोग।
३—धर = धड़, शरीर।

भाग्यो चाल सुतरदी हारे। गरवप्रहारी गरब उतारे॥
दल विडारि डेरन पर आये। पाई फतै निसान बजाये॥

दोहा।

सुरतदीन कौ कूटि दल, लीनो चौथ चुकाइ।
पहुँचे दल दरकूच ही, चित्रकूट कौं जाइ॥ १३॥

इति छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते सुतरदीनपराजयो-
नामाष्टादशोऽध्याय ॥ १८॥

उन्नीसवाँ अध्याय ।

—○—

छन्द ।

तहाँ हमीदखान चढ़ि आयो । तासों जुद्ध जीति जस पायो ॥
ह्वाँते फिरत बीरगढ़वारे । तीन बेर रन में रुपि मारे ॥
ह्वाँते दौरि गड़ौला तोरयो । गज धकनि नरसिँहगढ़ मोरयो ॥
डाँड मारि पेरछ परजारी । कचर कनार कालपी डारी ॥
उरई अरु खगसील उज्यारी । दौरि दलनि बरहट त्यों बारी ॥
लै अत्तापुर सोह सँहारी । धारि उमंडि जलापुर पारी ॥
चहुँ दिसि घेरि कोटरा लीनो । जूझ लतीफ मास द्वै कीनो ॥
उपराला करि सक्यो न कोई । संकित भयो लतीफ गढ़ोई ॥

दोहा ।

त्यों हमीर आयो तहाँ, तुरत अँधेरो धीर ।
डाँड चुकायो लाख भर, मरत बचाये मीर ॥ १ ॥

छन्द ।

दासी धरै चमू उचकाई । बचे मीर घर बजी बधाई ॥
घेरि डाँड चंडेत चुकायो । फिर खंडोत मुकाम बजायो ॥
चौकी पटै कालपी दीनी । चौथ मौदहा लौ की लीनी ॥
खेर महेरा की सब मारी । दल की दौर तिहोनी बारी ॥
वारपार के जुरे मवासी । नदी बेतवै तट के वासी ॥
सब गाँउ बीसक के धाये । समर ठानि उपहर[1] को आये ॥

१—उपहर = नदी के ऊपरी भाग पर की भूमि ।

अपनो मीर जान अधिकारी[१] । दल पै दियौ दरेरो[२] भारी ॥
सब निसि छोड़ दरेरो दीनौ । भोरहि उठत जुद्ध जुरि कीनौ ॥

दोहा ।

जुरे जुद्ध कर तेग लै , पंचम के असवार ।
गंजि गोल गरब्बीन के , करैं अरिन पर वार ॥ २ ॥

छन्द ।

तेगनि वार करन भट लागे । छाँड़ि समाधि त्रिलोचन भागे ॥
बही तेग पंचम की ऐसैं । बाढ़े[३] लपट खात खर जैसे ॥
ऐसे कछू ठाट बिधि ठाटे । चारि हजार खेत अरि काटे ॥
खाइ मास मसहार अघाने । जोजन दसक गीध मँड़राने[४] ॥
पाई फतै मुसकरा लूट्यौ । कुलि मयास कैा फाटिक टूट्यौ ॥
भये मयासी भयै अधीनै । तब जलालपुर डेरा कीनै ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते हमीदखान सेद लतीफ बलि मयासी पराजयो नाम ऊनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

—:o:—

१—अधिकारी = बलवती, अधिक ।

२—दरेरो = भयानक धावा बंदूकें चलाते हुए

३—जैसे लपट चलने का गदहा एक एक तृण चान कर खा जाता है और कुछ नहीं छोड़ता वैसे बुंदेल वीरों की कृपाण ने रण में कोई शत्रु न बचने दिया सब को मार गिराया ।

४—मँड़राने = उमड़े ।

?ीसवाँ अध्याय ।

—:o:—

छन्द ।

त्यौंही पातसाह फरमायौ । अब्दुलसमद साजि दल धायौ ॥
सजे समद के संग सिपाही । साहिन जिनकी तेग सराही ॥

दोहा ।

सैयद सेख पठान सब, सजे समद के संग ।
सार बजत ते समर में, बढ़ि बढ़ि चढ़त उमंग ॥ १ ॥

छन्द ।

सजि दल अबदुलसमद उमंड्यो । धूरधार नभमंडल मंड्यो ॥
बजे गाजधुनि निडर नगारे । गजे मेघ ज्यौं गज मतवारे ॥
पखरैं तुरी तरल तन ताजे । बखतरपोस सुभट छवि छाजे ॥
बान जजाल रहकला तोपे । सुतरनाल हथनालनि ओपे ॥
उमड़त फौज सहस दस आई । भई छतारे की मनभाई ॥
बखतर बांधि सिपाही साजे । निकट समद के दुंदुभि बाजे ॥
त्यौं छत्रसाल समद के सौंहे । भयो खेत चढ़ि भाइ भिरौंहे ॥
दहिनी दिसि बलदाऊ ठाढ़े । जिहि थल भरक भिराऊ गाढ़े ॥

दोहा ।

राजत दौवा राइमनि, बांई तरफ अडोल ।
उमगत अगहर जूझ कौं, ताकत प्रतिभट गोल ॥ २ ॥

छन्द ।

आवत कटक समद कौ देख्यौ । सूरन जनम सुफल कर लेख्यौ ॥
दुहूँ दल बंदिन विरद सुनाये । दुहुँ दल कलह कंधि भट आये ॥

दुहुँ दलनि धौंसा घहराने। दुहुँ दलनि बाने फहराने॥
दुहुँ दल छार छटा छहराने। दुहुँ दल चंई लोह लहराने॥
दुहुँ दल बीर झुंड भहराने। दुहुँ दल सिंहनाद कररानें[1]॥
दुहुँ दल ठौह तुरगनि दीनी। दुहुँ दल बुद्धि जुद्धरस भीनी॥
दुहुँ दलनि दोऊ दल ताके। दुहुँ दलनि माने रन साके॥
दुहुँ दल पिले हरौल अगाऊ। दुहुँ दल बाजे तबल जुझाऊ॥

दोहा।

उठे दीठ हादीन के, दुहुँ दिस भनक रबाब[2]।
भलभलाइ बुद्दा उठे, सुवनि के मुख आब॥ ३॥

छन्द।

छूटे बान[3] कुहु कुहु कुहु बोला। नभ गननाइ उठे[4] गुरु गोला॥

१—कररानें = तीव्र हुए। २—रबाब = शुद्ध शब्द रुबाब है, आतंक।

३—छूटे बान कुहु कुहु कुहु बोला = बान से यहाँ अभिप्राय तीर से नहीं है। बान एक प्रकार का मिट्टी का नल २० इंच के लगभग लंबा होता था और इसका व्यास ३ इंच के लगभग होता था और इसका दल मोटा होता था, इसमें बारूद भर कर मिट्टी की डाट लगाते थे और बारूद से पलीता लगा रहता था। इसके साथ एक ठोस बाँस की सात, आठ सात फुट लंबी छड़ बंधी रहती थी और बान चलाते समय यह छड़ फाड़ दी जाती थी। पलीते के द्वारा आग पहुँचते ही यह बान शत्रु दल पर जिस ओर छोड़ा जाता था उस ओर बढ़ कर जाता था और शत्रु सेना में गिर कर चक्कर काटने लगता था। बाँस की फटी हुई छड़ उसी के वेग से घूमती थी और जिस पर पड़ जाती थी उसे आहत कर यमराज को सौंप देती थी। इन बानों के छूटते समय उनसे कुहु कुहु शब्द निकलता था। ऐसे बानों का प्रचार सन् १८५७ के गदर के समय तक रहा है। सुना जाता है महारानी लक्ष्मीबाई की सेना के गुसाइयों ने झाँसी के दुर्गं [illegible] से ये बान अंगरेजी सेना पर चलाए थे।

४—गननाइ उठे = सनसना उठे।

तरभर निविड़ बंदूखनि माची। धूम धुंधु नभमंडल नाची॥
दसहूँ दिसनि गई परकारी। देख्यो समै भयानक भारी॥
गोला गिरन गाज से लागे। बिडर काल के किंकर भागे॥
त्यौं छत्रसाल वीररस छाक्यौ। सनमुख सैन समद कौ ताक्यौ॥
लई राइमनि दौवा बागे। पैठ्यो उमड़ि सबनि तै आगे॥
कौतुक लखत अमर अनुरागे। जूझन सुभट परस्पर लागे॥
विरच्यौ विकट राइमनि दौवा। घाइ खाइ अरि हनै अगौवा॥

दोहा।

दौवा की चौकी लरी[1], करी पसर विरझाइ।
कौन गनै वैरी घनै, दीनै खेत खपाइ॥ ४॥

छन्द।

तुरकन तमकि पसर त्यौं कीनी। इतहि बुँदेलनि बागैं लीनी॥
हिंमत कौं जसवंत कहावै। जूझत खग्ग वहवहे[2] पावै॥
भावतराइ पमारु रिसानौ। भाइ मरद जूझौ मरदानौ॥
पाइक सबदलराइ हँकारयौ। सारु पैरि रविमंडल फारयौ॥
लागर भोज पसर करि धायो। स्वामि हेत तन खेत खपायो॥
त्यौं दलसाह मिश्र पन पाल्यौ। रन सनमुख तन तजत न हाल्यौ॥
किसुनदास जूझौ मन आछे। उदैकरन पग धरयो न पाछे॥
काम भले भाई तहँ आये। सूरजरथ के तुरी कहाये॥

दोहा।

लरे सुभट भट उमड़ि कै, अरे[3] बुँदेला वीर॥
परे परस्पर खेत कटि, टरे न टारे धीर॥ ५॥

छन्द।

त्यौंहीं समद हला उठि बोल्यौ। कवच धरन खग्गन खिझ खोल्यौ॥
लरयो अजीतराइ असि घाई। मुँह मुँह दै मुँहई मुँह खाई॥
मेघराज हरजू गलगाजे। घाइ ओड़ मारे अरि ताजे॥

१—पाठांतर = परी। २—वहवहे = साधुवाद, वाहवाही, शाबासी।
३—अरे = अड़े रहे।

घाइ दयाल मीनमहि आये। बले वैसु घाइल ढिकठाये॥
भूपतिराय वैस थल गाढ़े। घाइ खाइ विरच्यौ बल बाढ़े॥
रनलायक घनश्याम लड़ैड़ौ। सनमुख घाउ बच्छ पर थोड़ौ॥
त्यौंहि दौरि रावत रिस कीनी। घाइल ह्वै घाइक सिर दीनी॥
ईसफखान मिरच्यौ रिस भीनो। रीझि तुरंग घाउ तन लीनो॥

दोहा।

परत भार घाइल लरत, कर लै सुभट समाज।
थोड़ि अस्त्र सनमुख पिले, राखि हिये रनलाज॥ ६॥

छन्द।

त्यौं पंचम के भार अन्यारे। जगनराइ अरु नवल हँकारे॥
प्रेमसाह बुन्दीसुर चांडो। सनमुख पैठि खेत जिन मांडो॥
राना रामदास धसि धायो। बलनि उछाल सेलह बजमायो॥
त्यौं पधार सुन्दरमनि हांके। मझु सुजान पिले रनबांके॥
समासिंह त्यौं तुरग झमंक्यो। बली अलीखां उमड़त भंक्यो॥
हंक्यौ हरजूमल्ल महाई। उदैकरन रन भयौ अगोई॥
धुरमंगद धमनी मिरझानी। नाहरखां नाहर अहुरानौ॥
फतेखान त्यौं रनरस छाक्यौ। सो मार्यौ जो सनमुख ताक्यौ॥
ये [illegible] सुभट घाय से छूटे। उत तै तमकि तुरक रन जूटे॥

दोहा।

लरे उमड़ि दुहुं ओर भट, भरे सार सों सार।
बड़ै उमड़ि हरौल अबे, गजे गोल सिरदार॥ ७॥

छन्द।

कढ़ि सिरदार गोल तै गाढ़े। आनन मनौ मजीटन माड़े[1]॥
मंगदराइ रवन बल बाढ़े। सनमुख पिले थोप कर ठाढ़े॥

१—आनन मनौ मजीटन माड़े = मुख लाल हो गये। मजीठ लाल को कहते हैं जिसका रंग बड़ा पक्का होता है और लाल होता है। बुंदेलखंड में खारुआ इसी से रँगा जाता है।

उमड़ि नरायनदास हँकारयौ । देवकरन करवर झुक झारयौ ॥
अमरसाह कर कढ़ी कृपानी । पृथीराज बलग्यो बर बानी ॥
राइ अमान तेग कर लीनी । उमड़त ओप कटेरहि दीनी ॥
भारतसाह हाक दै धायौ । त्योंही आसकरन छबि छायौ ॥
रूपसाह रनरंग रिसानौ । परबतसाह पिल्यौ मरदानौ ॥
सबलसाह बरछी फिर फेरयौ । केसौराइ रोस करि हेरयौ ॥

दोहा ।

और बहुत उमड़े सुभट, कहौं कहां लगि नांउ ।
उतै समद के सूरमा, भिरे रोप रन पांउ ॥ ८ ॥

छन्द ।

उठिली भीर समद की भारी । कवचनि बटनि भीर भयकारी ॥
लखि छत्रसाल उमगि मन बाढ़े । वीरन ओप दई रन गाढ़े ॥
रनरस फूल भीम छबि लूटी । करकर, करी[२] कवच की टूटी ॥
उठे फरक भुजमूल ठिकाने । मूछन सहित पखा[३] तरराने ॥
उठ्यौ करखि हिय हरषि बुँदेला । बाढ़े रन बहसनि बगमेला ॥
दुहुं दल बिरचे बीर उमाहे । समर हरोल भयौ सब चाहे ॥
दैदै हांक परस्पर जूटे । मानहु सिंह सिंहन पै छूटे ॥
मार मार दुहुं दिस दल माही । दूजो और सबद कोउ नाही ॥

दोहा ।

इतहि बुँदेला वीर उत, सैयद सेख पठान ।
दुहूं दल बिरचे परसपर, रचे घोर घमसान ॥ ९ ॥

छन्द ।

तुपक तीर की मिटी लराई । मची सेल्ह समसेरन घाई ॥
बीर बहबहे अस्त्र निबाहे । कौतुक देखत देव सराहे ॥
जो खग्गन खेलत उत काढ़ी । बेलें जनु बिज्जुरन की बाढ़ी ॥

१—करकर = तड़ातड़ । २—करी = कड़ियाँ, छल्ले । ३—पखा = गलमुच्छे ।

टोपन टूटि उड़ै असि सच्छी। दह में मनौ उछलै मच्छी[1]॥
दुहुं दिस बीर जुद्धरस माते। कटत परस्पर होत न हाते॥
असवारहिं असवार भरुझै। पैदर झुकु पैदर सन जूझै॥
पक्खैतन पक्खैत हँकारे। कवचधरनन कवचधर मारे॥
यों घमसान परस्पर माच्यो। डमरु बजाइ रीझि हर नाच्यो॥

दोहा।

नाच्यौ समर बजाइ हर, मच्यौ घोर घमसान।
छके बीर रनरंग में, थके रोपि रथ भान॥ १०॥

छन्द।

भानु लखत कौतुक रथ रोपै। लरत बीर आनन दुति ओपै॥
देवकरन केसरिया बागे। उमग्यो भिरत जुद्धरस पागे॥
सो सिरदार पठान न आन्यौ। सबनि उमडि जीतन उर आन्यौ॥
यह छत्रसाल आइ रे भाई। यौ कह चालि उठे धन धाई॥
अंगद की अगद के पाइन। भिरयो धोहि अरि के घन घाइन॥
जौ लगि एकहि हनै अगाऊ। तौ लगि चारिक भिरै भिराऊ॥
चारिक मारि खेत पर डारे। तौ लगि दस के झुंड हँकारे॥
मार धाइ दस दसक गिराये। तौ लगि वृंद बीस कौ धाये॥

दोहा।

देव करन पर यों परयो, असि मंडल घन घेर।
बिजुली वृंद सुमेर के, मनौ लरयो चहुँ फेर॥ ११॥

छन्द।

घनै घाइ सिरहीं सिर लागे। तीनक घाइ तुरग तन आगे॥
पाइन अचल हाथ चल कीने। हाँकतु भिरत जुद्धरस भीने॥
सुभट भतीजे ऊपर आरी। परी मीर छत्रसाल निहारी॥
अरुन रंग आनन छबि छाई। अरि सिर घालि ......

......* गर्दन पर उँगली रखने से

1—मच्छी = मछली।

काटि कवचधर पुंज उठाये । मीचु बदन तैं देव बचाये ॥
अरिन अजीतराइ त्यौं घेरे । तिहिं थल छत्रसाल तब हेरे ॥
ते दरबर ही दौर उबारे । जम से जमन जौम जुत मारे ॥
परी भीर जिहिं ओर निहारे । तिहिं दिस तुरकन के दल फारे ॥

दोहा ।

या विधि श्री छत्रसाल के, पौरुष कौं पहिचानि ।
परे उमड़ रन हांक दै, तुरक तोम[1] त्यौं आनि ॥ १२ ॥

छन्द ।

बखतर पोस तीन बल बाढ़े । तिह्व ओर तरवारैं काढ़े ॥
दहिनो दिस पीछै अरु आगे । उठे घाल घाई रीस पागे ॥
उठ्यो हंकि हय झमकि छतारौ । कीनो तहां अचंभो भारौ ॥
चोट चुकाइ तिह्वन की दीनी । आपु उमड़ि मनभाई कीनी ॥
पछिलो हांकि हूल सौं मार्‍यौ । काटि दाहिनै कौं कर डार्‍यौ ॥
सोंहे सौं सोंही[2] असि झारी । तीन सुभट रन दई हँकारी ॥
बिरच्यो रन छत्रसाल बुँदेला । कियो खभरि खग्गनि खिझ खेला ॥
एक झमक अरु दमक सँहारे । लेहि सांस जब बीसक मारे ॥

दोहा ।

छत्रसाल जिंहि दिस पिलै, काढ़ि धोप[3] कर मांहि ।
तिंहि दिस सीस गिरीस पै, बनत बटोरत नांहि ॥ १६ ॥

छन्द ।

छत्रसाल जिंहि दिस धसि[4] धावै । तिंहि दिस बख़तरपोस ढहावै ॥
कटि अरिमुंड उछालत कैसे । बटनि[5] खेल खेलतु नट जैसे ॥
रुधिर भभकि रुंडन त्यौं मंडी । मानहु जरंत रुंड[6] बनखंडी[7] ॥
घूमन लगे समर मैं धेहा । मनहु उभाल भाउ भर भेहा ॥

२—सोंही = सीधी । ३—धोपे = चौड़ी
जो खग्गन खेलंत झुण्ड । ४—बटनि = बटों का, गोलियों का ।
...मकर ।

१—करकर = तड़ातड़ । २—...ढी = जंगल में ।

कौन कौन को मार गनाऊँ। असी सवार संग तिहिं ठाऊँ॥
दलमल फौज समद की हारी। रचनहार कौ मुसकिल पारी॥
चल दिवान त्यों हल्ला घाले। विरचि खेल खग्गन के खोले॥
सनमुख सुभट समद के कूटे। तौपें और रहकला लूटे॥

दोहा।

लुटत रहकला ऊँट हय, रपत कनातनि ओट॥
रवि अपनो रथ लै दुरयो, अस्ताचल की ओट॥ १४॥

छन्द॥

रवि अस्ताचल ओट सिधाये। कछुक तिमिर अंकुर छिति छाये॥
डेरन कौ करनाते दीनो। लोथैं[1] मांगि समद सब लीनो॥
दियौ दाग इन उन खनि[2] गाड़ी। रन भारत फिर रार न माड़ी[3]॥
दाग देत घटिका इक बीती। गोरैं[4] खनत राति सब रीती॥
कीय चुकाइ कूच निरधारे। समद कलिंदी पास सिधारे॥
छत्रसाल परना[5] कौ आये। जग में जीत निसान बजाये॥
रहे आपु परना में तौलौं। सुरहे[6] घाइ सबनि के जौलौं॥
सुनी समद की सबनि लराई। सुबनि दिल में दहसत आई॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते अबदुलसमद पराजयो
नाम विंशोऽध्यायः॥ २०॥

१—लोथ = शव। २—खनि = खोदकर। ३—माड़ी = की।
४—गोरैं = कबरें। ५—परना—पन्ना, यह बुंदेलखंड की छत्रसाली का एक बड़ा प्रतिष्ठित राज्य है। पन्ना नगर का प्राचीन नाम परना था।
६—सुरहे = पूरे हुए, भर आये, अच्छे हो गये।

इक्कीसवाँ अध्याय।

—:o:—

दोहा।

टौला लरि गजसिंह धरि, छांड़ो डांड चुकाइ।
लूटि भैलसा की मुलक, दीनो आग लगाइ॥ १॥

छन्द।

आग लगाइ देस में दीनी। सुनि बहलोलखान रिस कीनी॥
त्यौं दल सजि इलगारन धायौ। मरद मयानौ जौ जग आयौ॥
नौ हजार बखतरिया ताजे। देत पाइरै पाइग[1] राजे॥
धामौनी तै चढ़्यो मयानै। बांधे सीस जूझ कौ बानौ॥
जगतसिंह बानैत बुँदेला। आड़े भयौ ओड़ि बगमेला॥
संग तीन से तुपक सकेलै[2]। नौ हजार सौं लरयो अकेले॥
अरयो उमड़ि मड़ियादुहु मेंड़े। तुरक दरेरि चल्यौ तिहि पैंड़े॥
फौज कोस चारक पर आई। बन बाघन तंह मार मचाई॥

दोहा।

मड़ियादुहु तै उमड़िकै, कोस चार पै धाइ।
डेरा परत दमानिकिन, मारे तुरक बजाइ॥ २॥

छन्द।

गिरे तुरक चालिस बल बाढ़े। नौक नौक लसगर तैं काढ़े॥
त्यौं बहलोलखान रिस कीनो। तुरतहिं बंब कूच की दीनो॥
ठिल्यो उमड़ि मड़ियादुह सोहे। जगतसिंह तंह अरयौ भिरोहे॥
चढ़ि मड़ियादुह सौं दल लागै। उमड़ि पठान भिरे रिस पागै॥
[illegible] कूंस्यौ गलदारैं। नौकि नौकि लसगर तै मारे॥
जो खगन खेलत
[illegible]न जूटे। त्यौं त्यौं गोलिन सौं रन फूटे॥

१—करकर = तड़ातड़। २—[illegible] रिसाला। २—सकेलै = इकट्ठा किये हुए।

खाइ खाइ गोलिन की चोटैं। रनमंडल लोटन[१] से लोट ॥
जो दिन में दलि दुवन करेरे[२]। रात कटक पर दिये दरेरे ॥

दोहा।

सात द्यौस इहि विधि लरे, बान बांध बलवंत।
रातिहु दिनहु ठठाइ कै, करे ठोंठरे दंत ॥ ३ ॥

छन्द।

दंत ठठाइ ठोंठरे कीने। रहे पठान सकल भै भीने ॥
जगतसिंह के बजे नगारे। कढ़े दरेर बैरि मद गारे ॥
पंचम जगतसिंह को मारयो। सूबा संक दहर हिय हारयो ॥
छत्रसाल को सुभट भतीजो। मानहु नैन रुद्र को तीजो ॥
जहां हरौल हनू ह्वै पैसे। तहां रामदल ह्वैहैं कैसे ॥
कियो मुकाम सोच उर बाढ़े। रन में विकट बुँदेला गाढ़े ॥
करत विचार कछु न बनि आवै। पातसाह कैसे सुख पावै ॥
तब उर में साहस धरि धायो। सूबा उमड़ि राजगढ़ आयो ॥

दोहा।

छत्रसाल बैठ्यो जहां, उमगतु अरिदल हेरि।
उमड दलन सूबा तहां, लयो राजगढ़ घेरि ॥ ४ ॥

छन्द।

सूबा उमड़ि राज गढ़ लाग्यो। छत्रसाल जंह रनरस जाग्यो ॥
पिले तुरकदल धमड़न आवै। गढ़ की सौंह[illegible] दाब न पावै ॥
घोडि घोडि अरि के बगमेला। गढ़ते [illegible] कढ़ि लरे बुँदेला ॥
मान खपाइ खेत में डारे। [illegible] खाइ मसहार डकारे ॥
हाथी चढ्यो हरौल विदारन। धका[illegible] ताकि घनघोरन मारयो ॥
गिरयो हरौल हिंदुपत धावै। रन[illegible] फेरि महावत मारयो ॥

सूबा लखी अमारी सूनी। त्यौं बाढ़ी दिल दहसत दूनी॥
तीन धौस लौं लरयो मयानौ। चौथे दिन उठि कियौ पयानौ॥

दोहा।

खेत छांड़ि सूबा चल्यौ, दिल मे दहसत खाइ।
छत्रसाल के धाक[1] तै, मच्यौ धमौनो जाइ॥ ५॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते वहलोलखान मयानौ
मरणं नामैकविंशोऽध्यायः॥ २१॥

बाइसवाँ अध्याय ।

—:०:—

छन्द ।

छत्रसाल त्यौं करी तयारी । कुटरी मारि असोपुर जारी ॥
सील सुहावल कौ तंह कीनौ । सासन मानि सीस पर लीनौ ॥
घटरा घेरि बनाफर मारे । मरद महोर्थं डेरा पारे ॥
मौधा लूट महा मन भाये । उमड़ि कटक सिँहुड़ा पर धाये ॥
तहां मुराद खान मरदानो । उतै दलेलखान को थानौ ॥
पैठ्यो पैंठ चौथ विन दीनै । तौम[1] दलेलखान को लीनै ॥
तहां दल छत्रसाल के लागे । लरे पठान जुद्धरस पागे ॥
कढ़े कोट तैं करि खड़ हेला । भोड़ि बुँदेलन के बगमेला ॥

दोहा ।

समसेरन सेल्हन तहां, मच्यो घोर घमसान ।
घटे न मन जिनके लरत, कटे हजार पठान ॥ १ ॥

छन्द ।

खेत मुरादखान तंह आयौ । लूट्यो कटक जहां भर पायौ ॥
छुट्यौ पैरीसाल[2] दतारौ[3] । झूकत झुमत सदा मतवारौ ॥
लूटे अतुल निसान नगारे । तंबू लुटे कनातनि बारे ॥
लये लूट चौदह से घोरे । फिरत कटक में डोरे डोरे ॥
लुटे त्रेजाने तोसदखाने[4] । लूट्यो सहर केतिक को जाने ॥
जौ दलेल सूबा गजआयौ । अति बलवंत साह मन भायौ ॥
धाइ सेर बीसक की रानैं[5] । धकाधकी हाथिन सो ठानै ॥
आकं धाक घहं दिस धावै । रन-में ताहि कौन बिरमावै[6] ॥

१—तौम = अभिमान । २—पैरीसाल = हाथी का नाम था । ३—दतारौ = भीषण दाँत वाला । ४—तोसदखाने = शुद्ध तोशाखाना । ५—रानैं = पशुओं की जाँघें । ६—बिरमावै = रोके ।

दोहा ।

छत्रसाल ताकौ सहर, लसगर[1] लीनौ लूट ।
कुल दिल्ली दल बद्दल कौं, गयो धुरा सौ लूट ॥ २ ॥

छन्द ।

वाकनि ख्वबर लिखी ठिकठाई । सो हजूर हजरत के आई ॥
चंपित के छत्रसाल बुँदेला । लियो लूटि सिहुड़ा बगमेला ॥
मरद मुरादखान रस मारयो । गरब दलेलखान कौ गारयो ॥
यह सुनि साह कछु न रिस आनी । छत्रसाल की जीत सुहानी ॥
कबहु दलेल जोम जिय जागै । बोले हुते साह के आगै ॥
ताको अनखु उतै उर छायो । सो कहिबे को ऊतर पायो ॥
त्यौं दलेल मुजरा कौं आयो । पातसाह यह किसा सुनायो ॥
भुजा भतीजे को बल बाढ़ी । खेल्यो खेल चचा की डाढ़ी ॥

दोहा ।

यह सुन स्रवन दलेलखां, रह्यो अचंभो भोइ ।
यह धों साह कह्यो कहा, अर्थ अनूपम गोइ ॥

छन्द ।

मुजरा करि डेरन कौं आये । पहुँचे लिखे देस तें पाये ॥
लिखी खबर जैसी इत बीती । परी मुलक पर धार अचीती ॥
मांग चौथ छत्रसाल पठाई । सो बिन दियै फौज चढ़ि धाई ॥
लरे पठान उमड़ि रिस बाढ़े । दंतनि चाबि लोह कौं काढ़े ॥
त्यौं पिलि सेल्ह बुँदेलनि बाहे । सहस पठान खेत में ढाहे ॥
कस्यो मुरादखान मन आछे । रन सनमुख पग धरे न पाछे ॥
फर[2] में फतै बुँदेलनि पाई । लूट मताह[3] करी मन भाई ॥
खबर दलेलखान यह बाची । रिस बढ़ि कुटिल भृकुटि चढ़ि नाची ॥

१—लसगर = शुद्ध-लश्कर, सेना की छावनी, या सेना का बाजार ।
२—फर = रणभूमि ।   ३—मताह = माल ।

दोहा ।

नाची रिस भृकुटीन चढ़ि, आन्यौ जीवन बाद[1] ।
विदा चाहिं चित साह सो, तुरतहि करी फिराद ॥ ४ ॥

छन्द ।

तहाँ साह यह ऊतर दीनौ । पावै क्यों न आपनौ कीनौ ॥
होन राह जो जैाम[2] जनावै । क्यों न सजाइ हालही पावै ॥
खिसी दलेलखान उर छाई । याद अनूप अरथ की आई ॥
डेरा दिये बार अनखानै । हाथ मीड़ मन मन पछितानै ॥
कछु दिन गये सुमति उर आई । होनहार सों कहा बसाई ॥
तब दच्छिन तैं लिखे लिखाये । छत्रसाल के पास पठाये ॥
यह कछु लिखी लिखन में आई । चंपति हुते हमारे भाई ॥
तुम उत करी कथा यह जैसी । तुमै बूझियत[3] हुई न ऐसी ॥

दोहा ।

लिखे बाँचि छत्रसाल तब, कियो सलूक विचारि ।
हरे सोच सों सांच है, बिग्रह दियो बिसारि ॥ ५ ॥

छन्द ।

चैाथ बँधार देस में लीनी । सामा[4] सबै फेरि तब दीनी ॥
दियो फेरि नीसान नगारो । दियो फेरि हाथी मतवारो ॥
तोपैं दई फेरि मन भाई । जग में जाहिर करी बड़ाई ॥
धनि छत्रसाल सुजस जग गावै । ऐसी विधि कासों बनि आवै ॥
काटत पहिल काटई डारी । फेरि पसोरै पैाछि सुधारी ॥
मिहुड़ा सुर्की चैाथ मन मानी । त्यों मटैांध पर फैाज पलानी ॥
मुनिया जुरे तहाँ टिकठाये । अरु पठान मैांधा के आये ॥
हिंदू तुरक जुरे तंह ऐसे । भरत तीर तरकस में जैसे ॥

१—बाद = व्यर्थ । २—जैाम = अहंकार । ३—बूझियत = उचित । ४—सामा = सामान ।

दोहा ।

उदभट भीर मटौंध में, जुरी ठान रनठान ।
उमड़ि दलनि तासों लग्यो, छत्रसाल बलवान ॥ ६ ॥

छन्द ।

तीन तरफ ह्वै मटवध[1] घेरयौ । कठिन कोट जंह चहुं दिस फेरयौ ॥
मेघ राज बाईं दिस लागे । लीने संग सुभट अनुरागे ॥
दहिनी दिस उमड़े बलदाऊ । सनमुख छत्रसाल नृप साऊ ॥
धरयौ कोट गढ़धारिन गाढ़े । दुहुं दिस जुरे सुभट बल बाढ़े ॥
छत्रसाल के सुभट अगौवा । बागें लईं राइमन दौवा ॥
तब उन एक पलीती[2] दीनी । जगत निरास विधाता कीनी ॥
बजी बंदूखें तरभर[3] माची । समर उमंगि कालिका नाची ॥
दौवा तमकि तेग कर लोली[4] । त्यौंहि लगी अचानक गोली ॥

दोहा ।

गोली ज्यौं उत ह्वै कढ़ी, बाढ़ तुरीतन फोरि ।
घोरा लै फर में गिरयौ, भूमि रुधिर में बोरि ॥ ७ ॥

छन्द ।

घाइल ह्वै हरि बंस तहांहि । गिरयौ उमँडि रन मंडल मांही ॥
ज्यौं अरि हरपि हूह करि धाये । सिर काटन कों बलगत आये ॥
त्यौं अनखाइ हिये रिस कीनी । काढ़ि कृपान पानि में लीनी ॥
काटि दुवन सिर संभु नचाये । घाइल दुवौ सुमार बचाये ॥
त्यौं उत ढोल जुझाऊ बाजे । कठिन कोट धरि गढ़धर गाजे ॥
छत्रसाल त्यौं भाइ भिरोहे । झमकि नैन सोभा भयो सोहे ॥
अरुन रंग आनन छवि लीने । माथे घूघ[5] लोह की दीने ॥
घूघहि नाक लोह की लागी । छाती छटा छूट छवि जागी ॥

१—मटवध = मटौंध स्थान विशेष जिला बांदा में है । २—पलीती दीनी = बत्ती लगा दी, आग सुला दी । ३—तरभर = खलबली । ४—लोली = हिलाई । ५—घूघ = शिरत्राण ।

दोहा।

तरल तुरंगम की तनक, तुरत बग्ग झमकाइ।
परदल में हांक्यौ छता, खाई कोट नकाइ[1] ॥ ८ ॥

छन्द।

खाई कोट अचानक नाक्यौ। परदल पैठि जनायौ हाक्यौ ॥
काढ़ि कृपान म्यान तें लीनो। जुरे जुद्ध तिनके सिर दीनो ॥
काटन लग्यो दुयनदल ऐसे। गिरयो भीम परदल में जैसे ॥
परवतसिंह सग नेह दीने। घन घमसान कृपानन कीने ॥
इक कमनैत[2] अचूक[3] सिपाही। झलक घूय की चित दै चाही ॥
तिहि सर लोह नाक लकि मारयो। गाड़्यो गड़्यो टरयो नहि टारयो ॥
सो छवि देख संभु सुख मान्यौ। दूजो[4] एकदंत करि जान्यौ ॥
यौं छत्रसाल लरे असिघाई। लोथें गनी सात सै आई ॥

दोहा।

त्यौं अरिदल दहसत बढ़ी, मिले मघासी आइ।
डांड लियो संड तुरत ही, सोरह सहस मगाइ ॥ ९ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते मैाधासटौध-
विजयो नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

१—नकाइ = लांघा कर।   २—कमनैत = धनुर्धर योद्धा।
३—अचूक = यह योद्धा जिनका ताका हुआ अस्त्र कभी खाली नहीं आता है।
४—दूजो एकदंत करि जान्यो = अर्थात् शिवजी ने उसे बाण से छिपा हुआ देख कर दूसरा गणेश समझा।

तेइसवाँ अध्याय।

—:o:—

छन्द ।

मारि मटौंध डांड़ लै छाँड़्यो। फेरि धमोनो विग्रह माँड्यो ॥
मारि घुरौरा थुरहट घेरी। चहुँ दिस आन आपनी फेरी ॥
कोटा मारि कचीरहि[1] आये। खंडि खडौतु करे मन भाये ॥
फिरि जलालपुर दलमल मार्‌यो। दौरि दलनि बिलगांवो वार्‌यो ॥
उमड़ि बन्होली डेरा पारे। साहकुली त्यों निकट हँकारे ॥
साहकुली की सुनी अवाई। त्यों अफगन पड़वारी पाई ।
संग अस्वार चार सै लीने। पड़वारी आये भय भीने ॥
दुंदु बुँदेलनि को अति भारी। चिंता मनं बड़ी अखत्यारी ॥

दोहा ।

मीचु अगल सु भीर लै, आये अफगनखान ।
सुनि रनबीरन के हिये, बाढ़्यो अधिक गुमान ॥ १ ॥

छन्द ।

बढ़े गरब लघु फौज निहारी। होनहार गत टरै न टारी ॥
लूट लूट सूबा बल बाढ़े। भये गरब गज पै चढ़ि ठाढ़े ॥
सबनि परस्पर यों बल बांधे। विक्रम ब्यौंत न काहू कांधे ॥
अब यह फौज लूटही लीजे। घेरिन घाउ न कोऊ कीजे ॥
अफगन हिये दीनता धारी। जो दीनता दयालहि प्यारी ॥
मन क्रम वचन यहे चित चाहे। अबके प्रभु तू सरस निबाहे ॥
मरवौ अगै जुद्ध को आयो। मनो कबंध सीस बिन धायो ॥
हुती न मीच मरै वह कैसे। इनके चले अचानक जैसे ॥

१—कचीर = यह स्थान झांसी के निकट है और कचीर ककरवई नाम से प्रचित है।

दोहा ।

करधम दयक्रुधा अरिदलन है परयो अचानक चाल ।
मुरकि मरकि फिर फिर लरयौ, लै कमान छत्रसाल ॥ २ ॥

छन्द ।

चालु परैं जे लरैं अकेले । भुजदंडन बल अरिदल पेले ॥
गाढ परे हिय हिम्मत आने । तेई सूर प्रसिद्ध बखाने ॥
मुरक लरयो छत्रसाल बुंदेला । तुरकन के घोड़े बगमेला ॥
बखतर पोस उमडत आये । तिन पर नमकि बान बरसाये ॥
बखतरपोस पांच तकि मारे । घर पर घर फरके फर डारे ॥
संह सरदार सेरन्यो जुझे । वैरिन म्यौन चाल कैा सूझै ॥
छत्रसाल सौ सुभट न होतो । तौ दलघलत बखायन को तौ ॥
सबै गाथगिरि दबत उबारे । डेरा आइ मऊ मैं पारे ॥

दोहा ।

कह्यौ सबनि समुझायौ, जिन भजिये पछिताउ ।
मजे कृष्ण अवतार जे, पूरन प्रगट प्रभाउ ॥ ३ ॥

छन्द ।

कालजमन जब निकट हँकारयौ । सो मुचुकुंद डीठ सौं जारयौ ॥
द्रोनहि पीठ पंडवनि दीनी । कौरव मारि जीत सब लीनी ॥
दई पीठ बलि बावन ताडी । ते बस करि राखे दरवाजै ॥
तातें मन मानी मन ऊनौ[1] । भीमहि भूमि छुवत बल दूनौ ॥
या बिधि सबै सुभट समुझाये । त्योंही प्राननाथ[2] प्रभु आये ॥
तिन के मते फतै फुरमाई । सेना सावधान ह्वै धाई ॥
दुबहर आइ दौर दल मेल्यौ । त्यौं अफगान उमग्यौ दल पेल्यो ॥

१—ऊनौ = थोड़ा । २—प्राननाथ = पृष्ठ १४० देखो ।

दोहा।

भयो जूझ मुरक्यो तुरक, घट्यौ ना वाको जोर।
फेरि पुरा के घाट पर, आयो उमड़ि अमोर ॥४॥

छन्द।

अफगन अधिक गरव उर आन्यो। सब तें बली अपनपो मान्यौ ॥
जोरि फौज नीसान बजाये। उमहि पुरा के घाटहि आये ॥
छत्रसाल जँह अरे भिरोहे। तहां तुरक पेल्यो दल सोहे ॥
गोलिन मची मार तंह भारी। परी दिसान धूम अँधियारी ॥
त्यों तुरकन बोले रन हल्ला। जम के भये कटीले कल्ला ॥
लरयौ नरायनदास अगौवा। रन में रुप्यो राइमनि दौवा ॥
खांडेराइ घाट तंह पायो। तुरकन कटक उमंड दबायो ॥
जम से जमन जोमजुत जूटे। सुभटन विकट मोरचा छूटे ॥

दोहा।

छुटे मोरचा तोपची, आइ रुपे तिहिं ठौर।
छत्रसाल जिहिं थल अड़े, छत्रिन के सिरमौर ॥५॥

छन्द।

छत्रसाल छत्री छवि छायो। हांक्यो उमड़ि सबनि बल पायो ॥
पेले पार घाट कों बांधे। मेघराज विक्रम द्वै कांधे ॥
गलबल सुनत डरत उठि धायो। गोलिन घन घमसान मचायो ॥
माधोसिंह कटेरा वारो। सनमुख तुरक दरेरि हँकारो ॥
पिले तुरक त्यों रनरस भीने। तन कों लोभ न तनिको कीने ॥
त्यौं छत्रसाल तान निज भौहें। लै बंदूक पट्यो दल सौंहें ॥
गोलिन तीन मीर तकि मारे। गिरे डील पर डील डरारे ॥
चले पाइ तुरकन के त्योंही। छत्रसाल रन गाजी ज्योंही ॥

दोहा ।

मंथ्यो मथ्य रन पैठि कै, मच्यो चहूं दिस चाल ।
अफगन सैन समुद्र भौ, मंदर भौ छत्रसाल ॥६॥

छन्द ।

सैदलतीफ तहां चलि आयौ । मरत सैद अफगनहि बचायौ ॥
दई सीध अरु डांड चुकायौ । जीवदान अफगन सब पायौ ॥
धाकलि लिखी खबर तब ऐसी । सुनी साह बीती इन जैसी ॥
अफगन की जागीरि आई । साहकुली की पाग बँधाई ॥
आठ हजार सुभट सँग लीनै । साहकुली उमड्यो रिस कीनै ॥
साहकुली के धौंसा बाजे । मिले नंदमहराजा ताजे ॥
भये हरौलो फौज बल पायौ । डंका देत मऊ पर आयौ ॥
दौरि धुरैया गिरि सौं लागी । छत्रसाल जंह रनरस जागी ॥

दोहा ।

चोहि अस्त्र धारन महा, पिले नंदमहराज ।
लै निसान परबत चढ़े, साहकुली के काज ॥ ७ ॥

छन्द ।

इत इन दीनी चक पलीती । अरि पर प्रलै राति सौं बीती ॥
गिरि गरजि गाजै सो गोली । डगडग चमू अरिन की डोली ॥
धाउ नंदमहराजहि लाग्यौ । दहसत मानि तुरकदल भाग्यौ ॥
तजे नंदमहराज तहांही । घाइल ह्वै करि गिरे जहांही ॥
त्यौं छत्रसाल दया दिल धाये । धरमद्वार दै प्रान बचाये ॥
साहकुली दहसत तहं मानो । तब अपने उर में यह आनो ॥
भजौ मजौ जैंवा सब[1] मारे । तिहि डर डेरन डेरा पारे ॥
डेरा परत धुली पर आई[1] । त्यौं छत्रसाल करि मनभाई ॥

१—धुली पर आई = अंधेरा हो चला ।

दोहा ।

साहकुली के कटक पर, दियो दरेरो[1] राति ।
अकबकाइ उर पेंड़ तजि, मानो डांड़ अराति ॥ ८ ॥

छन्द ।

आठ हजार डांड़ जब मान्यो । उतरयौ साहकुले मुख पान्यो ॥
चौथ सिवाइ दई मुहमांगी । सूबन के उर दहसत जागी ॥
कोंच लौंचि कीने मन भाये । मऊ आइ निसान बजाये ॥
त्योंही प्राननाथ[2] प्रभु आये । दिल के कुल संदेह मिटाये ॥

१ --दरेरो दियो = छापा मारा ।

२—प्राननाथजी = यह एक महात्मा थे जो काठियावाड़ प्रदेश के जामनगर नामक स्थान के रहने हारे थे। इनके उपदेश श्रीमान गुरु नानकजी के उपदेशों से बहुत कुछ मिलते हुए हैं । जिस प्रकार श्रीगुरु नानकदेवजी के अनुयायियों में श्रीगुरु-ग्रंथ साहब का आदर है वैसे ही श्रीप्राणनाथ जी के अनुयायियों में श्रीप्राणनाथ जी के उपदेशसंग्रह का जो "कुलज़म" नाम से प्रसिद्ध है आदर है। इन महाप्रभु के सम्प्रदाय के लोग "धामी' कहलाते हैं । प्राणनाथ जी का उपनाम "जी साहब" भी है। "कुलज़म" शब्द अर्बी भाषा का है जिसका अर्थ अगाध नद के हैं । "कुलज़म" ग्रंथ की भाषा में अर्बी, सिंधी, काठियावाड़ी तथा अपभ्रष्टरूप में संस्कृत के शब्द पाये जाते हैं परंतु विशेष कर ग्रंथ की भाषा अर्बी और सिंधी शब्दों से भरी है और प्राणनाथ जी के उद्देश्य श्रीगुरु नानकदेवजी के उद्देश्यों से बहुत कुछ मिलते हुए हैं । ऐसा जान पड़ता है कि जब दुराचारी मुग़ल सम्राटों और विशेष कर क्रूर औरंगज़ेब के भीषण अत्याचारों से हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म पर घोर आघात हो रहे थे उस समय महानुभाव भगवान श्रीकृष्णचंद्रजी के पावन सिद्धान्त "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं-सृजाम्यहं । रक्षणाय च साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे" के अनुसार हिन्दू जाति तथा धर्म की रक्षार्थ भारतवर्ष के भिन्न भिन्न भागों में महान आत्मायें अवतरित हो रही थीं । उत्तरीय भारत-भाग में धर्मकेशरी महा-

उन ऐसौ कछु ज्ञान बखान्यौ। अपनौ करि जाते जग जान्यौ॥
परम धाम की लीला गाई। प्रेम लच्छना भक्ति दृढ़ाई॥

वीर गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज अवतार ले धर्म तथा जाति की रक्षा के लिये उद्यत थे। दक्षिण में वीरकेशरी छत्रपति महाराज शिवाजी प्रगट हुए थे। इसी तरह भारत के मध्यमीय भाग में परम नीतिज्ञ धर्मधुरंधर महाराज प्राणनाथ जी ने जन्म लिया था। वे महाराज अपने पावन उपदेश देते हुए महेवा में पहुँचे और महाराज छत्रसाल से मिले। इन्होंने अपने उत्तेजित उपदेशों से छत्रसाल जी को औरंगज़ेब के अत्याचारों से हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये उत्तेजित किया। जनश्रुति है कि छत्रसाल जी ने महात्मा से निवेदन किया कि मेरे पास इतना कोष नहीं है कि मैं दिल्लीश्वर की सेना के विरुद्ध रण रोपने को सेना एकत्रित करूँ। उस समय महात्मा ने छत्रसाल जी को आशीर्वाद दिया और वे उन्हें अपने साथ पन्ने की ओर लिवा ले गये और कहा कि तुम अपने घोड़े पर चढ़ कर आज दिन भर घूम आओ, जितनी दूर तुम घूम आओगे उतनी दूर में "हीरा" पैदा हो जायगा। महाराज ने ऐसा ही किया, और कहा जाता है कि उसी समय से महात्मा के आशीर्वाद से यहाँ हीरा पैदा हो गया। वास्तव में ऐसा जान पड़ता है कि विज्ञ महात्मा ने उस भूमि को देख कर अनुमान कर लिया था कि यह भूमि हीरे की खानों से भरी है और यह बात महाराज छत्रसाल को बता दी। उसी समय से यहाँ से हीरा निकाला जाने लगा और उसी हीरे की पुष्कल आय से महाराज छत्रसाल ने एक बृहत् कोष एकत्रित किया और उसी कोष के बल एक बड़ी सेना औरंगज़ेब के विरुद्ध प्रस्तुत की। जिस स्थान पर महात्मा प्राणनाथ जी और महाराज छत्रसालजी वर्तमान पन्ना के निकट पहले पहल आकर ठहरे थे वह "पुराना पन्ना" के नाम से प्रसिद्ध है और वहां एक दालान उस घटना के स्मृत्य की अब तक बनी है। महात्मा प्राणनाथ के विषय में इसी स्थल के संबंध में एक और चमत्कृत वार्ता प्रसिद्ध है। वह यह है कि इसी स्थान के निकट एक स्रोत था। उसका जल विषमय था। जो जीव जन्तु उस जलस्रोत का पी लेते थे अथवा जो खोते थे वे तुरंत मर जाते थे। महात्मा प्राणनाथजी ने अपना दाहिना पैर उस जल-स्रोत में डुबो दिया और कहा कि यह विष की नदी अब अमृत की नदी हो गई।

सब सौं कहो जगौ रे भाई। प्रगटि जागिनी लीला आई॥
तुम हौ परमधाम के वासी। नित्य अखंड अनंद विलासी॥

सब लोग इसे मंझा कर पार उतर जाओ। सबने महात्मा के वचन पर विश्वास करके वैसा ही किया। यह घटना-स्थल अब तक प्रसिद्ध है। नदी पार जाकर पन्ना में धर्मसागर नामक तड़ाग के तट पर "मंदारतुंग" नामक पर्वत की तलहटी के अंचल में एक पत्थरशिला पर महाराज छत्रशाल के मस्तक पर महात्मा प्राणनाथ जी ने तिलक किया और अपना खड्ग निकाल कर उनको बँधाया। इस स्थान पर एक छोटी सी मढ़ी बनी है जो खजरामठ के नाम से प्रसिद्ध है। पन्ना नरेश दशहरे के दिन आकर यहीं खड्गपूजन करते हैं और सब से पहले यहीं पान का बीड़ा दशहरे के दिन महात्मा प्राणनाथ जी के नाम का रक्खा जाता है और यहीं से दशहरे के दिन की सिंधुरयात्रा प्रारम्भ होती है। यही प्राणनाथ जो महाराज छत्रशालजी के धर्म गुरु थ और जिस प्रकार प्रातस्मरणीय "समर्थ रामदासजी", छत्रपति शिवाजी के धर्मोपदेशक और उत्तेजक थे उसी प्रकार श्रीमहात्मा प्राणनाथ जी बुंदेल-कुल-तिलक महाराज छत्रशाल जी के लिये थे। इन महात्मा की समाधि एक बड़े दिव्य और भव्य मंदिर में पन्ने में है। वहीं इनकी टोपी, पंजा, और ग्रंथ अद्यापि रक्षित हैं। यह मंदिर धाम के नाम से प्रसिद्ध है और इसी धाम के संबंध से महात्माजी के अनुयायी धामी नाम से प्रसिद्ध हैं। ये लोग हीरे का व्यापार करते हैं और हीरे को सान पर चढ़ाते तथा उसके कमल आदि बनाते हैं। हम यह निस्संकोच कह सकते हैं कि हमने ऐसा दिव्य भव्य और स्वच्छ मंदिर अद्यापि और कहीं नहीं देखा है। इस मंदिर में धर्मशाला, उपदेशमंडप, महात्मा की सेज आदि नाना स्थान बड़े विस्तार में बने हैं और यहाँ महात्माजी तथा महाराज छत्रशाल के चित्र लगे हैं। यहाँ प्रति दिन धर्म उपदेश, तथा कुलज़म का पाठ होता है। इन महात्मा के अनुयायी बुंदेलखंड, काठिवाड़, नैपाल आदि स्थानों में बहुतायत से हैं और शरद पूर्णिमा के अवसर पर पन्ना में धाम के दर्शनार्थ आते हैं और बड़ा उत्सव मनाते हैं। सुना जाता है कि इस मंदिर में एक बहुत बड़ा कोष हीरों का है। समृद्धिशील भक्त जन आ कर इस मंदिर में उत्सव के समय हीरे भेंट करते हैं।

दोहा।

देखन कौं मांग्यौ हुतौ, तुम अच्छर कौ खेल।
सो देखत ही जुग गये, उहां न पल कौ झेल[1] ॥ ९ ॥

छन्द।

अच्छर ब्रह्म अनादि बखान्यौ। बाल खेल खेलन मन मान्यो ॥
नैनकोर जिहि ओर निहारै। तंह ब्रह्मांड रचै संहारै ॥
पूरनब्रह्म किसोर किसोरी। सखिन सहित बिलसै वह जोरी।
पूरन प्रेम सबै सुख साजै। आनँद मगन एक रस राजै ॥
तँह मनिमय महलनि छवि छाई। हीरमई सोहत अँगनाई ॥
प्रफुलित फलित बेलि द्रुम कुंजै। मधू मनोहर मधुकर गुंजै ॥
जल थल द्रुम पंछी अविनासी। स्वय सिद्ध सब स्वयं प्रकासी ॥
जाही समै जौन रितु चाहै। तबही ताके गुन अवगाहै ॥

दोहा।

सदा फरे फूले तहां, तरु बेछिन फल देत।
जुगल किसोर सखीन सँग, बिहरत कुंज निकेत ॥ १० ॥

छन्द।

बिहरत तहां किसोर किसोरी। तहां होन चित ही की चोरी ॥
कुटिल चलत तंह दोइ निहारै। भ्रू बिलास कै दृग अनियारै ॥
तहं कठोर उन्नत कुच होई। और कठोर न उन्नत कोई ॥
नैनन मांह कज्जल मलेनाई। नूपुर मुखिन, मुखरता पाई ॥
सकल कलनि धुनि कोकिल बोलै। रतिरस तरलि अनखि जहं डोलै ॥
चंचलता चलदल ही मैं है। लहर सचलन जल ही में है ॥
द्रोह बिद्रोह दुखन की नाही। कंठग्रहन केलि ही माही ॥
आनँद मगन परस्पर पेलैं। बिलसत लसत प्रीय सुख मेलैं ॥

1—पल कौ भेल = विलम्ब।

दोहा ।

भूपन अंगन देत छवि, अंगन भूषन देत ।
बसन सुगंध समानता, तन सुगंध की लेत ॥ ११ ॥

छन्द ।

तिहिं थल विहरत जुगल विहारी । सखिन समेत सदा सुखकारी ॥
सरस विलास करैं मन मानै । पलकौ विरह न कोऊ जानै ॥
तहां राज मन में यह आनो । ऐसैं जोगहि के रस सानो ॥
ए वियेग रस जानत नाही । त्यों होती सब के चितचाही ॥
इनकौं सब विलास हम दीनै । बिछुर मिलन के सुखहि न चीनै ॥
बिछुरे मिले प्रेमरस सानै । तिनकौ आनँद कौन बखानै ॥
इच्छा यहै राज उर लीनो । त्यों इच्छा अच्छर कौ दीनो ॥
जो किसोर लीला रस सानी । सो अच्छर देखन मन आनी ॥

दोहा ।

चाह बढ़ी सब के हिये, लागे सखिन उमाह ।
अच्छर कौ अदभुत हमैं, लेख दिखावो नाह ॥ १२ ॥

छन्द ।

खेल देखवे की रुचि जानी । तब सखीन सौं बोले बानी ॥
देखत खेल मगन अति ह्वै हौ । हमकौ बिसरि सबै तुम जैहौ ॥
दुख अरु बिरह खेल में आही । तंह देखत ह्यां की सुधि नाही ॥
तब सखियन पर बचन उचारे । दुख बिछोह कैसे है प्यारे ॥
हमहि छपाइ आजु लौं राखे । ते हम देखन कौ अभिलाषे ॥
भूलि हौहि तुमतै जो न्यारी । तो सुधि लीजो नाथ हमारी ॥
ज्योंही सखिन चाह यह कीनो । निमिष नींद अच्छर त्यौं लीनी ॥
तातै सुपन सिष्टि उपजाई । तामें सुरति सखिन की आई ॥

दोहा ।

इहां और लीला भई, सुपन सिष्टि कौं पाइ ।
रचना रचिवे कौं चल्यो, अच्छर कौ मन भाइ ॥ १३ ॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते प्राननाथशिक्षा नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

चौबीसवाँ अध्याय ।

छन्द ।

रचना रचिबे कौ मनु धायो । महत्तत्व सो इहां कहायो ॥
काल शक्ति के छोभित कीने । अहंकार उपज्यौ गुन लीने ॥
अहंकार तहं त्रिविध जनायौ । सात्विक राजस तामस गायौ ॥
तामस अहंकार उपजाये । पाचौ भूत पाच गुन ल्याये ॥
शब्द स्पर्श रस रूप बनाये । गंध सहित गुन पांच गनाये ॥
कान सबद सुनिबे कौ पाये । त्वचा परस के भेद बताये ॥
रसना स्वाद रसन के लीने । रूप देखिबे को दृग दीने ॥
गंध ग्रहन नासिका लीने । पाच पांच के भये अधीने ॥

दोहा ।

पांच ज्ञानइन्द्रिय भये, पाच स्वाद के हेत ।
पाच भूत कौ जगत रचि, चेतन कियो निकेत ॥ १ ॥

छन्द ।

चेतन तहां आपुही आये । सोरह कला रूप छवि छाये ॥
जल अगाध चारिहु दिस जोयो । सेज बिछाइ शेष कौ सोयो ॥
यह नारायन रूप कहायो । ताकी नाभि कमल उपजायो ॥
उपजे तहां चार मुखवारे । ब्रह्मा सृष्टि बनावनहारे ॥
ब्रह्मा अपने मन ते कीने । सुहौ पुत्र तप के रस भीने ॥
प्रथम मरीचि अत्रि पुनि आना । और अगिरा उर मैं माना ॥
फिरि पुलस्त्य अरु पुलह बखाने । अरु क्रतु ये मनु पहिचाने ॥
इनतें उपजी सृष्टि तहां लौं । थावर[1] जंगम जीव जहां लौं ॥

१—थावर = स्थावर

दोहा ।

लोक देस रचना रची, कही कौन सों जाइ ।
तिन में व्रजमंडल रच्यौ, रुचि सों अति सुख पाइ ॥ २ ॥

छन्द ।

तहं बसुदेव नंद तपु कीनो । तिन्हे आइ दरसन प्रभु दीनो ॥
मांग्यो वर यह दुहुन अकेलो । सुत ह्वै नाथ हमारे खेलो ॥
दयो दुहुन को वर मन भायो । लै अवतार आप इत आयो ॥
तो लगि आठ बीस जुग बीते । हां पल के सह सांस न रीते ॥
बढ़े कालजमनादिक भारे । जरासंध से भूप अन्यारे ॥
तिनके दलनि भूमि भय भारी । पीड़ित ह्वै विधि पास पुकारी ॥
धेनु रूप धरि रोवत आई । ब्रह्मा पीर भूमि की पाई ॥
महादेव अरु देवनि लैके । छीरसमुद पर बोले जैके ॥

दोहा ।

तहँ अकासबानी सुनी, लख्यो न कछु आकार ।
हों आवत व्रज नंद के, हरन भूमि को भार ॥ ३ ॥

छन्द ।

अपने अंस देव लै जाही । विलसै गोप जादवनि माही ॥
अरु अपने अंसन सुरनारी । हौहि जादवन की अति प्यारी ॥
यह सुनि ब्रह्मादिक सुख छाये । अपने अपने लोकनि आये ॥
इत अवतार देवकी लीनो । भोजवंस कों भूपित कीनो ॥
तिन्हैं व्याहवे कों मन भाये । सजि बरात बसुदेव सिधाये ॥
भयो व्याह दुहुं दिसि रस लीने । गज रथ तुरग दाइजे दीने ॥
विदा भये बसुदेव प्रवीने । पठवन चले कंस रस भीने ॥
त्योंहि उठी गगन में बानी । सुनि रे मूढ़ महा अज्ञानी ॥

दोहा ।

जाहि पठावन जात तू, कीनो हिये हुलास ।
ताको सुत जो आठयो, तातैं तेरो नास ॥ ४ ॥

छन्द ।

यह सुनि कंस मलिन मन कीनो । रस तै विरस भयो मन भीनो ॥
रिस तैं भई अरुन दृग कोरै । विष जनु पियो अमृत के भोरै ॥
कढ़ी कृपान रोसरस छायो । भगिनी के मारन कों धायो ॥
ताको देखि अनो सब छोभी । गनन न दोप राज रस लोभी ॥
तहं बसुदेव विनय रस बोले । महामधुर मृदु बानी बोले ॥
भोजबंस भूपन तुम ऐसे । तुम लाइक नहिं कर्म अनैसे ॥
जो याके सुत तै भय आनहु । तौ यह बात हमारी मानहु ॥
अब याके जितने सुत ह्वैहैं । ते सिगरे तुम ही को दैहैं ॥

दोहा ।

फिरी क्रूरमत कंस की, अचिरज करौ न कोइ ।
कहा देहधारी करै, करता करै सो होई ॥ ५ ॥

छन्द ।

होत सबै करता की कीनो । नृप की विषम बुद्धि हर लीनो ॥
तबहिं कंस यह बुद्धि विचारी । ए बसुदेव भये हितकारी ॥
धावे पुत्र मीच ढिग ल्यावै । पै प्रतीत यह कैसे आवै ॥
तातैं इनै बंदि मैं दीजै । अपनै राजकाज सब कीजै ॥
तब बसुदेव बोलि ढिग लीने । अकरि जंजीरन मैं धरि दीने ॥
त्यौंही तहां देवकी राखी । गन्यो न दोप राज अभिलाषी ॥
बालक छहक देवकी जाये । खग बोलि ते सबै खपाये ॥
त्यौंही गर्भ सातये आये । शेष बंस बलभद्र कहाये ॥

दोहा ।

गिरयो गर्भ यह सुनत ही, फिरयो चकेत [illegible] कंस ।
धरयो रोहिनी के उदर, जोग[1] नींद सो अंस ॥ ६ ॥

छन्द ।

उदर रोहिनी के जो राख्यो । संकर्षन बल होतहि भाख्यो ॥
गरभ आठयें आयो नामी । सो बैकुंठ धाम को स्वामी ॥

१—जोग नींद = योगनिद्रा, योगमाया ।

सोभा धरी देवकी ओरे। कछु न उपाइ कंस को दौरे॥
मेरो प्रान लैन यह आयो। जो अकासबानी मुख गायो॥
त्यौं अपनै भट निकट बुलाये। तिन्हैं कंस ए वचन सुनाये॥
द्वारनि देहु किवारनि तारे। जे गजहू सों टरै न टारे॥
खबर देवकी की सब लीजे। बालक होइ हमें सो दीजे॥
चौकिन सावधान ह्वै जागौ। लोभ मोह के रस मति पागौ॥

दोहा।

यों कहि कै अपने महल, कंस गयो सुख पाइ।
सावधान ह्वै कै सुभट, चौकिन बैठे जाइ॥ ७॥

छन्द।

चौकिन बैठे सुभट घनेरे। लै वसुदेव कोठरिन घेरे॥
आये विष्णु गर्भ में जाने। ब्रह्मादिक सब गाइ सिहाने॥
भादों वदि आठें जब आई। बुध रोहिनी अधरात सुहाई॥
वाही समै जनम हरि लीनो। मात पिता को दरसन दीनो॥
संख चक्र गद पदम विराजे। भुजनि चार आयुध छवि छाजे॥
मनिमय मुकुट सीस पर सोहे। भृकुटी बंक चित्त कों मोहे॥
जग तें उदित अंग भुज राजे। ललित पीटपट जुगल विराजे॥
दीरघ दृग झलमलत अन्यारे। मुकतासुत सोहत अति भारे॥

दोहा।

सुभग स्याम तन मुकुट अति, पीतवसन छवि देत।
जनु घन उमयो है मनो, उड़गन तड़ित समेत॥ ८॥

छन्द।

वहसि रूप वसुदेव निहारे। कोटि जामिनी तिमिर उसारे॥
खुले किवार दौर दिन दीनो। द्वार पाल निद्रा वस कीनो॥
तब वसुदेव कह्यौ प्रभु प्यारे। खुले भाग अति आजु हमारे॥
अदभुत रूप दृगनि हम देख्यौ। जीवन जनम सुफल करि लेख्यौ॥

ये भय हमैं कंस के भारे। उहि मेरे छह बालक मारे॥
जो वह खबर तुम्हारी पैहै। तौ निरदई पापमति लैहै॥
अब तुमकौ केहि भाँति बचाऊँ। कौन ठौर यह रूप छिपाऊँ॥
बालरूप तुमकौं करि पाऊँ। तौ दुराइ गोकुल धरि आऊँ॥

दोहा॥

सुनत बोल बसुदेव के, बोले बिहँसि कृपाल।
पूरब भए तें हम तुम्हैं, रूप दिखायौ हाल॥ ९॥

छन्द।

यौं कहि बालिक रूप दिखायौ। अद्भुत रूप बैकुंठ पठायौ॥
बाल रूप अच्छर जब कीनौ। तब बसुदेव गोद धरि लीनौ॥
सोवत चौकीदार निहारे। गोकुल कौं बसुदेव पधारे॥
जमुना बढ़ी पार नहिं सूझै। मग बसुदेव कौन कौं बूझै॥
सुत की प्रीति कंस भय भारी। जल में धस्यौ मीच अघहारी॥
करि करुना जमुना मग दीनौ। वाहन उतरि पार वह लीनौ॥
ताही समै रैन रस भीनौ। जाग नींद जसुदा उर लीनौ॥
चलि बसुदेव नंद घर आयौ। ठौर ठौर सौं उत्सव पायौ॥

दोहा।

पुत्र धर्‌यौ जसुदा निकट, कन्या लई उठाइ।
फिर त्यौंही जमुना उतरि, मथुरा पहुंचे आइ॥ १०।

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते श्रीकृष्णजन्मवर्णनं नाम
चतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

———:o:———

पचीसवाँ अध्याय

दोहा ।

सकल पुरान कुरान के, मत सो ज्ञान डिढ़ाइ[1] ।
जाते जग छत्रसाल कैा, लग्यैा स्वप्न सम भाइ ॥ १ ॥

छन्द ।

छत्रसाल कों ज्ञान सुनायो । परमतत्व परगट दरसायो ॥
त्यों प्रभु प्राननाथ फरमायो । हुकुम धनी[2] कैा आगम गायो ॥
करो राज छत्रसाल मही कैा । रन में होइ सदा जयटीकैा ॥
तुव कुल नृपति होहि अनियारे । लैहैं समर अरिन सों भारे ॥
वंस अखंड चले छिति मांही । जाकैा मेटि सकै अरि नांही ॥
जो तुव वंसहि मेटन चाहै । ताकैा धनी अनीजुत ढाहै ॥
यह महि तुम्हैं दई तूरानी । जहाँ प्रगटि हीरन की खानी ॥
तुम दरपुस्त लहो सिरमोरे । तुव कुल विना फलै नहि औरे ॥

दोहा ।

इहि विधि वह वरदान दै, कुल अखंड बल राखि ।
राजतिलक छत्रसाल सिर, दैयो साखि दरसाखि ॥ २ ॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते प्राननाथवरदानो नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

१—डिढ़ाइ=दृढ़ होता है ।

२—धनी=स्वामी, ईश्वर ।

छब्बीसवां अध्याय ।

दोहा ।

बैठे कंचन तखत पै सही बहादुरसाह ।
पीछे औरंगसाह के, कीन्हो हुकुम उछाह ॥ १ ॥

छन्द ।

तहां खानखाना अधिकारी । राजकाज की करै सम्हारी ॥
पातसाह ढिग तिन हित पाई । चंपतिराय की करी बड़ाई ॥
चंपतिराइ बड़ अनियारे । हजरत के बहु काम सम्हारे ॥
दारासाह जुद्ध जब कीन्हो । चंपति बीर समर जस लीन्हो ॥
रन हरौल ह्वै फतै लियाई । औरंगजेब दिली तब पाई ॥
तिनके तनय छत्रपनधारी । छत्रसाल सोहत भट भारी ॥
खुली कृपान अरिन मुख ताकी । जगी जोति जुद्धन मैं जाकी ॥
सुभट सिरोमनि समुझि अगौंवा । करियै उनकौ वेग बुलौवा ॥

दोहा ।

ऐसा बीर बुलाइये, करिहैं काम अनेक ।
हाल लोहगढ़ की विजै, लै दैहैं करि टेक ॥ २ ॥

छन्द ।

फतै लोहगढ़ की लै दैहैं । औरहु काम अनेक बनैहैं ॥
सुनी खानखाना की बानी । साह हियैं अति सुखद सुहानी ॥
बिहँसि बहादुरसाह बुलायौ । छत्रसाल कौं गिरा पठायौ ॥
लिख्यो खानखाना त्यों पाती । जामैं सब बिधि खबर सुहाती ॥

हजरत याद आप की कीन्हों । हित की मति सा खिन तें चीन्हों ॥
चहत लोहगढ़ किये महूमें[1] । तातें चित्त आप में झूमें ॥
या हित साह आपु बुलवाये । बड़े प्रीत सों लिखे पठाये ॥
तातें आप आइबी आछै । सकल सिद्धि ह्वैहै तिंह पाछै ॥

दोहा ।

वांच लिखे छत्रसाल नृप , लिखी साह कौ ज्वाब ।
फतै लोहगढ़ की करें , हाजिर होत सिताब ॥ ३ ॥

छन्द ।

पाती साह छता की वांची । हिये मान लीनी सब सांची ॥
फेर गये खत अब इत पेवी । करिकै भेंट लोहगढ़ जैबी ॥
छत्रसाल सुन मन सुख पाये । पातसाह के पास सिधाये ॥
सादर साह मिले हरपाई । भई प्रीतिजुत भेंट भलाई ॥
चले वेग ह्वै विदा उहातें । करी महूम लोहगढ़ जातें ॥
छेंको[2] किलो लोहगढ़ बांको । भयो समर नृप लरयो तहांको ॥
गोली गोला छुटत अरावे । दवकत कहू सुभट रन दावे ॥
हल्ला पसर करी अस रारी । माची मार परस्पर भारी ॥
दरवाजिन के फार किवारे । भीतर पैठ गये अनियारे ॥
तीन हजार तहां लर सूझे । सुभट किले के घाइल जूझे ॥

दोहा ।

पंदरह सै बुंदेल कुल , घाइल जूझे वीर ।
मार लोहगढ़ की फतै , लई छता रनधीर ॥ ४ ॥

छन्द ।

फतै वजाइ दिली नृप आये । पातसाह तें अति सुख पाये ॥
कही लेव मनसव मनभाये । छत्रसाल तव वचन सुनाये ॥

१—महूमें = मुहिम्म, लड़ाई, युद्ध । २—छेकों = घेर लिया ।

हम बगसीस यही करि पावैं । काम लगै जब आप बुलावैं ॥
हुकुम सुनत नम हाजिर होवै । हजरत के इन काम सजोवे[1] ॥
जा हमकों बगसी दरपेसह । तामें कौन होइ चित ऐसह ॥
द्वै करोर की जिमी ठिकाने । पुनि दीन्हो दोरन की खाने ॥
सो प्रभु की बगसीस बनोऊ । कर्म निमित्त निज हेत बनोऊ ॥
मनसबदार होइ को काकौ । नाम दिसु भर सुन जग वाकौ ॥

दोहा।

इम प्रभु के विश्वासमय , बचन भाषि छत्रसाल ।
विदा भये उर साह कौं , मुदित राखि महिपाल ॥ ५ ॥

छन्द ।

साह विदा कीनौ सुख पायौ । एक कुवँर रहिबौ ठहरायौ ॥
छत्रसाल गृह आइ सिधाये । मऊ[2] पहुंच नौसान बजाये ॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते दिल्ली तें मऊ
आगमनो नाम षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

१—सजोवै = पूर्ण करेंगे । २—मऊ = यह स्थान छत्रपुर राज्यान्तर्गत
महेवा के निकट है और मऊ महेवा के नाम से प्रसिद्ध है । यही पुण्यश्लोक प्रात
[illegible] केसरी [illegible] का क्रीड़ास्थल रहा है ।